वैश्विक संवाद

12.2

अनेक भाषाओं में एक वर्ष में 3 अंक

समाजशास्त्र पर बातचीत श्रुति मजूमदार के साथ — सेबेस्टियन गैलेगुइलोस

यूक्रेन में युद्ध पर नोट्स — साड़ी हनाफी

पूंजीवाद पर सिद्धांत — विलियम आई. रॉबिन्सन, पेट्रीसिया वेंट्रिसी, एस्टेबन टोरेस, फैब्रिसिओ मैसील

उच्च शिक्षा के लिए चुनौतियाँ — जोहाना ग्रबनेर, स्टेफनी रॉस, लैरी सैवेज, का हो मोक, एलिजाबेथ बाल्बाचेव्स्की, युसेफ वाघिड

सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य — माइकल बुरावॉय

तुर्की से समाजशास्त्र — एन. बेरिल ऑजेर टेकिन, ऐश टेलसेरेन, डिक्ले कोयलन, ओजकां ओजतुरक, इल्कनूर हाजिसोफ्तगलू

खुला अनुभाग

> हाइपर–वैश्वीकरण से सतत विकास तक
> यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल वोल्कलिंगरहट्टे
> दक्षिणपंथी ''लोकलुभावनवाद'' पर कार्ल पोलानयी
> हत्या के अपराधियों की कहानियों से सीखना
> ब्राजील में डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से वितरण कार्य

पत्रिका

अंक 12 / क्रमांक 2 / अगस्त 2022
https://globaldialogue.isa-sociology.org/

GD

ISA International Sociological Association

> सम्पादकीय

वैश्विक संवाद के इस अंक में 'समाजशास्त्र पर बातचीत' खंड में भारत की समाजशास्त्री श्रुति मजूमदार के साथ एक साक्षात्कार है, जो महिलाओं के खिलाफ हिंसा को समाप्त करने के लिए संयुक्त राष्ट्र ट्रस्ट फंड के लिए लैंगिक हिंसा विशेषज्ञ के रूप में काम करती हैं। संयुक्त राष्ट्र में अपने वर्तमान कार्य से, वे सेबस्टियन गैलेगुइलोस को बताती है कि उनका समाजशास्त्रीय लेंस अंतरराष्ट्रीय संगठनों के भीतर काम करने के लिए कैसे उपयोगी साबित हुआ है, और वे विकास के अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में अनुसंधान और व्यवहार के संयोजन में रुचि रखने वाले समाजशास्त्रियों को सलाह भी देती हैं।

इस बीच, यूक्रेन के खिलाफ युद्ध शुरू होने के आधे साल से अधिक समय के बाद, हम अंतरराष्ट्रीय संबंधों और राजनीति में गहरे बदलाव देख रहे हैं। इस अंक में वैश्विक संवाद इस मुद्दे पर पिछले दशकों पर पार्श्व दृष्टि डालने, दुनिया के कई हिस्सों में युद्ध और उनके विनाशकारी प्रभावों को देखने के लिए, और भू–राजनीतिक परिणामों के संदर्भ में रूस के आक्रामक युद्ध द्वारा चिह्नित विराम का विश्लेषण करने के लिए आईएसए अध्यक्ष साड़ी हनाफी को आमंत्रित करके एक विमर्श की शुरुआत करता है।

पहली संगोष्ठी पूंजीवाद के सिद्धांतों पर विस्तार से बताती है, जिसमें समकालीन पूंजीवादी समाजों को समझने के लिए व्यापक दृष्टिकोण और तर्क दिखाए गए हैं। जहाँ पेट्रीसिया वेंट्रिसी तकनीकी परिवर्तन, अनिश्चितता और संघीकरण के मध्य संबंधों का ठोस विश्लेशण प्रस्तुत करती हैं, एस्टेबन टोरेस वैश्विक वर्ग संरचनाओं की बढ़ती जटिलता को समझाने के लिए पूंजीवाद के सिद्धांत में ''मुंडिएलिजशन'' की अवधारणा को लाते हैं। ब्राजीलियाई समाज के संदर्भ में, फैब्रिसियो मेसिल दिखाते हैं कि सत्तावादी और दक्षिणपंथी आंदोलनों के उदय को बेहतर ढंग से समझाने के लिए अनिश्चितता के अलावा, अपमान और गिरावट को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए। विलियम आई. रॉबिन्सन केंद्र और परिधि के मध्य भौगोलिक स्तरीकरण के विकास के साथ–साथ दुनिया भर राज्यों के भीतर बढ़ती असमानताओं की दिशा में इसके धीमे बदलाव को दिखाने के लिए एक वैश्विक दृष्टिकोण को काम में लेते हैं।

1990 के दशक के प्रारम्भ से, सार्वजनिक क्षेत्र के नवउदारवादी पुनर्गठन से उच्च शिक्षण संस्थान प्रभावित हुए हैं और उनका तेजी से विपणन किया जा रहा है। जोहाना ग्रुबनेर द्वारा आयोजित हमारी दूसरी संगोष्ठी के आलेख, दुनिया के विभिन्न हिस्सों में चल रहे इन परिवर्तनों की जांच करते हैं। स्टेफनी रॉस और लैरी सैवेज कार्य व्यवस्थाओं के पुनर्गठन और वस्तुकरण के संदर्भ में कनाडा के उच्च शिक्षा क्षेत्र के चल रहे नव–उदारीकरण के प्रभावों का विश्लेषण करते हैं। का हो मोक पूर्वी एशियाई उच्च शिक्षा संस्थानों के मैसीफिकेशन और अत्यधिक प्रतिस्पर्धी श्रम बाजार के आलोक में उच्च शिक्षा स्नातकों के लिए नौकरी के अवसरों पर एक नजर डालते हैं। एलिजाबेथ बाल्बाचेवस्की विश्वविद्यालयों के सामने नव–लोकलुभावन सरकारों के कारण उत्पन्न होने वाली चुनौतियों पर चर्चा करती हैं और दिखाती हैं कि कैसे ब्राजील के विश्वविद्यालयों के मामले में अर्ध–स्वायत्त निर्णय लेने की प्रक्रिया विश्वविद्यालयों की स्थिरता सुनिश्चित कर सकती है। युसेफ वाघिड आलोचनात्मक रूप से कोविड–19 महामारी द्वारा सामने रखे गए दूरस्थ शिक्षण की प्रवृत्ति की जांच करते हैं और अफ्रीकी सदाचार उबुन्टु के साथ नैतिकता के साथ (दक्षिण) अफ्रीकी विश्वविद्यालयों के पुनर्गठन के लिए तर्क देते हैं। इस अर्थ में विश्वविद्यालयों को स्वायत्त होने के साथ–साथ समाज से जुड़ा और स्थापित होना चाहिए।

सैद्धांतिक खंड पूंजीवाद पर गहन चिंतन लाता है। यहाँ माइकल बुरावॉय एरिक ओलिन राइट की वास्तविक यूटोपिया की अवधारणा को लेते हैं और इसे व्यवस्थित रूप से कार्ल मार्क्स और कार्ल पोलानयी के विचार से जोड़ते हैं। यह दिखाते हुए कि यदि तीनों दृष्टिकोणों को ध्यान में रखा जाए तो क्या जीता जा सकता है, फिर भी वह अपनी उंगली उस देसीराटा पर रखता है जो उनमें समान है: ''पूंजीवाद से मानवता को बचाने के लिए सामूहिक कर्त्ता कौन बनेगा? यही वह समस्या है जिसका समाधान मार्क्स, पोलानयी और राइट ने हम पर छोड़ दिया है।''

इस अंक में कंट्री–फोकस तुर्की से समाजशास्त्र पर है। एन. बेरिल ओजर टेकिन द्वारा आयोजित लेखों का यह संग्रह विविध विषयों से संबंधित है, जिसमें लैंगिक असमानताओं से लेकर सफेदपोश श्रम और महामारी के दौरान उनके कार्य–जीवन की आदतें, बुजुर्गों पर महामारी का प्रभाव और पर्यावरण विनाश के मुद्दों पर तुर्की सरकार का वर्तमान दृष्टिकोण शामिल हैं।

'खुले अनुभाग' में हैंस–जुर्गन अर्बन के लेख और वैश्विक संवाद को दी गई एक फोटो श्रंखला में औद्योगिक विकास पर प्रकाश डालते हैं, जबकि ब्रूना डी पेन्हा और एना बीट्रिज ब्यूनो डिजिटल प्लेटफॉर्म द्वारा आयोजित डिलीवरी कार्य पर अंतर्दृष्टि देते हैं। इस खंड में शामिल अन्य विषय दक्षिणपंथी लोकलुभावनवाद पर एक पोलैनियन परिप्रेक्ष्य और हत्या के अपराधियों पर समाजशास्त्रीय प्रतिबिंब हैं। ■

ब्रिगिट औलेनबैकर और **क्लॉस डोर्रे**,
वैश्विक सवांद के संपादक

> वैश्विक संवाद जी.डी. वेबसाइट पर अनेक भाषाओं में देखा जा सकता है।
> प्रस्तुतियाँ <globaldialogue.isa@gmail.com> पर भेजी जा सकती हैं।

ISA International Sociological Association

GLOBAL DIALOGUE

> संपादक मण्डल

संपादक : ब्रिजिट ऑलनबॉकर, क्लॉस डोरे

सह–सम्पादक : राफेल डींडल, जोहाना ग्रबनर, वालिद इब्राहिम

सहयोगी सम्पादक : अर्पणा सुन्दर

प्रबंधन संपादक : लोला बुसुतिल, अगस्त बागा

सलाहकार : माइकल बुरावे

मीडिया सलाहकार : जुआन लेजाररगा

परामर्श संपादक :
साडी हनाफी, ज्योफी प्लीयर्स, फिलोमिन गुतिरेज, एलोइजा मार्टिन, सावाको शिराहेस, इजाबेला बरलिंस्का, तोबा बेन्सकी, चिह–जुए जेचेन, जेन फ्रित्ज, कोइची हासेगावा, हिरोशी इशिदा, ग्रेस खुनो, एलिसन लोकोन्तो, सुसन मेकडेनियल, एलिना ओइनास, लोरा ओसो कैसास, बंडाना पुर्कायस्था, रोहडा रेडॉक, मौनीर सैदानी, आयसे सकतांबर, सेली स्कालोन, नाजानीन शाहरोकनी।

क्षेत्रीय संपादक

अरब दुनिया : *(ट्यूनिशिया)* मौनीर सैदानी, फातिमा रधौनी; *(लेबनान)* साड़ी हनाफी।

अर्जेन्टीना : मैगडालेना लेमस, जुआन परसिआ, दांते मार्चिसिओ।

बांग्लादेशः हबीबुल खोंड़कर, खैरुल चौधरी, मुमिता तंजीला, बिजॉय कृष्णा बनिक, सबीना शर्मीन, अब्दुर रशीद, एम. ओमर फारुक, मोहम्मद जहीरुल इस्लाम, सरकर सोहेल राणा, मोहम्मद शाहिदुल इस्लाम, ए.बी.एम. नजमुस साकिब, ईशरत जहान ऑयमून, हेलल उद्दीन, मसुदुर रहमान, शमसुल आरेफिन, यास्मीन सुल्ताना, सैका परवीन, रुमा परवीन, सालेह अल ममून, एकरामुल कबीर राणा, शर्मिन अख्तर शप्ला, मोहम्मद शाहीन अख्तर।

ब्राजील : गुस्तावो तानिगुती, एंजेलो मार्टिन्स जूनियर, एंड्रेजा गली, दिमित्रि सर्बोन्सीनी फर्नांडीस, गुस्तावो दिअस, जोसे गुइराडो नेटो, जेसिका मज़िजनी मेंडिस।

फ्राँस/स्पेन : लोला बुसुतिल

भारत : रश्मि जैन, राकेश राणा, मनीष यादव।

इंडोनेशिया : हरि नुग्रोहो, लूसिया रतीह कुसुमादेवी, फिना इट्रियती, इंदेरा रत्ना इरावती पट्टिनसारानी, बेनेडिक्टस हरि जूलियावान, मोहम्मद शोहीबुद्दीन, डोमिंगगस एलसीड ली, एंटोनियस एरियो सेतो हार्डजाना, डायना तेरेसा पाकासी, नुरुल ऐनी, गेगेर रियांतो, आदित्य प्रदान सेतियादी।

ईरान : रेयहाने जावदी, नियाश डॉलाती, सैयद मोहम्मद मुतालेबी, एलहम शुशत्राजिदे।

कजाकस्तान : अइगुल जाबिरोवा, बायन स्मागमबेट, आदिल रोदियोनोव, अल्माश त्लेसपयेवा, कुआनिश टेल, अलमागुल मुस्सीना, अकनूर ईमानकुल, मदियार एल्दियारोव।

पोलैंडः उर्स्जुला जारेका, जोआना बेडनारेक, मार्टा बास्ज़िस्का, अन्ना टर्नर, अलेक्सांद्रा बिएरनका।

रोमानिया : रलुका पॉपेस्कू, राइसा–गेब्रियला जमीफिरेस्कू, इरिना एलेना आयन, बियांका मिहायला, रुक्सान्द्रा पादुरारु, ऐना–मारिया रेनेतिया, मारिया व्लासेनु।

रूस : ऐलेना ज्द्रावोम्यस्लोवा, डारिया खोलोडोवा।

ताईवान : वान–जू ली, ताओ–युंग लु, यू–वेन लिओ, पो–शुंग होन्ग, यी–शुओ हुआंग, चिएन–यिंग–चिएन, यू–चिआ चेन, मार्क यी–वेई लाई, यूं–जो लिन, यूं–हुआन चाउ।

तुर्की : गुल कोरबासियोग्लू, इरमक एवरेन।

*यह संगोष्ठी वर्ग, डिजिटलीकरण और सामाजिक असमानता जैसे विषयों पर वर्तमान बहसों और दृष्टिकोणों को एक साथ लाती है और **पूंजीवाद पर सिद्धांतों** के लिए उन्हें कैसे पकड़ा जा सकता है।*

*इस संगोष्ठी के लेख **उच्च शिक्षा के समक्ष चुनौतियों** और उच्च शिक्षा प्रणाली में वर्तमान परिवर्तन प्रक्रियाओं और उनके परिणामों पर चर्चा करते हैं।*

*कंट्री फोकस में **तुर्की में समाजशास्त्र** के विभिन्न क्षेत्रों पर अंतर्दृष्टि को प्रस्तुत किया जाता है, जिसमें लिंग, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण समाजशास्त्र की एक विस्तृत थीम शामिल है।*

GD

सेज प्रकाशन की उदार ग्रांट से
वैश्विक संवाद का प्रकाशन संभव है।

> इस अंक में

संपादकीय 2

> समाजशास्त्र पर बातचीत

समाजशास्त्र का उपयोग महिलाओं के विरुद्ध हिंसा को संबोधित करने के लिए : श्रुति मजूमदार के साथ एक साक्षात्कार
सेबेस्टियन गैलेगुइलोस यूएसए द्वारा 5

> यूक्रेन में युद्ध पर नोट्स

यूक्रेन, पुतिन का शाही प्रतिमान, और यूरो–अमेरिका
साड़ी हनाफी, लेबनान द्वारा 8

> पूंजीवाद पर सिद्धांत

पूंजीवाद और वैश्विक असमानता
विलियम आई. रॉबिन्सन, यूएसए द्वारा 10

लैटिन अमेरिका में प्लेटफार्म पूंजीवाद
पेट्रीसिया वेंट्रिसी, अर्जेंटीना द्वारा 12

इंटरकैपिटल सिस्टम: आण्विक और कार्बनिक वर्ग
एस्टेबन टोरेस, अर्जेंटीना द्वारा 14

अशोभनीय पूंजीवाद
फैब्रिसियो मैसील, जर्मनी द्वारा 16

> उच्च शिक्षा के लिए चुनौतियाँ

उच्च शिक्षा में नवउदारीकरण, बाजारीकरण और अनिश्चितता
जोहाना ग्रुबनेर, ऑस्ट्रिया द्वारा 18

महामारी के बाद नवउदारवादी व्यवस्था में उच्च शिक्षा
स्टेफनी रॉस और लैरी सैवेज, कनाडा द्वारा 19

उच्च शिक्षा और रोजगार : पूर्वी एशियाई रुझान
का हो मोक, हांगकांग द्वारा 21

ब्राजील में लोकलुभावनवाद के तहत विश्वविद्यालय का लचीलापन
एलिजाबेथ बाल्बाचेवस्की, ब्राजील द्वारा 24

उबंटू विश्वविद्यालय की संभावना पर
युसेफ वाघिड, दक्षिण अफ्रीका द्वारा 26

> सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

वास्तविक यूटोपिया की आवश्यकता
माइकल बुरावॉय, यूएसए द्वारा 28

> तुर्की से समाजशास्त्र

तुर्की समाजशास्त्र : चुनौतियां और संभावनाएं
एन. बेरिल ओजर टेकिन, तुर्की द्वारा 31

तुर्की में लिंग अ/समानता और नारीवाद
असली टेलसेरेन, तुर्की द्वारा 32

कोविड–19 और तुर्की में और मध्यम वर्ग की खपत
डिस्ले कोयलन, तुर्की द्वारा 34

तुर्की में पर्यावरणवाद का समाजशास्त्र
ओजकां ओजतुर्क, तुर्की द्वारा 36

तुर्की के वैचारिक संघर्ष में जकड़ी महिलाएं
इल्कनूर हाजिसोफ्तगलू, तुर्की द्वारा 38

तुर्की में महामारी और ''डिजिटल अप्रवासी''
एन. बेरिल ओजर टेकिन, तुर्की द्वारा 40

> खुला अनुभाग

अति–वैश्वीकरण से सतत सहयोग के लिए कौन से रास्ते हैं?
हंस–जुर्गन अर्बन, जर्मनी द्वारा 42

प्रकृति लौटती है : वोल्कललगरहुट्टे, यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल
मैक्स औलेनबैकर, जर्मनी द्वारा 44

ऊपर क्यों देखें? दक्षिणपंथी ''लोकलुभावनवाद'' पर कार्ल पोलानयी
सांग हुन लिम, क्यूंग ही विश्वविद्यालय, दक्षिण कोरिया द्वारा 47

हत्या के अपराधियों की कहानियों से सीख
मार्टिन हर्नान डि मार्को, नॉर्वे सदस्य द्वारा 49

ब्राजील में डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से वितरण कार्य
ब्रुना दा पेन्हा और एना बीट्रिज ब्यूनो, ब्राजील द्वारा 51

''कनिष्ठ समाजशास्त्रियों को मेरी सलाह यह होगी कि सभी विषयों, सिद्धांत और व्यवहार के सभी पहलुओं को व्यापक रूप से पढ़ा जाना चाहिए और बड़े प्रश्न पूछने से डरना नहीं चाहिए।''

श्रुति मजूमदार

> समाजशास्त्र का उपयोग

महिलाओं के विरुद्ध हिंसा को संबोधित करने के लिए

श्रुति मजूमदार के साथ एक साक्षात्कार

श्रुति मजूमदार वर्तमान में यूएन वीमेन के अफगानिस्तान कार्यालय में एंडिंग वायलेंस अगेंस्ट वीमेन पोर्टफोलियो में कार्यवाहक कार्यक्रम प्रबंधक हैं। उन्हें भारत, बांग्लादेश, सर्बिया, जॉर्डन और उज्बेकिस्तान जैसे कई देशों में महिला सशक्तिकरण कार्यक्रमों के कार्यक्रम और अनुसन्धान के प्रतिच्छेदन पर विश्व बैंक और संयुक्त राष्ट्र में एक दशक से अधिक क्षेत्रीय अनुभव प्राप्त है। श्रुति ने ब्राउन विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र में एम.ए. और पीएचडी की है और दिल्ली विश्वविद्यालय के लेडी श्रीराम कॉलेज से समाजशास्त्र में बी.ए. किया है।

यहाँ उनका साक्षात्कार जॉन जे कॉलेज ऑफ क्रिमिनल जस्टिस (CUNY) में डॉक्टरेट के छात्र **सेबेस्टियन गैलेगुइलोस** जिन्होंने वहाँ से अंतर्राष्ट्रीय अपराध और न्याय में एम.ए. भी किया है, द्वारा किया गया। वे अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र परिषद् (आईएसए) की तरफ से संयुक्त राष्ट्र में युवा प्रतिनिधि हैं और सेंट्रो दे एस्टुडिओस दे डेरेचो पेनल, यूनिवर्सिडाड दे ताल्का, चिली में शोध सहायक भी हैं। उनकी शोध रूचि तुलनात्मक अपराध विज्ञान, सोशल मीडिया और अपराध, और कैद के विकल्प में है।

एसजी: क्या आप संयुक्त राष्ट्र में अपने वर्तमान पदस्थापन के बारे में बता सकती हैं? इस पद पर आप कब से हैं और आपके मुख्य दायित्व क्या हैं ?

एसएम: 2018 से, मैं यूएन वीमेन में महिलाओं के विरुद्ध हिंसा को रोकने के लिए यूएन ट्रस्ट फंड में काम कर रही हूँ। हम महिलाओं के विरुद्ध हिंसा को खत्म करने के लिए काम कर रहे दुनिया भर के नागरिक समाज संगठनों का समर्थन और उनमें निवेश करते हैं। यूएन ट्रस्ट फंड 25 वर्ष पुराना है और इसका महिला अधिकार संगठनों और महिला आंदोलनों के साथ काम करने का एक लंबा इतिहास रहा है। अकेले 2020 में, हमने 71 देशों और क्षेत्रों में नागरिक समाज के नेतृत्व वाली 150 परियोजनाओं को समर्थन दिया है। ये परियोजनाएं कई मुद्दों पर कार्य कर रही थीं : हिंसा से बचे लोगों को सेवाएं प्रदान करनाय महिलाओं के विरुद्ध हिंसा पर कानूनों, नीतियों और कार्ययोजनाओं के क्रियान्वयन को मजबूत करनाय और हिंसा और लैंगिक असमानता के मूल कारणों से निपटकर पूरी तरह से हिंसा को होने से रोकना।

निगरानी और मूल्यांकन विशेषज्ञ के रूप में मेरी भूमिका में, मेरे काम को मोटे तौर पर दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। सबसे पहले, मैं नागरिक समाज संगठनों के साथ प्रत्यक्ष रूप से काम करती हूं ताकि उनकी अनुसंधान और मूल्यांकन क्षमता को मजबूत किया जा सके और डेटा को उनकी प्रोग्रामिंग के लिए केंद्रीय बनाया जा सके। मैं उनकी मदद समुदायों में उनके कार्यक्रमों के प्रभाव को मापने के लिए सबसे उपयुक्त, नैतिक और सुरक्षित तरीकों पर पहुंचने में करती हूँ। मेरे काम का दूसरा और प्रमुख हिस्सा यूएन वीमेन में महिलाओं के विरुद्ध हिंसा पर आंतरिक शोध कार्य और क्षमता को बढ़ाना है। यह काम महत्वपूर्ण है क्योंकि महिलाओं और लड़कियों के विरुद्ध हिंसा खतरनाक रूप से व्याप्त है – विश्व स्तर पर तीन में से एक महिला अंतरंग साथी या गैर–साथी द्वारा शारीरिक या यौन हिंसा की रिपोर्ट करती है , और यह संख्या पिछले एक दशक से बदली नहीं है। साथ ही, हम यह जानते हैं कि हिंसा रोकी जा सकती है, इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि हम दशकों से अग्रिम पंक्ति में काम कर रहे संगठनों से सीखें। मैं शोध प्रस्ताव लिखने, संसाधन

>>

जुटाने, बाह्य शोधकर्ताओं की टीमों का प्रबंधन करने और फ्रंटलाइन संगठनों के साथ साझेदारी में ज्ञान का सह–उत्पादन करने में संलग्न हूँ। यह शोध फिर इन संगठनों को मेरे दैनिक समर्थन को भी फीड करता है। संक्षेप में, मेरे काम में समाजशास्त्रीय अनुसंधान और विकास कार्य प्रणाली के बीच लगातार आगे–पीछे घूमना सम्मिलित है –इस बारे में मैं हमेशा से जुनूनी रही हूँ ।

एसजी: आपने कई वर्षों तक समाजशास्त्र का अध्ययन किया है, जिसमें विभिन्न विश्वविद्यालयों से स्नातक, परास्नातक और समाजशास्त्र में पीएचडी सम्मिलित है। आप यूएन वीमेन में अपने समाजशास्त्रीय लेंस और कौशल को कैसे लागू करती हैं?

एस.एम.: वास्तव में, मैंने औपचारिक रूप से समाजशास्त्र का अध्ययन करते हुए लगभग दस वर्ष बिताए, हैं और अभी भी मैं इस विषय की विद्यार्थी हूँ! 2000 के दशक के प्रारम्भ में मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र में बीए किया । कई युवा भारतीय समाजशास्त्रियों की तरह, मैं भी एमएन श्रीनिवास के काम और विषय और जिस दुनिया में हम रहते हैं उसे और विशेष रूप से सामाजिक संरचना और परिवर्तन को समझने में, उनके अटूट विश्वास से बहुत प्रेरित थी। मुझे बहुत पहले ही पता चल गया था कि मैं समाजशास्त्र को आगे बढ़ाना चाहती हूँ और मैं वास्तविक दुनिया की समस्याओं के लिए समाजशास्त्रीय लेंस लागू करना चाहती हूँ। यही कारण है कि बीए के करने के तुरंत बाद, मैं ब्राउन विश्वविद्यालय में जो विकास समाजशास्त्र और विकास संबंधी गंभीर चुनौतियों दोनों पर अंतःविषय कार्य के लिए एक अद्भुत केंद्र है, में समाजशास्त्र में परास्नातक और पीएचडी करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका चली गयी। ब्राउन विश्वविद्यालय में अपने समय के दौरान संरचनात्मक हिंसा और सामाजिक आंदोलनों में और इस सवाल में कि किसी समय और स्थानों पर अन्य की तुलना में कुछ समूहों के हाशियेकृत पर होने (या गतिशील किये जाने की) की अधिक संभावना क्यों है, में मेरी बहुत अधिक दिलचस्पी हो गयी थी। इसके अलावा, गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों तरीकों के प्रशिक्षण के दौरान मैं नृवंशविज्ञान की तरफ बहुत आकर्षित हुई। अपने पीएचडी के माध्यम से और अंततः विश्व बैंक में एक समाजशास्त्री के रूप में, मुझे भारत, बांग्लादेश, सर्बिया, उजबेकिस्तान, जॉर्डन, लाइबेरिया और अन्य देशों में बड़े पैमाने पर विकास परियोजनाओं में अन्तर्निहित नृवंशविज्ञान के संचालन में समय बिताने का सौभाग्य मिला।

संयुक्त राष्ट्र में अपने वर्तमान कार्य में इन कौशलों को मैं प्रतिदिन उपयोग में लेती हूँ क्योंकि महिलाओं के विरुद्ध हिंसा के क्षेत्र के लिए एक समाजशास्त्रीय लेंस अत्यंत महत्वपूर्ण हैः समस्या के मूल कारण का निदान करने के लिए, अर्थात हिंसा को पुख्ता करने वाली सामाजिक संरचनाएं और मानदंडय सरकारों और नागरिक समाज संगठनों के साथ प्रासंगिक परियोजनाओं के सह–निर्माण के लिएय और यह मूल्यांकन करने के लिए कि क्या ये परियोजनाएं उन लोगों के लिए प्रभावी हैं जिनके लिए वे हैं, और यदि हां, तो कैसे और क्यों ? आप यहां मेरा कुछ हालिया काम देख सकते हैं, जो तीन भाषाओं में महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ हिंसा को रोकने पर दुनिया भर में 100 चिकित्सकों और सामाजिक वैज्ञानिकों के साथ सह–निर्मित पत्रों की एक श्रृंखला है। ये आलेख उन समाधानों का उल्लेख करते हैं जो सबसे कारगार हैं। गुणात्मक और मिश्रित विधियों के अनुसंधान की यह अपनी तरह की पहली व्यवस्थित समीक्षा है जो कुछ कठिन प्रश्नों का खुलासा करती है– जैसे, प्रतिच्छेदन करती अतिसंवेदनशीलता और अन्य की तुलना में क्यों कुछ महिलाओं और लड़कियों की हिंसा को अनुभव करने की संभावना अधिक है, हिंसा को रोकने के लिए समुदाय कैसे जुट सकते हैं, नागरिक समाज संगठन अपने काम के खिलाफ प्रतिदिन किस तरह के प्रतिरोध और प्रतिक्रिया को अनुभव करते हैं, और वे काम को जारी रखने के लिए रणनीतियों को कैसे अपनाते हैं। यह क्षेत्र अभी भी बड़े पैमाने पर सार्वजनिक स्वास्थ्य अर्थशास्त्रियों का क्षेत्र है और इसके परिणामस्वरूप, हिंसा को समाप्त करने के लिए क्या काम करता है, इसके बारे में प्रश्न हैं। चीजें *कैसे* और *क्यों* काम करती हैं पर समाजशास्त्रीय शोध और कलंक, शक्ति और संरचनात्मक हिंसा पर शोध से इसका पूरकीकरण करना यह स्पष्ट करता है कि इस समस्या के दीर्घकालिक, समग्र और स्थायी समाधान विकसित करने के लिए और अधिक काम करने की आवश्यकता है।

एसजी: आपके अनुभव के आधार पर, अंतरराष्ट्रीय संगठनों में काम करते समय समाजशास्त्रियों को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है? आप उन चुनौतियों को कैसे पार करती हैं?

एसएम: मेरी राय में चुनौतियों से ज्यादा अवसर हैं! जब विकास कार्यक्रमों के अपस्ट्रीम विश्लेषण, डिजाइन और डाउनस्ट्रीम मूल्यांकन की बात आती है तो समाजशास्त्रियों के पास बहुत कुछ है, और सभी विषयों में उपयोगी सहयोग के लिए बहुत सारे मार्ग हैं। फिर भी कुछ चुनौतियाँ जिनके बारे में मैं सोच सकती हूँ (कुछ सभी शोधकर्ताओं के लिए सही और कुछ समाजशास्त्रियों के लिए शायद अधिक सच हैं) वे न केवल वैषयिक सीमाओं को पार करना हैं बल्कि विकास अनुसंधान और विकास कार्य प्रणाली के बीच की सीमाओं को पार करना है। अन्य शब्दों में, व्यवहार के लिए समाजशास्त्रीय सिद्धांत का प्रभावी ढंग से लाभ कैसे उठाया जाए, और फिर, इसके विपरीत, सिद्धांत को सूचित करने के लिए अभ्यास का उपयोग कैसे करें, और इन दोनों के बीच संवाद के लिए और अधिक स्थान कैसे बनाएं?

अनुसंधान और अभ्यास में आम तौर पर अलग–अलग लय होती हैंय उत्तरजीवियों और जोखिम में पड़ी महिलाओं की जरूरतों में सन्निहित अग्रिम पंक्ति पर समाधानों के सह निर्माण करने के लिए प्रभावी रूप से संवाद करने के तरीके ढूँढना महत्वपूर्ण है। अधिक शोधकर्ताओं को तेजी से क्रियान्वयन शोध में संलग्न होने की आवश्यकता है जो उन समस्याओं के प्रकारों पर आधारित है जिनसे नागरिक समाज और सरकारें हर रोज झूझते हैं, लेकिन जो अभी भी सिद्धांत पर आधारित हैं – मैं भाग्यशाली थी कि मुझे विश्व बैंक में एक टीम, जिसे सोशल ऑब्जर्वेटरी कहा जाता है, का हिस्सा बनने के सौभाग्य मिला जहाँ हमने दक्षिण एशिया में रोमांचक अत्याधुनिक शोध किया। यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि हम नागरिक समाज संगठनों के दैनिक अभ्यासों से सीखें और उनका दस्तावेजीकरण करें, विशेष रूप से महिला अधिकार संगठनों से जो दशकों से अग्रिम पंक्ति में काम कर रहे हैं, लेकिन अपने काम का दस्तावेजीकरण करने के लिए संघर्ष करते हैं, और इसे समाजशास्त्रीय सिद्धांत को सूचित करने की अनुमति देते हैं।

एक दूसरी चुनौती, और यह समाजशास्त्रियों के लिए विशिष्ट है, यह है कि विकास अभ्यास में पूछे गए कुछ प्रमुख प्रश्नों पर पुनर्विचार करने के लिए कठोर नृवंशविज्ञान अनुसंधान का उपयोग कैसे किया जाए। कुछ वर्ष पूर्व, द न्यूयॉर्क टाइम्स ने एक अद्भुत, विचारोत्तेजक लेख प्रकाशित किया था, जिसका शीर्षक था "What if Sociologists had as Much Influence as Economists?" जैसा कि आलेख में मिशेल लेमोंट तर्क देती हैं, परियोजनाओं से पूछे जाने वाले प्रश्न अक्सर वे होते हैं जिनके उत्तर देने के लिए अर्थशास्त्री सक्षम होते

>>

हैं*य* कमरे में अधिक समाजशास्त्रियों के होने से पूछे जाने वाले प्रश्न धीरे–धीरे बदल जाएंगे। वे इस बात पर ध्यान देंगे कि कैसे और क्यों, अर्थात, नागरिक समाज संगठनों या सरकारों के नेतृत्व वाली परियोजनाओं का व्यापक सामाजिक प्रणालियों और संरचनाओं पर कैसे और क्यों प्रभाव पड़ रहा है।

एसजी: महामारी के दौरान महिलाओं के अधिकारों को मजबूत करने के लिए यूएन वीमेन में आपने किन नीतियों को बढ़ावा दिया है? आपकी राय में हम किन क्षेत्रों की अनदेखी कर रहे हैं?

एसएम: दुनिया भर के देशों में महामारी और उसके बाद के लॉकडाउन उपायों ने हिंसा के कई रूपों में उल्लेखनीय वृद्धि की है, विशेष रूप से अंतरंग साथी हिंसा (चूँकि काफी महिलाएँ अपने अपराधियों के साथ बंद हैं), गैर–साथी यौन हिंसा, ऑनलाइन यौन उत्पीड़न और, कुछ क्षेत्रों में, यहां तक कि हानिकारक पारंपरिक प्रथाएं जैसे महिला जननांग विकृति और जल्दी और जबरन बाल विवाह। यूएन ट्रस्ट फंड में, कई नागरिक समाज संगठनों के सहयोग से, मैं इन प्रवृत्तियों के बारे में नियमित रूप से लिख रही हूं ताकि नीति निर्माताओं और दाताओं का ध्यान आकर्षित किया जा सके। जैसे ही लॉकडाउन अनिश्चितकाल तक जारी रहते हैं या फिर से लागू किये जाते हैं, दुनिया भर के नागरिक समाज संगठन इस स्थिति की तुलना एक लंबे संकट से कर रहे हैं और वे अपनी आपातकालीन तैयारी और लोच का निर्माण करना चाहते हैं। उन्हें, विशेष रूप से छोटे और जमीनी स्तर के संगठनों को –वेतन, स्वास्थ्य बीमा, संचार और परिवहन के लिए –अनुकूलन करने की अपनी क्षमता का निर्माण करने के लिए लचीले और मूल वित्त पोषण की आवश्यकता होती है। लॉकडाउन ने नागरिक समाज संगठनों की क्षमताओं को गंभीर रूप से कमजोर किया है और उनके अस्तित्व को खतरा है। कई संगठनों के परिसरों को कोविड–19 परीक्षण के लिए डायवर्ट कर दिया है, उनके आश्रय स्थल और कर्मचारी अभिप्लुत हैं, और कइयों को अपने कार्यालय बंद करने पड़े, कर्मचारियों की संख्या कम कर कर्मचारियों को हटाना पड़ा, वह भी तब जब उनकी सबसे अधिक आवश्यकता थी। उनकी आवश्यकता है क्योंकि महिलाएँ अभी भी अपने स्थानीय महिला अधिकार संगठनों और समुदाय–आधारित सरंचनाओं में –व्हाट्सप्प, सोशल मीडिया, हेल्पलाइन्स, वर्ड ऑफ माउथ के द्वारा सहायता के लिए पहुँच रही हैं। या फिर वे अपने स्थानीय आश्रयस्थलों, स्वयं सहायता समूहों के नेताओं, सामुदायिक स्वास्थ्य कार्मिकों, फेथ लीडर्स, समुदाय आधारित परामर्शदाताओं और पेरालीगल्स से प्रत्यक्ष रूप से सहायता मांग रही हैं।

इसके आलोक में, यूएन वूमेन में हमने नागरिक समाज को अपना समर्थन जारी रखा है और इन्हें आगे बढ़ाया है, अधिक संसाधन जुटाए हैं, और इन संगठनों को लचीला वित्त पोषण उपलब्ध कराया है। हम उन्हें सुन रहे हैं और उनसे सीख भी रहे हैं[1]– क्योंकि इस समय प्रथम उत्तरदाता के रूप में इन संगठनों के पास बहुत बुनावटी और रियल टाइम डाटा है और हमें नीतिनिर्माताओं और अनुसंधानकर्ताओं को उन्हें सुनने और इस डाटा को खोलने एवं इस पर कार्य करने के लिए निकटता से कार्य करने का प्रयास करना होगा। संक्षेप में, उत्तरजीवियों और जमीनी स्तर के नागरिक समाज संगठनों की आवाजों को नीति के लिए प्रारंभिक बिंदु होना चाहिए, और महिलाओं और लड़कियों के विरुद्ध हिंसा को समाप्त करने वाली नीतियों को समय अनुरूप और अत्यधिक स्थानीयकृत करने की आवश्यकता है।

एसजी: अंत में, अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में अपना करियर प्रारम्भ करने वाले कनिष्ठ समाजशास्त्रियों और समाज वैज्ञानिकों के लिए आप के पास क्या कोई सलाह है ? नौकरी के अवसर तलाशने के बारे में आपके पास कोई सुझाव या जानकारी है ?

एसएम: मेरी सलाह होगी कि सभी विषयों और सिद्धांत और व्यवहार के सभी पहलुओं को व्यापक रूप से पढ़ा जाना चाहिए। और बड़े प्रश्न पूछने से डरना नहीं चाहिए ! समाजशास्त्री अपने सैद्धांतिक ज्ञान और कार्यप्रणाली के माध्यम से और क्षेत्र को आगे बढ़ाने के लिए सोच–समझकर और गंभीर रूप से विकास अभ्यास के साथ जुड़ने के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित हैं। कोविड–19 महामारी के अनुभव ने लैंगिक समानता की प्रगति की नाजुकता और बनी रहने वाली चुनौतियों के पैमाने का खुलासा किया है। अभी हम एक ऐसे नाजुक मोड़ पर हैं जहाँ इस बात को अधिक मान्यता दी गई है कि सभी क्षेत्रों में शक्ति में गहन और स्थायी परिवर्तन वाली परिवर्तनकारी दृष्टिकोणों की आवश्यकता है। हमें अधिक समग्र कार्यक्रम बनाने की जरूरत है जो पितृसत्ता और गहरी जड़ वाली लैंगिक असमानता को पूरी तरह से दूर करने की चुनौती के रूप में स्थापित करें, और हमें यह पूछने की जरूरत है: पितृसत्ता के निर्माण, उसे मूर्त रूप देने और कायम रखने वाली व्यवस्थाएं/प्रणालियाँ विचारधाराएं और संस्थाएं कौन सी हैं? विशिष्ट संदर्भों और समयों में हम उन्हें स्थायी तरीकों से कैसे परिवर्तित कर सकते हैं? मेरा दृढ़ विश्वास है कि समाजशास्त्री शोध और व्यवहार दोनों में योगदान दे सकते हैं।

मैं उन युवा समाजशास्त्रियों को जो अपना करियर शुरू कर रहे हैं को जितना संभव हो उतना क्षेत्रीय अनुभव हासिल करने के लिए प्रोत्साहित करती हूँ –संयुक्त राष्ट्र के देश–स्तरीय कार्यक्रम ऐसे हैं जहां कोई भी जटिल विकासात्मक चुनौतियों की जमीनी समझ हासिल कर सकता है। ये पोस्टिंग संयुक्त राष्ट्र की करियर (UN careers website) वेबसाइट पर देखी जा सकती हैं। साथ ही, जहाँ विकास की चुनौतियों पर अपडेटेड रहना महत्वपूर्ण है, लेकिन क्षेत्र में अत्याधुनिक शोध के साथ साथ चलना भी उतना ही महत्वपूर्ण है, विशेष तौर पर यदि आप दोनों कार्य करना चाहते हैं! और इस संबंध में, मैं आईएसए जैसे संगठनों के भीतर अन्य समाजशास्त्रियों से सीखने की क्षमता पर पर्याप्त रूप जोर नहीं दे सकती हूँ। अपटूडेट रहने, स्वयं के शोध का प्रसार करने और प्रासंगिक सहयोग बनाने के लिए यह एक शानदार मंच है।

और अंत में, उन समाजशास्त्रियों तक पहुंचने में संकोच न करें, जो दोनों कार्य करते हों। मैंने पाया कि ग्रेजुएट स्कूल के पूर्व छात्रों के संपर्क में रहना काम की प्रकृति को पूरी तरह से समझने का एक शानदार तरीका था। और वे अभी भी विकास के जटिल और निरंतर विकसित होने वाले क्षेत्र को नेविगेट करने में मेरी सहायता प्रणाली बने हुए हैं। ■

सभी पत्राचार श्रुति मजूमदार को <shruti.majumdar@gmail.com> पर प्रेषित करें।

1. United Nations Women (2020). Voices from the ground: Impact of COVID-19 on violence against women.

> यूक्रेन, पुतिन का शाही प्रतिमान और यूरो–अमेरिका

साड़ी हनाफी, अमेरिकन यूनिर्वसिटी ऑफ़ बेरूत, लेबनान, और अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय संघ के अध्यक्ष (2018–2023) द्वारा

श्रेयः पिक्साबे/क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस।

यूक्रेन पर रूसी आपराधिक आक्रमण जिसने दुनिया को हिलाकर रख दिया है, वह न केवल एक अलग युद्ध है, बल्कि एक असाधारण युद्ध भी है। यह तीसरे विश्व युद्ध में बदलने की अपनी क्षमता के आधार पर असाधारण है और विशेष रूप से, परमाणु बनने के अपने जोखिम में। नाटो का पूर्व की ओर विस्तार एक उत्तेजना है, या कम से कम जिसे फिलिस्तीनी दार्शनिक आजमी बिशारा (2022) ने ''युद्ध के रास्ते से नहीं बचने का दृढ़ संकल्प'' कहा, फिर भी यह इस उग्र आक्रमण और किसी देश की संप्रभुता पर एकतरफा कदम को बिल्कुल भी सही नहीं ठहराता है। अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र संघ (आईएसए) ने इस युद्ध के प्रारम्भ में एक बयान जारी[1] कर यूक्रेन में रूसी सैन्य हमले के बारे में अपनी गहरी चिंता व्यक्त की। आईएसए के लिए, और निजी तौर पर मेरे लिए, युद्ध कभी भी स्वीकार्य समाधान नहीं है और हमारे द्वारा बनाए गए सभी मूल्यों के खिलाफ है। आईएसए यूक्रेनी सामाजिक वैज्ञानिकों और रूसी संघ और बेलारूस सहित अन्य जगहों पर हमारे सहयोगियों, जिन्होंने इस युद्ध के खिलाफ आवाज उठाई है और लोकतंत्र और मानवाधिकारों[2] की रक्षा की है, के साथ एकजुटता के साथ खड़ा है।

> पुतिन का शाही प्रतिमान

मानवता द्वारा लम्बे समय से विकसित उदार लोकतांत्रिक आदर्शों को पुतिन का रूस लगातार कमजोर कर रहा है। प्रभावी रूप से पुतिन न केवल 2000 से सत्ता में हैं, बल्कि उन्होंने अन्य देशों (जॉर्जिया, सीरिया, यूक्रेन, आदि) द्वारा लोकतंत्रीकरण के किसी भी प्रयास के खिलाफ सक्रिय रूप से युद्ध छेड़ा है। उन्होंने अमेरिका की शक्ति के कुछ एकतरफा प्रदर्शन (जैसे, इराक पर आक्रमण) की आंशिक नकल की है, लेकिन अंतर यह है कि सद्दाम हुसैन का इराकी शासन वास्तव में तानाशाही था। यूक्रेन एक लोकतांत्रिक देश है, हालांकि नाटो में शामिल होने के मुद्दे पर अत्यधिक विभाजित है। हाल के सर्वेक्षणों के अनुसार, जहां आधी से अधिक आबादी यूरोपीय संघ में शामिल होने के पक्ष में है, वहीं 40 से 50% ही नाटो (बिशारा 2022) में शामिल होने के पक्ष में हैं। यह द्वैधवृत्तिक स्थिति ज्ञानपूर्ण है क्योंकि यह रूस के दयनीय ''महान शक्ति राष्ट्रवाद'' को ध्यान में रखती है, जो मुख्य रूप से तीन वैक्टरों पर आधारित हैः रूढ़िवादी चर्च और जार द्वारा जाली रूसी पहचानय स्लाव जातीयता (रूस, बेलोरूसिया और यूक्रेन को एक ही स्थान के रूप में सोचते हुए)य और, कुछ हद तक, यूरेशिया (पूर्व एशियाई सोवियत संघ गणराज्यों और चीन के साथ गठबंधन के माध्यम से रूस की भव्यता के लिए आवश्यक)। जहाँ मार्क्स ने उन्नीसवीं सदी के जारिस्ट रूस को यूरोप में प्रतिक्रिया के गढ़ के रूप में संदर्भित किया, पुतिन के लोकलुभावन रूस ने अपने युग की आर्थिक सफलता के बावजूद फिर से यह दयनीय भूमिका[3] निभाई। यह एक ऐसी भूमिका है जिसे मैंने सीरिया में रूसी (और ईरानी) युद्ध के दौरान पहले देखा था (और जिया था): राष्ट्र–राज्य और पुतिन के (घरेलु और शाही) प्रतिमान (लेविस 2020) में ''पहचानवादी लोकतंत्र'' पर आधारित विश्वदृष्टि जो कार्ल श्मिट की श्रेणियों को परावर्तित करता है और जिसे रूसी दार्शनिक अलेक्सांद्र दुगीन द्वारा लोकप्रिय बनाया से परे ''महान स्थान'' शक्ति प्रक्षेपण में एक अभ्यास है ।

> चार सबक

इस अंश में, मैं अपने विश्लेषण को न केवल एक समाजशास्त्री के रूप में बल्कि मध्य पूर्व में रहने वाले किसी व्यक्ति के रूप में भी साझा करता हूं। मैं आपके सामने चार सबक रखता हूँ जो हम इस युद्ध से सीख सकते हैं।

सबसे पहले, यूरो–अमेरिकी अंतरराष्ट्रीय संबंधों के विमर्श और अभ्यास का दोहरा मापदंड है। ग्लोबल दक्षिण में, प्रतिरोध, बहिष्कार और एकजुटता सेनानियों जैसे शब्दों पर प्रतिबंध लगा दिया गया है, जबकि यूक्रेन में युद्ध का वर्णन करते समय इन्हीं शब्दों का सकारात्मक अर्थ है। इजराइली समाजशास्त्र संघ के अध्यक्ष के रूप में, लेव ग्रिनबर्ग[4] ने स्पष्ट रूप से लिखाः ''यह कैसे संभव है कि अंतरराष्ट्रीय कानून के स्पष्ट उल्लंघन में इजराइल ने फिलिस्तीनी क्षेत्रों में 55 वर्षों से सैन्य कब्जा कर रखा है, फिर भी किसी भी पश्चिमी देशों ने उसके खिलाफ कभी प्रतिबंध नहीं लगाया है। इसी तरह, कुछ पश्चिमी देशों में फिलीस्तीनी के बहिष्कार, विभाजन, प्रतिबंध (बीडीएस) आंदोलन का अपराधीकरण करते हुए, कई यूरोपीय विद्वान संस्थागत और व्यक्तिगत रूप से रूसी विद्वानों के पूर्ण बहिष्कार का आह्वान करते हैं।

दूसरा, यह कैसे है कि दुनिया के अन्य क्षेत्रों में युद्ध की क्रूरता को यूक्रेन पर युद्ध के समान यूरो–अमेरिकी प्रतिक्रियाएं नहीं मिलीं? सीरिया में पले–बढ़े एक फिलिस्तीनी के रूप में जीवन का वर्णन करने के मेरे भिन्न तरीके हैं। उनमें से एक अपने जीवन को एक युद्ध क्षेत्र जहाँ शांति के बहुत कम क्षण थे, में जिए गए जीवन के द्वारा देखना हैः 1967 और 1973 में अरब–इजरायल युद्धय फिलीस्तीनी क्षेत्रों पर इजरायली युद्ध – द्वितीय इंतिफादा, 2000–2005; 2008, 2012, 2014, 2021 में गाजा पर इजरायली युद्ध; 1982, 2006 में लेबनान में इजरायली युद्ध; 1980–88 में इराकी–ईरानी युद्ध; 1991

>>

में कुवैत पर आक्रमणय; 1991, 2003 में इराक पर युद्ध; 2011 से वर्तमान तक सीरिया पर युद्ध; 2014 से वर्तमान तक यमन में युद्ध; और लीबिया में युद्ध, 2014–2020। इन क्रूर युद्धों ने बड़े पैमाने पर विनाश, पीड़ा, विस्थापन, और अंततः यूक्रेन की तुलना में मौतों को बहुत अधिक बढ़ा दिया। पश्चिमी शक्तियों ने प्रतिक्रिया व्यक्त की और स्थिरता के नाम पर और आर्थिक कारणों से औपनिवेशिक शक्ति (इजराइल) या तानाशाहों (खाड़ी और मिस्र) का समर्थन करने के लिए हल्के और बार–बार प्रतिक्रिया करना जारी रखा।

तीसरा, ऐतिहासिक साम्राज्यवाद या वर्तमान यूरो–अमेरिकी नव–उपनिवेशवाद पर ध्यान केंद्रित करने वाली कुछ उत्तर–औपनिवेशिक आलोचनाएं अन्य उभरते साम्राज्यों के प्रभावों और निष्ठाओं के स्थान को जीतने में क्रूरता की सीमा को देखने में असमर्थ रही हैं। मध्य पूर्व में सक्रिय बहुत महत्वपूर्ण साम्राज्य, ईरान, इजराइल, तुर्की और खाड़ी के राजशाही हैं, जिनमें से कुछ की सैन्य कार्रवाइयों ने उपनिवेशवाद, दुख और अधिनायकवाद को उत्पन्न किया है। इस संबंध में, लौरा डॉयल की ''अंतर–साम्राज्यवाद'' की अवधारणा मददगार है क्योंकि वे हमें साम्राज्यों को न केवल क्रमिक रूप से समझने के लिए आमंत्रित करती है, बल्कि तब अक्सर जब वे समानांतर में काम करते हैं, जिससे ''समकालीन साम्राज्यवादी इतिहास की पारस्परिक रूप से निर्मित, अत्यधिक आकस्मिक और संवादात्मक राजनीति'', उनके अप्रत्याशित, कभी–कभी विडंबनापूर्ण प्रभावों के साथ'', (डॉयल 2014) बनती है। इस प्रकार, इन बहु–आयामी गतिकी या प्रकंद साम्राज्यों में केवल तरंग प्रभाव नहीं होते हैं, बल्कि वे अक्सर हिंसक रूप से परस्पर क्रिया करते हैं, संस्थागत रूप से स्थित होते हैं, और रणनीतिक रूप से पीछा किये जाते हैं।

चौथा, रूसियों या बेलारूसियों के शिक्षा जगत में पूर्ण बहिष्कार का आह्वान उन मूल्यों के विरुद्ध है जिन्हें शिक्षाजगत बढ़ावा देना चाहता है। मैं किसी भी संस्था, जिसका संबंध औपनिवेशिक या सत्तावादी शक्तियों से है, के खिलाफ संस्थागत बहिष्कार करने के नैतिक दायित्व में विश्वास करता हूं लेकिन व्यक्तिगत स्तर पर नहीं। संघर्षों के विभिन्न दृष्टिकोणों को सुनने और खुले, सक्रिय संवाद की स्थिति को बढ़ावा देने के लिए संलग्न व्यक्तियों के साथ जुड़ना महत्वपूर्ण है। इसका मतलब यह है कि केवल उदार लोकतांत्रिक आदर्श रखने वालों का समर्थन करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि हमें, शिक्षा जगत में, उन लोगों को भी ध्यान से सुनने की जरूरत है, जो आंशिक रूप से या पूरी तरह से इन आदर्शों को अपनाने से इनकार करते हैं और एक मध्यस्थता की भूमिका निभाते हैं, पदों को पाटते हैं और एक प्रभावशाली, नैतिक और राजनीतिक रणनीति को बढ़ावा देते हैं। एक कट्टरपंथी आलोचनात्मक सामाजिक सिद्धांत के खिलाफ, मैं एक ऐसे आलोचनात्मक सिद्धांत का आह्वान करता हूं, जो शक्तियों की आलोचना करते हुए, सामानांतर रूप से उन ताकतों के साथ एक संवाद खोलने में सक्षम हो, जिनकी वह आलोचना करता है। कहने की जरूरत नहीं है कि बौद्धिक अखंडता और सामाजिक जिम्मेदारी से संबंधित कुछ नियमों के साथ अकादमिक विमर्श को किया जाना चाहिए। यह जिम्मेदारी, जो प्रचार, उकसाने, दूसरों की संस्कृति को बदनाम करने और अभद्र भाषा बोलने से रोकती है, अकादमिक स्वतंत्रता को अभिव्यक्ति की साधारण स्वतंत्रता की तुलना में अधिक नाजुक बनाती है। शिक्षाविद की भूमिका राजनीति को मित्र और शत्रु की अपनी श्मिटियन अवधारणा से मुक्त करना है – वह जहां संघ की अंतिम डिग्री अपने समूह के अन्य सदस्यों के साथ मिलकर लड़ने और मरने की इच्छा है, और अलगाव की चरम डिग्री उन दूसरों को मारने की इच्छा है, जो शत्रुतापूर्ण समूह के सदस्य हैं । मैं इतिहासकार अमित वार्शिज की से पूरी तरह सहमत हूं कि यदि राजनीतिक उदारवाद को जीवित रखना है, तो उसे अपने विरोधी आलोचकों के विचारों को गंभीरता से लेने की जरूरत है न कि उन्हें तिरस्कारपूर्वक खारिज करने की। वे हमें याद दिलाते हैं कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जर्मन दार्शनिक अर्नस्ट कैसिरर ने क्या लिखा थाः ''दुश्मन से लड़ने के लिए आपको उसे जानना चाहिए। यह एक अच्छी रणनीति के पहले सिद्धांतों में से एक है। उसे जानने का अर्थ केवल उसके दोषों और कमजोरियों को जानना नहीं है, इसका मतलब है उसकी ताकत को जानना। हम सभी इस ताकत को कम आंकने के लिए उत्तरदायी हैं। हमें राजनीतिक मिथकों की उत्पत्ति, संरचना, विधियों और तकनीकों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करना चाहिए। हमें विरोधी को आमने–सामने देखना चाहिए ताकि यह पता चल सके कि उसका मुकाबला कैसे किया जाए।''[5]

> निष्कर्ष: एकजुटता के स्तर को बढ़ाना

अंत में, सामाजिक पीड़ा का डटकर सामना करने में, हमें सामाजिक प्रेम के लिए अपने जन्मजात मौसियन उपहार से बंधे मानवीय नैतिक तर्क का प्रयोग करना चाहिए ताकि रिश्तेदारों, पड़ोसी, राष्ट्र और समग्र रूप से मानवता के प्रति एकजुटता के विभिन्न स्तरों को उत्पन्न करने के लिए करना चाहिए। जबकि हम सभी को एकजुटता का सबसे बड़ा रूप रखने का लक्ष्य रखना चाहिए, अर्थात, इस मानवता के प्रति और जिसे जन–क्रिस्टोफ हेलिंगर (2019) ने ''महानगरीय दायित्व'' कहा है, हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि यूक्रेन में युद्ध के परिणामों के प्रति यूरोपीय प्रतिक्रिया स्पष्ट रूप से एकजुटता के स्तर को प्रदर्शित करती है जो सांस्कृतिक, यहूदी–ईसाई आत्मीयता और अंततः महानगरीय राष्ट्रवादी पहचानों की तुलना में पोषित होती है। मैं अकादमिक कार्यों के साथ–साथ मुख्यधारा और सोशल मीडिया में शरणार्थियों के विभेदित व्यवहार पर सुनी कुछ आलोचनाओं की बारीकियों को सामने लाता हूं जैसे यूक्रेनी शरणार्थियों की तुलना में सीरियाई, अफगानी और अफ्रीकी शरणार्थियों के साथ कैसा व्यवहार किया गया है। हमें इन विभिन्न नैतिक तर्कों को स्वीकार करना चाहिए जो किसी भी सरलीकरण को पूर्ववत करते हैं जैसे कि केवल नस्लीय दृष्टिकोण से विभेदक उपचार को देखना, या इसे शुद्ध नस्लवाद[6] की अभिव्यक्ति के रूप में मानना। यह कहते हुए कि पश्चिमी विद्वानों को भी अरबों या मुसलमानों के बीच सांस्कृतिकध्धार्मिक आत्मीयता को स्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए और इसे व्यवस्थित रूप से खतरनाक सांप्रदायिक भावनाओं के रूप में नहीं मानना चाहिए। ■

सभी पत्राचार साड़ी हनाफी को <sh41@aub.edu.lb> पर प्रेषित करें।

1. https://www.isa-sociology.org/en/about-isa/isa-human-rights-committee/isa-statement-on-the-russian-military-offensive-happening-in-ukraine.

2. आईएसए ने सभी राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय संघों एवं शोध समितियों और अन्य शैक्षणिक संघों जिसमे उक्रेनिनाई समाजशास्त्र संघ भी सम्मिलित है, से प्राप्त सांस्थानिक युद्ध–विरोधी कथनों को अपनी वेबसाइट पर जोड़ा है।

3. https://litci.org/en/once-again-bastion-of-reaction/.

4. https://www.972mag.com/ukraine-lebanon-russia-israel/?fbclid=IwAR0Qq6eemWkOmPJPfjzlPOI5VAeOmCppHmYQUKew7RwXHO1vDjZ6LDxttss.

5. https://www.haaretz.com/world-news/.premium.HIGHLIGHT.MAGAZINE-to-understand-putin-you-first-need-to-get-inside-aleksandr-dugin-s-head-1.10682008.

6. बेशक, इनमे से कुछ आलोचनाएं सही हैं। जैसे एच.ए. हेलयेर का आलेख देखें https://www.washingtonpost.com/opinions/2022/02/28/ukraine-coverage-media-racist-biases/.

संदर्भ

Bishara, A (2022) "Russia, Ukraine and NATO: Reflections on the Determination to Not Avoid the Road to War." The Arab Center for Research and Policy Studies. (बिशारा, ए (2022) ''रूस, यूक्रेन और नाटोः युद्ध के रास्ते से नहीं बचने के दृढ़ संकल्प पर विचार।'' अरब सेंटर फॉर रिसर्च एंड पॉलिसी स्टडीज।)

Doyle, L (2014) "Inter-Imperiality: Dialectics in a Postcolonial World History." Interventions 16(2): 159–96. (डॉयल, एल (2014) ''इंटर–इंपीरियलिटीः डायलेक्टिक्स इन ए पोस्टकोलोनियल वर्ल्ड हिस्ट्री।'' *हस्तक्षेपत्र,* 16 (2): 159–96।)

Heilinger, J-C (2019) Cosmopolitan Responsibility: Global Injustice, Relational Equality, and Individual. Berlin ; Boston: de Gruyter. (हेलिंगर, जे.सी. (2019), *कॉस्मोपॉलिटन रिस्पॉन्सिबिलिटीः ग्लोबल इनजस्टिस, रिलेशनल इक्वलिटी, एंड इंडिविजुअल*। बर्लिनय बोस्टनः डी ग्रुइटर।)

Lewis, DG (2020) Russia's New Authoritarianism: Putin and the Politics of Order. First edition. Edinburgh: Edinburgh University Press. (लुईस, डी.जी. (2020), *रूस का नया अधिनायकवादः पुतिन और व्यवस्था की राजनीति*। पहला संस्करण। एडिनबर्गः एडिनबर्ग यूनिवर्सिटी प्रेस।)

> पूंजीवाद और वैश्विक असमानता

विलियम आई. रॉबिन्सन, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, सांता बारबरा, यूएसए द्वारा

घाना में एक शहरी वातावरण में सड़क का दृश्य जहां गरीबी सर्वव्यापी है। श्रेयः जेना / फ्लिकर, क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस।

अंतर्राष्ट्रीय विकास एजेंसी ऑक्सफैम के अनुसार, 2018 में, मानवता के सबसे अमीर 1% के पास दुनिया की 52% धनसंपदा थी और शीर्ष 20% के पास 95% थी, जबकि मानवता के विशाल बहुमत – शेष 80% को सिर्फ 5% से काम चलाना पड़ा और यदि ऑक्सफैम की रिपोर्ट जारी होने के समय इस तरह की प्रकट असमानताएं विलक्षण रूप में दिखाई दीं, तो वे इन बीच के वर्षों में और गहराती रही हैं। कोरोनवायरस महामारी के पहले छह महीनों में, वैश्विक अमीरों ने अपनी धनसंपदा में आश्चर्यजनक रूप से $10 ट्रिलियन की वृद्धि की, जबकि 2021 में ऑक्सफैम की एक अनुवर्ती रिपोर्ट के अनुसार दुनिया के लगभग हर देश में संक्रमण के दौरान असमानता में वृद्धि देखी गई।

> पूंजीवादी विस्तार और असमान विकास

इस तरह की असमानता का अध्ययन करने वाले उग्र कट्टरपंथी समाजशास्त्रियों का मानना है कि, व्यवस्था के समर्थकों के विपरीत, इस तरह का सामाजिक ध्रुवीकरण पूंजीवाद में निहित है, क्योंकि पूंजीपति वर्ग धन के उत्पादन के साधनों का मालिक है और इसलिए वह समाज द्वारा सामूहिक रूप से पैदा धनसंपदा को जितना संभव हो उतना लाभ के रूप में विनियोजित करता है। वे यह भी नोट करते हैं कि अपने अस्तित्व के 500 से अधिक वर्षों में व्यवस्थाओं में पूंजी संचय करने (लाभ को अधिकतम करने के लिए) के नए अवसरों की अथक खोज में प्रणाली ने लगातार विस्तार किया है। उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद, और हाल ही में वैश्वीकरण की चल रही

>>

लहरों के माध्यम से पूंजीवाद पश्चिमी यूरोप में अपने मूल क्षेत्र से बाहर विस्तृत हो गया, और अंततः इसने पूरे ग्रह को घेर लिया। इक्कीसवीं सदी की शुरुआत तक, कोई भी राष्ट्र या लोग ऐसे नहीं थे जो इस व्यवस्था से बाहर हो।

समाजशास्त्रियों ने ध्यान दिया कि विश्व पूंजीवादी व्यवस्था असमानता के दो परस्पर रूपों को उत्पन्न करती है। पहली, दुनिया भर में अमीरों और गरीबों में है, जैसा कि ऑक्सफैम ने अपनी रिपोर्ट में उल्लेख किया है, यानी कि *लोगों के बीच* असमानता। दूसरी है दुनिया के लोगों का अमीर और गरीब देशों में स्तरीकरण, या *देशों के बीच असमानता*। विश्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार, कांगो में औसत वार्षिक आय $785 प्रति व्यक्ति है, जबकि बेल्जियम में, वह देश जिसने उन्नीसवीं सदी के अंत में कांगो का उपनिवेश किया था, यह $47,400 है। अकादमिक शब्दकोष में, उपनिवेशवाद के माध्यम से दुनिया एक समृद्ध ''प्रथम विश्व'' कोर में ध्रुवीकृत हो गई, जिसमें पश्चिमी यूरोप, उत्तरी अमेरिका और जापान के राष्ट्र शामिल थे, जबकि लैटिन अमेरिका, अफ्रीका और एशिया के वे क्षेत्र जो सदियों से इस कोर द्वारा उपनिवेशवाद और वर्चस्वाद का सामना कर रहे थे को ''तीसरी दुनिया'' की परिधि को धकेल दिया गया था। हाल के वर्षों में, शिक्षाविदों और पंडितों ने पूर्व तीसरी दुनिया को ग्लोबल दक्षिण और पूर्व फर्स्ट वर्ल्ड को ग्लोबल उत्तर के रूप में संदर्भित किया है।

कार्ल मार्क्स के पूंजीवाद के विश्लेषण और बोल्शेविक क्रांति के नेता वी आई लेनिन से प्रेरणा ले कर प्रस्तुत साम्राज्यवाद के शास्त्रीय सिद्धांतों पर और उनकी पीढ़ी के समाजवादी क्रांतिकारियों, कट्टरपंथी राजनीतिक अर्थशास्त्रियों और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की अवधि में अंतरराष्ट्रीय संबंधों के विद्वानों ने निर्भरता, विश्व–व्यवस्था और अविकसितता के सिद्धांत विकसित किये। उन्होंने तर्क दिया कि उपनिवेशवाद ने विश्व अर्थव्यवस्था को इस तरह से व्यवस्थित किया कि परिधि में उत्पन्न धन को वापस कोर में ले जाया गया, जिससे पूर्ववर्ती निर्धन हो गए और परवर्ती समृद्ध हो गए, और यह ग्लोबल दक्षिण और ग्लोबल उत्तर के बीच असमानता की व्याख्या करता है। इसलिए, उन्होंने तर्क दिया, पूंजी एक स्थान पर असमान रूप से जमा होती है और कुछ लोगों को विकसित और अन्य को अविकसित छोड़ देती है।

> वैश्विक असमानता का बदलता पैटर्न

हालाँकि, सदी के अंत तक, कई नई प्रवृत्तियों ने दुनिया के देशों और लोगों के इस तरह के एक आसान विभाजन पर सवाल उठाया। सबसे पहले, पूर्ववर्ती तीसरी दुनिया के कुछ देश, विशेष रूप से पूर्वी एशिया में, औद्योगीकृत हो गए और वे आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) जैसे समृद्ध–देश क्लबों में सम्मिलित हो गए। दूसरे, सबसे गरीब देशों में भी शक्तिशाली पूंजीवादी वर्ग और महत्वपूर्ण उच्च–उपभोग वाले मध्यम वर्ग उभरे जो वैश्विक उपभोक्ता संस्कृति में एकीकृत हो गए। और तीसरे, परंपरागत रूप से समृद्ध देशों में, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की अवधि में समृद्धि देखने वाले श्रमिक वर्गों ने हाल के वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप, तेजी से नीचे की गतिशीलता, सामाजिक आर्थिक अस्थिरता और उनके पहले के आरामदायक जीवन स्तर के क्षरण का अनुभव किया है – जिसे कुछ समाजशास्त्रियों ने इन मजदूर वर्गों का ''तीसरा विश्वीकरण'' कहा है।

स्विस बैंक यूबीएस द्वारा जारी एक हालिया रिपोर्ट में कहा गया है कि दुनिया के अधिकांश अरबपति संयुक्त राज्य में हैं लेकिन अति–धनवान लोगों की संख्या सबसे तेजी से पूरे एशिया में बढ़ रही है। चीन में, जहाँ अब दुनिया के पांच अरबपतियों में से एक है, हर सप्ताह दो नए अरबपतियों बनते हैं। ब्राजीलियाई, मैक्सिकन, भारतीय, सऊदी, मिस्र, और अन्य पूंजीपति, जिन्हें मैंने अंतरराष्ट्रीय पूंजीवादी वर्ग कहा है, अब वैश्विक अर्थव्यवस्था में खरबों डॉलर का निवेश करते हैं। *फोर्ब्स* की एक अन्य रिपोर्ट में कहा गया है कि पूर्ववर्ती तीसरी दुनिया में सुपर–रिच के बीच धन कहीं और की तुलना में तेजी से बढ़ रहा है। उसके अनुसार ''2012 और 2017 के मध्य, बांग्लादेश ने अपने अति–समृद्ध क्लब में 17.3% की वृद्धि देखी''। ''इसी समयावधि के दौरान, चीन में विकास दर 13.4% थी जबकि वियतनाम में यह 12.7% थी। अन्य देशों में केन्या और भारत थे जहाँ क्रमशः 11.7% और 10.7% की दोहरे अंकों की वृद्धि दर्ज हुई थी।

कुछ लोगों ने इन प्रवृत्तियों के आधार पर तर्क दिया है कि वैश्विक उत्तर और वैश्विक दक्षिण को भौगोलिक क्षेत्रों या क्षेत्रों के संदर्भ में अंतरराष्ट्रीय जनसंख्या समूहों के संदर्भ की तुलना में संदर्भित करना अधिक समझदार है। इस दृष्टिकोण से, वैश्विक दक्षिण पूर्ववर्ती तीसरी दुनिया के गरीब लोगों को संदर्भित करता है, लेकिन प्रतीकात्मक रूप से दुनिया के अमीर क्षेत्रों में गरीबों और बहिष्कृत लोगों को भी संदर्भित करता है, जबकि वैश्विक उत्तर शक्ति और धन के केंद्रों को संदर्भित करता है जो अभी पारंपरिक रूप से समृद्ध देशों में और साथ ही दुनिया भर के उन अमीरों और शक्तिशाली लोगों में आसमान रूप से संकेंद्रित हो सकते हैं जो सत्ता के इन केंद्रों को बनाए रखते हैं, उनका प्रबंधन करते हैं और उनका आनंद लेते हैं। जहाँ समाजशास्त्री इन मामलों पर बहस करना जारी रखते हैं, एक बात स्पष्ट हैः किसी भी सामाजिक न्याय के दृष्टिकोण से हमें दुनिया के गरीब बहुसंख्यक लोगों तक धन को पहुंचाने के लिए एक क्रांतिकारी पुनर्वितरण की आवश्यकता है। और यह, चाहे हम ऐसा चाहे या नहीं, इसके लिए विश्व पूंजीवादी व्यवस्था में मौजूद शक्तियों के साथ टकराव की आवश्यकता है, क्योंकि वैश्विक अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने वाले अंतरराष्ट्रीय कॉर्पोरेट अभिजात वर्ग– ऊपर उल्लेखित ऑक्सफैम रिपोर्ट द्वारा चिन्हित मानवता का एक प्रतिशत –अपने धन और शक्ति को मिलने वाली किसी भी चुनौती का विरोध करेगा। ■

सभी पत्राचार विलियम आई. रॉबिन्सन को <w.i.robinson1@gmail.com> पर प्रेषित करें।

> लैटिन अमेरिका में प्लेटफार्म पूंजीवाद

पेट्रीसिया वेंट्रिसी, सेंट्रो डी एस्टुडिओस ई इन्वेस्टिगैसिओन्स लेबोरेल्स (सीईआईएल–कॉनिकेट), यूनिवर्सिडैड डी ब्यूनस आयर्स, अर्जेंटीना द्वारा

उरुग्वे में एक गिग अर्थव्यवस्था कामगार । खाद्य वितरण सेवाएं डिजिटलीकरण और अनिश्चितता के बीच की कड़ी का एक विशेष उदाहरण हैं। श्रेयः टेडमैकग्राथ/फ्लिकर, क्रिएटिव कॉमन्स।

तकनीकी निगमों की तेज वृद्धि, जो कोविड–19 महामारी के प्रकोप से अत्यधिक तीव्रता से बढ़ी, ने लैटिन अमेरिका में प्लेटफॉर्म पूंजीवाद के विकास को बढ़ाया है और वैश्विक दक्षिण में पूंजी, श्रम और उनके उत्परिवर्तन के आसपास कुछ बहस और घटनाओं को गहरा कर दिया है।

> डिजिटल प्रतिभातंत्र और ''विकास में छलांग''

इस क्षेत्र के कई देशों – अर्जेंटीना इसका एक स्पष्ट उदाहरण है– ने सार्वजनिक विमर्श का एक समेकन देखा है जो इस विचार का समर्थन करता है कि ''ज्ञान की अर्थव्यवस्था'' ''विकास में छलांग'' को प्राप्त करने और अंतरराष्ट्रीय ढांचे में एक नया स्थान प्राप्त करने के लिए एक ऐतिहासिक अवसर प्रदान करती है। क्षेत्र के कुछ देश– अर्जेंटीना, ब्राजील, मैक्सिको– वैश्विक प्रासंगिकता के डिजिटल निगम (जिन्हें यूनिकॉर्न कहा जाता है, जो अमेरिकी शेयर बाजार में एक हजार मिलियन डॉलर से अधिक का व्यापार करते हैं) उत्पन्न करने की क्षमता के लिए इस कथा के आधार में है।

>>

इसके अलावा, इस गुणात्मक छलांग का नेतृत्व कैलिफोर्नियाई भावना में सामाजिककृत एक नए उद्यमी अभिजात वर्ग द्वारा किया जाएगा, जो मुख्य रूप से कृषि–व्यवसायों से जुड़े स्थानीय और पारंपरिक कुलीनतंत्र का और कुछ कम डिग्री तक भारी पूंजीवाद के कुछ बुनियादी हिस्सों का विरोध करते हैं। युवा नेताओं का यह नया समूह, जो पारिभाषिक तौर पर वैश्विक व्यवसाय और भावना से प्रेरित और समय की प्रमुख भाषा का मूल निवासी है स्वयं को पारंपरिक ''राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग'' के विपरीत के रूप में परिभाषित करता है, जिसे राज्य सब्सिडी पर हमेशा निर्भर अभिजात वर्ग, प्रतियोगिता के प्रति अनिच्छुक, प्रांतीय, रूढ़िवादी, अत्यधिक कठोर, और हमेशा थोड़ा कालानुक्रमिक के रूप में चित्रित किया जाता है।

इस तरह, शुम्पेटेरियन अर्थव्यवस्था का स्वप्न अंततः डिजिटल प्रतिभातंत्र के जादू से इन अक्षांशों में उतर सका। डिजिटल अर्थव्यवस्था का पारिस्थितिकी तंत्र खुद को पुराने किराया–आधारित कुलीनतंत्र पर काबू पाने के रूप में प्रस्तुत करता है। *स्टार्टअप्स* और *यूनिकोर्न्स* पूंजीवादी प्रगति के नए नाम हैं जो हमारे परिधीय देशों के लिए वांछनीय है।

> द्विमुखी भविष्य: डिजिटलीकरण और अनिश्चितता

यद्यपि, क्षेत्र में इस प्रकार के व्यवसाय का त्वरित लेकिन अभी भी प्रारंभिक विकास एक खंडित और विषम वास्तविकता को दर्शाता है, यानि कि प्लेटफॉर्म अर्थव्यवस्था के विकास के लिए एक भौतिक आधार के रूप में डिजिटलीकरण और अनिश्चितता के बीच इंटरलॉकिंग। सामाजिक द्वैतवाद को गहरा करने की दिशा में यह गतिशीलता, अन्य स्तरों पर, श्रम की दुनिया में डिजिटल प्लेटफॉर्म द्वारा निर्मित पुनर्संरचना में स्पष्ट है। वर्तमान में, इस क्षेत्र में ''काम के भविष्य'' के बारे में बहस में स्पष्ट रूप से दो विरोधी छवियाँ हावी हैं: एक तरफ, सॉफ्टवेयर उद्योग से जुड़ी नई परिष्कृत नौकरियाँ और दूसरी तरफ, ऐप्स (उबेर, ग्लोवो और रैपी ड्राइवर्स, घरेलू सेवाएं, आदि) के माध्यम से काम करने वाले प्लेटफार्म कर्मचारियों की अति–अनिश्चितता। पिरामिड के शीर्ष पर सबसे पहले, उच्च योग्यताधारी हैं, और भले ही वे डॉलर में अपने वेतन पर विचार करते समय काफी सस्ते हों, वे स्थानीय संदर्भ में विशेषाधिकार प्राप्त कार्य की स्थिति का आनंद लेते हैं। ऐसा वे मुख्य रूप से इस प्रकार के श्रमिकों (सॉफ्टवेयर इंजीनियर, वेब डिजाइनर, डेटा वैज्ञानिक, सिस्टम विश्लेषक) की कमी के कारण कर पाते हैं। स्थानीय कंपनियों, जिन्हें अपने व्यवसाय के विस्तार के लिए श्रम शक्ति की आवश्यकता होती है, के लिए यह कमी मुख्य समस्या है। स्पेक्ट्रम के दूसरे छोर पर, सूक्ष्म–नौकरियों की अत्यधिक अस्थिरता का तात्पर्य कार्य संबंधों में अविनियमन और अत्यधिक लचीलेपन के एक मॉडल के समेकन से है, जिसका अर्थ अर्जेंटीना जैसे कुछ देशों में काम की सुरक्षा में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक उपलब्धियों का बेहताशा विघटन है। उस दिशा में, काम के *प्लेटफार्मिजेशन* में वृद्धि श्रम बाजार में बहुत उच्च स्तर की अनौपचारिकता के क्रिस्टलीकरण के लिए जमीन तैयार करती है, जहां इस प्रकार की नयी ''स्वतंत्र'' नौकरियां एक नवीनता हैं।

> नवयुगीन / युगांतरकारी भाषण: उद्यमिता

प्रतीकात्मक संचालन के स्तर पर एक मार्गदर्शक सूत्र जो भौतिक रूप से बहुत दूर इन पहलुओं को जोड़ता है, वह है : *उद्यमिता* विमर्श। यह कॉर्पोरेट जड़ों का एक बड़े पैमाने पर प्रतीकात्मक निर्माण है जो एक प्रकार की आधिकारिक विचारधारा बन गई है, जिसकी प्लेटफॉर्म कंपनियां सबसे अच्छी और सबसे कुशल अवतार हैं। यह स्वतंत्रता, दुस्साहस, नवाचार, स्वायत्तता, जोखिम और अति–उत्पादकता के एक व्यापक विचार से प्रेरित, सामाजिक कंडीशनिंग से पूर्ण स्वतंत्रता के भ्रम के तहत, एक अति–व्यक्तिगत विषय के रूप में योग्यता की पुष्टि पर जोर देता है। क्षेत्र के बड़े तकनीकी निगमों ने इस विवेकपूर्ण उपकरण में एक ऐसा उपकरण पाया है जो उनके हित के लिए एक सामान्य ज्ञान के निर्माण में बहुत कुशल है, जो सामाजिक संरचना के सबसे सुदूर क्षेत्रों के विश्व दृष्टिकोण को दृढ़ता से व्याप्त करता है। लैटिन अमेरिका के वर्तमान गहन संकट के संदर्भ में, *उद्यमिता* अपनी तकनीकी–उदार–डिजिटल भावना के साथ, एक पछेती नवउदारवाद को साकार करने के लिए कार्य करती है, जो स्पष्ट रूप से क्षीण और पतनशील है।

स्वतंत्रता के एक व्यापक विचार– अनिवार्य रूप से बाजार स्वतंत्रता – के इस उत्तेजित अनुमोदन से न्यूनतम सामाजिक समर्थन के पतन और सामान्य रूप से राज्यों के कमजोर होने के खिलाफ निगमों द्वारा अप्रत्याशित पूंजी एकाग्रता के संदर्भ के अंतर्गत सामान्य रूप से और अधिक परिधीय पूंजीवाद की ''विफल'' अवस्थाओं में, एक उल्लेखनीय विरोधाभास उत्पन्न होता है। उद्यमिता विमर्श का संचालन अस्थिरता के दिन–प्रतिदिन के अनुभव के दर्द को जोखिम के एड्रेनालाईन में बदलने और संकट को व्यक्तिगत अवसर में बदलने का प्रयास करता है। ''सशक्तिकरण'' पर यह जुआ, फिर, सामाजिक पीड़ा के निजीकरण और इस विषय पर एक उच्च स्तर के दोष में, उनकी कंगाल भौतिक स्थितियों और अति–उत्पादकता के अधूरे जनादेश से दोगुना हो जाता है।

इस नए सामाजिक विन्यास की प्रगति हमारे समय की बड़ी चुनौती में एक नई जटिलता जोड़ती है जिसका अर्थ है सामान्य ज्ञान और सामूहिक संगठन के नए क्षितिज का निर्माण। प्रतिरोध के नायक, ट्रेड यूनियन और सामाजिक आंदोलन, इस चुनौती के मुख्य एजेंट हैं, लेकिन उनकी क्षमता– जो एक महत्वपूर्ण क्षण से गुजर रही है– एक कालानुक्रमिक तर्क को फिर से बनाने और सामूहिक रूपों को फिर से बनाने की उनकी क्षमता पर निर्भर करती है जो खेल में दुविधाओं से मेल खा सकते हैं। ■

सभी पत्राचार पेट्रीसिया वेंट्रिसी को <patriciaventrici@gmail.com> पर को प्रेषित करें।

> इंटरकैपिटल सिस्टम: आणविक और कार्बनिक वर्ग

एस्टेबन टोरेस, यूनिवर्सिडैड नेशनल डी कॉर्डोबा–कॉनिकेट, अर्जेंटीना द्वारा

सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं की प्रगति की व्याख्या प्रस्तुत करने के लिए, विश्व विनियोग खेल (WAG) के ऐतिहासिक विकास पर ध्यान देना आवश्यक है, जो विश्व समाज के राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और वैश्विक क्षेत्रों में एक साथ होता है।[1] मैं डब्ल्यूएजी– या विश्व विनियोग खेल– को बातचीत के एक चर क्षेत्र के रूप में परिभाषित कर सकता हूं जो छह ऐतिहासिक प्रणालियों के बीच चौराहे पर आकार लेता है: पूंजीवादी व्यवस्था, राज्य प्रणाली, संचार प्रणाली, नस्लीय व्यवस्था, पितृसत्तात्मक व्यवस्था, और प्राकृतिक प्रणाली। 19वीं शताब्दी से पूंजीवादी व्यवस्था विश्व समाज के केंद्रीय भौतिक आयाम का गठन करती है। यह इसे– सरल शब्दों में – प्रमुख प्रणाली बनाता है।

डब्ल्यूएजी के विकास के परिणामस्वरूप पूंजीवादी व्यवस्था में जो केंद्रीय परिवर्तन आया है, वह एक नए विश्व स्तरीय ढांचे का गठन है। प्रश्नगत सामाजिक वर्गों का मार्क्स और वेबर द्वारा प्रतिमान रूप से अवधारणाबद्ध अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के पहले यूरोपीय औद्योगिक शहरों के समूहों से कोई लेना–देना नहीं है। यदि मार्क्सवादी वर्ग संरचना को उसके मूल में पूंजीवादी और मजदूर वर्गों के बीच एक सरल विरोधी संबंध द्वारा परिभाषित किया गया था, तो आज के विश्व समाज की वर्ग संरचना को मुख्य रूप से आणविक और जैविक वर्गों के बीच द्वंद्वात्मकता के आधार पर परिभाषित किया गया है। यदि उत्पादन के साधनों का स्वामित्व पहले में दांव पर था, तो बाद को जो निर्धारित करता है वह पहली बार आय का स्रोत है।

> आणविक वर्ग

आणविक वर्ग को व्यक्ति की निर्भरता और आर्थिक परिनियोजन के एक तरीके के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो पहली बार उसकी आय संरचना के साथ जुड़ा हुआ है। आणविक वर्ग का विषय व्यक्ति होता है न कि समूह। कम से कम बीसवीं शताब्दी के अंत से, विश्व समाज के प्रत्येक राष्ट्रीय क्षेत्र को एक आणविक वर्ग संरचना द्वारा आकार दिया गया है।

इस भौतिक विज्ञान में चार प्रकार के वर्गों के अस्तित्व को अलग करना संभव है: लाभ–निर्भर वर्ग (PDC), श्रम–निर्भर वर्ग (ADC), सहायता–निर्भर वर्ग (ADC), और अपराध–निर्भर वर्ग (CDC)। किसी निश्चित समय पर एक निश्चित आणविक वर्ग की किसी व्यक्ति की सदस्यता को परिभाषित करता है उसकी आय का मुख्य स्रोत है। यदि आय का मुख्य स्रोत बदलता है, तो व्यक्ति ''पुनर्वर्गीकृत'' होता है। बदले में, प्रत्येक व्यक्ति न केवल एक निश्चित क्षण मंव एक निश्चित आणविक वर्ग से संबंधित होता है, बल्कि उस वर्ग के एक निश्चित स्तर का भी होता है।

किसी व्यक्ति के वर्ग स्तर को आय की मात्रा से जुड़ी आर्थिक स्थिति के आधार पर परिभाषित किया जाता है। इक्कीसवीं सदी के रूप में, विश्व समाज के राष्ट्रीय क्षेत्रों में पांच वर्ग स्तरों के अस्तित्व की पहचान करना संभव है। ऊपर से नीचे तक, मैं उन्हें उच्च, उच्च, मध्यम, निम्न और निम्न वर्ग का स्तर कहता हूं। उच्च वर्ग के तबके से संबंधित व्यक्ति अरबपतियों के बढ़ते और निंदनीय ब्रह्मांड, सुपर–एलीट का हिस्सा है। जो व्यक्ति उच्च स्तर से संबंधित है, वह इन्फ्रा–एलीट का हिस्सा है। शीर्ष वर्ग स्तर की यह जोड़ी कुलीन क्षेत्र बनाती है। दूसरी ओर, मध्यम, निम्न और निम्न वर्ग के लोग लोकप्रिय क्षेत्र बनाते हैं। उत्तरार्द्ध महत्वपूर्ण आंतरिक विभेदों वाला क्षेत्र है।

इस प्रकार, वर्ग के आधुनिक सिद्धांतों के विपरीत, वर्ग स्तरीकरण का संकेतक नहीं है, प्रत्येक वर्ग स्तरीकृत है और प्रत्येक स्तर वर्गों का एक स्तर है। एक आणविक वर्ग को एक से अधिक स्तरों में महसूस किया जा सकता है और एक परत एक से अधिक वर्गों को एक साथ ला सकती है।

> जैविक कक्षाएं

यदि आणविक वर्ग संबंध प्रत्येक राष्ट्रीय क्षेत्र के भीतर व्यक्तियों के वर्गों के बीच संरचना और बातचीत के तरीकों से उत्पन्न होते हैं, तो जैविक वर्ग संबंध वैश्विक क्षेत्रों में देशों और क्षेत्रों के वर्गों के बीच संरचना और बातचीत के तरीकों पर आधारित होते हैं। एक कार्बनिक वर्ग आणविक वर्गों की राष्ट्रीय औरध्या क्षेत्रीय संरचना के बराबर होता है। जैविक वर्ग एक राष्ट्रीय प्रणाली की अधीनता और आर्थिक तैनाती का एक तरीका है जिसे मुख्य रूप से इसकी आय संरचना के आधार पर परिभाषित किया जाता है। जैविक वर्गों के एक विश्व वेब के अस्तित्व के बारे में जागरूक होने से, एक पूंजीवादी आर्थिक प्रणाली की एक सामान्य और विलक्षण धारणा से एक *अंतरपूंजी प्रणाली* के विचार की ओर बढ़ना संभव हो जाता है। इस प्रकार, मेरे दृष्टिकोण से, जिसे हम आमतौर पर ''पूंजीवादी व्यवस्था'' कहते हैं, वह एक मेटासिस्टम है, असममित अंतःक्रिया में पूंजीवादी प्रणालियों की एक प्रणाली, संगठन के रूप में आंतरिक रूप से विभेदित है, लेकिन अधिकतमकरण के अपने अमूर्त तर्क में नहीं।

तीन प्रतिमान प्रकार के जैविक वर्ग अंतरपूंजी प्रणाली में परस्पर क्रिया करते हैं: (i) ज्ञान पर निर्भर वर्ग (केडी=सूचनात्मक पूंजीवाद), (ii) उद्योग पर निर्भर वर्ग (आईडी=औद्योगिक पूंजीवाद), और (iii) कमोडिटी–आश्रित वर्ग (सीडी= कमोडिटी पूंजीवाद)। बदले में, दो पारस्परिक रूप से निर्धारित कार्बनिक वर्ग स्तरों के अस्तित्व को पहचानना संभव है: केंद्रीय और परिधीय। तथ्य यह है कि एक

>>

"जिसे हम आमतौर पर "पूंजीवादी व्यवस्था" कहते हैं, वह एक मेटासिस्टम है, असममित अंतःक्रिया में पूंजीवादी प्रणालियों की एक प्रणाली है।"

उप–क्षेत्र, एक देश या एक महाद्वीप इनमें से किसी एक स्तर से संबंधित है, इसकी वैश्विक आर्थिक स्थिति को दर्शाता है, जो इसकी अर्थव्यवस्था के आकार पर निर्भर करता है।

मण्डियालाइजेशन[2] के बाद से, केडी और आईडी आणविक वर्गों ने खुद को सेंट्रल स्ट्रेटम में पुनः पेश किया है, जबकि सीडी आणविक वर्ग ने खुद को पेरिफेरल स्ट्रेटम में पुनः पेश किया है। इस प्रकार, देशों या क्षेत्रों के वर्ग को एक जैविक वर्ग और एक स्तर की दोहरी सदस्यता के आधार पर परिभाषित किया जाता है। रेखांकित करने के लिए एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि जैविक वर्ग आणविक वर्गों की विश्व भौतिकता के मूल को परिभाषित करते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति, या यों कहें कि सभी वर्गों के व्यक्तियों को एक केंद्रीय या परिधीय प्रणाली से फिर से बनाया जाता है। इस तरह के स्थानीयकरण का तात्पर्य एक अति–व्यक्तिगत चरित्र के भौतिक निर्धारण का एक अतिरिक्त स्रोत है। इस प्रकार, विश्व समाज में प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति को दोहरे अधीनता और दोहरे परिनियोजन, आणविक और जैविक से कॉन्फिगर किया गया है।

1980 के दशक से विस्तार कर रहे समकालीन मुंडियालाइजेशन की प्रक्रिया भी इंटरकैपिटल सिस्टम के वर्ग संरचना के बढ़ते हुए मुंडियलाइजेशन से जुड़ी है। इस विस्तार के साथ, वर्ग असमानताएं अलग–अलग राष्ट्रीय समाजों की आर्थिक संरचना में व्यक्तियों के वर्गों के बीच विशेष रूप से असमानताएं नहीं रह गईं, लेकिन श्रम के विश्व विभाजन में देशों (और क्षेत्रों) के वर्गों के बीच केंद्रीय रूप से असमानताओं का प्रतिनिधित्व करती हैं।

यह ध्यान रखना आवश्यक है कि इस नए दृष्टिकोण में आणविक वर्गों और कार्बनिक वर्गों को अभिनेता नहीं माना जाता है। आधुनिक सामाजिक वर्ग सिद्धांत के विपरीत, वर्ग में निहित क्रिया का कोई तर्क नहीं है। व्यक्तियों के वर्ग और देशों के वर्ग सामाजिक कर्ता नहीं हैं, पूर्व निर्धारित हितों की तो बात ही छोड़ दीजिए। कम से कम बॉर्डियू के बाद से यह सामाजिक तथ्य स्पष्ट हो गया है। व्यक्तियों के वर्ग व्यक्तिगत अभिनेता बन जाते हैं जब वे वास्तव में कार्य करते हैं, और वे सामूहिक अभिनेता बन जाते हैं जब वे खुद को कंपनियों, राज्यों, ट्रेड यूनियनों, सामाजिक आंदोलनों आदि में बनाते या सम्मिलित करते हैं। इस विश्व स्तरीय संरचना को ध्यान में रखे बिना सामाजिक क्रिया की व्याख्या नहीं की जा सकती है।[3] ■

सभी पत्राचार एस्टेबन टोरेस को <esteban.torres@unc.edu.ar> पर प्रेषित करें।

1. "वैश्विक" और "सांसारिक" के बीच का अंतर यहाँ केंद्रीय महत्व का है। जैसा कि मैं इसे समझता हूं, वैश्विक वह एकवचन क्षेत्र है जो विश्व समाज के प्रत्येक राष्ट्रीय स्थान से एक विस्तृत या पीछे हटने वाले तरीके से आकार लेता है, जबकि सांसारिक वैश्विक क्षेत्रों के सेट से बनाया गया है। अधिक सटीक रूप से, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और वैश्विक क्षेत्रों के सेट से शब्द का गठन किया गया है (देखें टोरेस ई., "विश्व प्रतिमान। समाजशास्त्र के लिए एक प्रस्ताव", *वैश्विक संवाद* 11.1, https://globaldialogue.isa-sociology.org/uploads/imgen/2245-v11i1-hindi.pdf, pp. 40-41)

2. वैश्वीकरण से अलग एक विश्व समाज का विस्तार।

3. पूंजीवाद का यह सिद्धांत मेरी पुस्तक *द इंटरकैपिटल सिस्टमः द न्यू इकोनॉमी ऑफ वर्ल्ड सोसाइटी* (आगामी) में विकसित किया गया है।

> अशोभनीय पूंजीवाद

फैब्रिसियो मैसील, विजिटिंग प्रोफेसर, फ्रेडरिक–शिलर यूनिवर्सिटी जेना, जर्मनी द्वारा

पूंजीवाद को समझना कोई आसान काम नहीं है, विशेषकर इसलिए क्योंकि यह एक आर्थिक व्यवस्था है और जीवन का एक तरीका है जो लगातार बदल रहा है। बीसवीं शताब्दी के दौरान, पूंजीवाद के चरणों को परिभाषित और वर्गीकृत करने के कई प्रयास हुए। अब, इक्कीसवीं सदी में, व्यवस्था का तकनीकी आयाम पहले से ही अपना सबसे आक्रामक चेहरा दिखा रहा है, जो वैश्विक स्तर पर एक नए प्रकार के डिजिटल अंडरक्लास का उत्पादन कर रहा है। इस परिदृश्य में, कोरोनावायरस महामारी ने दुनिया भर के सामाजिक वर्गों के बीच असमानता को और स्पष्ट और गहरा किया है।

यह समझने के लिए कि हम यहां कैसे पहुंचे, हमें राजनीति के नएपन के आधार पर संयोग के भ्रम से बचने की जरूरत है। राजनीतिक क्षेत्र को एक बड़े तमाशे में बदलना और आर्थिक क्षेत्र में जो हो रहा है उसे व्यवस्थित रूप से छिपाना, यह वैश्विक मुख्य धारा के मीडिया की मुख्य विशेषज्ञता बन गयी है। यहां, हमें उस बड़े संरचनात्मक और ऐतिहासिक परिदृश्य के पुनर्निर्माण करने की आवश्यकता है जो हमें वर्तमान क्षण में लाए है।

> एक वैश्विक अंडरक्लास (निम्न वर्ग) का उदय

1970 के दशक के बाद से, पूंजीवाद एक ''बड़े रूपांतरण'' से गुजरा है, यहाँ कार्ल पोलानी की प्रसिद्ध अभिव्यक्ति को अद्यतन किया गया है। अपने गौरवशाली 30 वर्षों के बाद, संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप में कल्याणकारी राज्य का पतन, इस ''काम की नई बहादुर दुनिया'' को समझने के लिए मुख्य प्रारंभिक बिंदु है, जैसा कि उलरिच बेक ने उत्तेजक रूप से परिभाषित किया था।

कल्याणकारी राज्य के सुनहरे वर्षों के दौरान, द्वितीय विश्व युद्ध के अंत से लेकर 1970 के दशक के मध्य तक, पूंजीवाद दुनिया में सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने की अपनी क्षमता साबित करने की कोशिश कर रहा था। कल्याण की विफलता के साथ, जो जर्मनी, फ्रांस और ग्रेट ब्रिटेन जैसे मध्य देशों में अनिश्चित काम के आगमन से चिह्नित थी, यह स्पष्ट हो गया कि पूंजीवाद कभी भी किसी भी तरह के न्याय को बढ़ावा देने में सक्षम प्रणाली नहीं होगा।

तब से, वैश्विक स्तर पर एक नए पूंजीवाद का निर्माण शुरू हो गया है, जिसे मैं अशोभनीय पूंजीवाद कहता हूं। इसका मुख्य ब्रांड, परिधीय और केंद्रीय देश दोनों में, एक वैश्विक अंडरक्लास का उत्पादन है। एक अंडरक्लास का अस्तित्व हमेशा परिधीय देशों और यहां तक कि लैटिन अमेरिका और अफ्रीका जैसे पूरे महाद्वीपों की पहचान रहा है। अब, अप्रवासियों के बड़े पैमाने पर आगमन के साथ, लेकिन मध्य देशों और महाद्वीपों में लोकप्रिय वर्गों की आंतरिक दरिद्रता के साथ, जैसा कि संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप के मामले में, एक वैश्विक निम्न वर्ग का उत्पादन अशोभनीय पूंजीवाद की मुख्य विशेषता बन जाता है।

इसके साथ, यह नया पूंजीवाद मानव जीवन के मूल्य के अभाव को पैदा करने और उसे सहज बनाने में विशिष्ट है। उदाहरण के लिए, ब्राजील के संविधान में मौजूद गरिमा का विचार हमें उस न्यूनतम की याद दिलाता है जो व्यक्तियों को अपने भौतिक उत्तरजीविता और नैतिक अस्तित्व को बनाए रखने के लिए चाहिए। जब नौकरी के अवसर या राज्य की नीतियों द्वारा इस न्यूनतम की गारंटी नहीं दी जाती है, तो अपमान की स्थिति में आप्लावन होता है जो वैश्विक निम्न वर्ग के जीवन को परिभाषित करता है। ब्राजील में, यह अंडरक्लास, जिसके पास कोई काम नहीं है, आर्थिक रूप से सक्रिय आबादी के 30% के निशान तक पहुंच जाती है। जैसा कि जेसी सूजा परिभाषित करती हैं, वह एक तरह की उप–नागरिकता जी रहा है। एक और 30%, एक गरिमाहीन मजदूर वर्ग, उस तरह की कार्य असुरक्षा में रहता है जिसे हम आम तौर पर अनिश्चित के रूप में परिभाषित करते हैं।

> अनिश्चितता या अपमान ?

यहां, अनिश्चितता और अनिश्चित कार्य की अवधारणाओं पर विचार करना वाजिब है। वे केवल उन स्थितियों और काम करने की परिस्थितियों का वर्णन करती हैं जो स्पष्ट रूप से खराब हैं। मैं गरिमाहीन कार्य की अवधारणा का प्रस्ताव करता हूं, ठीक इसलिए कि यह हमें भौतिक दुख और आज दुनिया में लाखों लोगों द्वारा अनुभव की जाने वाली अपमानजनक नैतिक और अस्तित्वगत स्थिति दोनों पर प्रकाश डालने की अनुमति देता है। ब्राजील के मामले में, 30% आबादी गरिमा के किनारे पर रहती है, क्योंकि कम से कम उनके पास अभी भी कुछ काम है, भले ही वह अशोभनीय हो, जबकि अन्य 30% कोई काम न होने के कारण गरिमा की रेखा से नीचे हैं।

यूरोपीय परिदृश्य में, विशेष रूप से फ्रांस के मामले में, रॉबर्ट कास्टेल ने अशोभनीय पूंजीवाद की समझ के लिए महत्वपूर्ण बिंदुओं की पेशकश की है। उनके लिए कल्याणकारी राज्य के पतन का अर्थ है मजदूरी समाज का टूटना। इसकी मुख्य विशेषता सामाजिक असंबद्धता की प्रक्रिया है, जिसमें श्रम बाजार लोगों की बढ़ती संख्या को उनके सम्मिलन के लिए नई परिस्थितियों का निर्माण किए बिना निष्कासित करता है। इसका परिणाम जिसे लेखक ''बचे हुए'' कहता है का सामाजिक उत्पादन है, यानि यूरोपीय अंडरक्लास, जो अब वैश्विक अंडरक्लास के आंकड़ों का हिस्सा होगा।

>>

"ब्राजील के अधिकांश अधिकारियों ने 2018 के चुनावों में एक अति-योग्यतावादी बाजार मानसिकता के आधार पर सत्तावादी भावना का पालन किया।"

> अशोभनीय पूंजीवाद और चरम दक्षिणपंथ

इस संदर्भ में, हमें गरिमाहीन पूंजीवाद और वैश्विक राजनीतिक परिदृश्य पर चरम दक्षिणपंथ के उदय के मध्य संबंधों की जांच करने की आवश्यकता है। यहां, हमें प्रचलित थीसिस को तोड़ने की जरूरत है कि यह वामपंथियों और उसकी पार्टियों की गलतियाँ थीं जिन्होंने वैश्विक स्तर पर नव–सत्तावाद के उदय की अनुमति दी। एक बार फिर, हमें संयोजन के भ्रम को तोड़ने और उन गहरी संरचनाओं के विश्लेषण को फिर से बनाने की जरूरत है जो हमें यहां लाईं।

जर्मन मामले में, क्लॉस डोर्रे ने काम की अनिश्चितता में वृद्धि और चरम दक्षिणपंथ की मानसिकता और भावनाओं के पालन के बीच एक सीधा संबंध दिखाया। इसके साथ, हम समझ सकते हैं कि अधिनायकवाद गरिमाहीन पूंजीवाद का एक प्रभाव है, न कि कारण, यद्यपि यह परिस्थितिजन्य परिदृश्यों में आक्रोश को गहरा कर सकता है, जैसा कि आज ब्राजील और दुनिया के कई अन्य देशों में है।

इस प्रकार, जबकि लोकप्रिय वर्ग अपमान की स्थिति में मजबूर होने के डर से सत्तावादी भावना का पालन करते हैं, शासक वर्ग सामाजिक रूप से गारंटीकृत विशेषाधिकार की अपनी स्थिति को खोने के डर से सत्तावाद के साथ प्रेमालाप करते हैं। कई वर्षों से ब्राजील में अधिकारीयों के साथ चल रहा मेरा अनुभवजन्य शोध यही दर्शाता है। एक विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग मूल, उच्च वेतन और एक शानदार जीवन शैली के साथ, ब्राजील के अधिकांश अधिकारियों ने 2018 के चुनावों में एक अति–योग्यतावादी बाजार मानसिकता के आधार पर सत्तावादी भावना का पालन किया, जो स्पष्ट रूप से जेयर बोल्सोनारो के भाषणों में दिखाई दिया।

अब, सरकार की अति–नवउदारवादी नीति द्वारा उत्पन्न अपमान गहराने के साथ, महामारी की स्थिति में मृत्यु की अपनी नीति से जुड़ा हुआ है, ब्राजील के लोग एक कड़ा संदेश भेज रहे हैं: 2018 में कथित तौर पर ब्राजील के इतिहास में सबसे बड़ी राजनीतिक और कानूनी धोखाधड़ी के लिए लूला दा सिल्वा को गिरफ्तार किया गया था। अब 2022 में राष्ट्रपति के लिए मतदान के इरादे में पहले स्थान पर दिखाई देती हैं। हम देखेंगे कि क्या निकट भविष्य इस गरिमापूर्ण इतिहास में कुछ उलटफेर की अनुमति देगा, और दुनिया इससे क्या सीख सकती है। ■

सभी पत्राचार फैब्रिसियो मैसील को <macielfabricio@gmail.com> पर प्रेषित करें।

> उच्च शिक्षा में
नवउदारीकरण, बाजारीकरण और अनिश्चितता

जोहाना ग्रुबनेर, जोहान्स केप्लर विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रिया और ग्लोबल डायलॉग की सहायक संपादक द्वारा

लगभग 1980 के दशक के बाद से, मौलिक परिवर्तन प्रक्रियाएं, जिन्हें नवउदारवादी पुनर्गठन की प्रक्रियाओं के रूप में समझा जाता है, गतिमान हो गई है और इन्होंने अर्थव्यवस्था, राजनीति एवं समाज को पुनर्गठित किया है। 1990 के दशक के प्रारम्भ से उच्च शिक्षा क्षेत्र और विश्वविद्यालय सार्वजनिक क्षेत्र के इस सामान्य पुनर्निर्माण का हिस्सा रहे हैं, और तब से यह अधिक अर्थव्यवस्था और नवउदारीकरण के द्वारा व्याप्त हो गए हैं। कई देशों में राज्य–नौकरशाही विनियमन से बाजार और व्यावसायिक संगठन और नियंत्रण तंत्र की ओर बढ़े हुए उन्मुखीकरण में बदलाव देखा जा सकता है। इसके विभिन्न स्तरों पर गंभीर परिणाम हुए हैं।

यहां तीन प्रासंगिक पुनर्गठनों का उल्लेख किया जा सकता है: पहला, कई देशों में अध्ययन कार्यक्रमों का मानकीकरण और रुचि के आधार पर पाठ्यक्रम चुनने की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगाए गए हैं, जिसने छात्रों के अध्ययन के तरीके को मौलिक रूप से बदल दिया है। इसी समय, विश्वविद्यालयों में बड़े व्यापक स्तर पर छात्रों का नामांकन किया गया जिसने स्नातक होने के बाद नौकरी के अवसरों पर प्रभाव डाला है और अकादमिक डिग्री के महत्व को कम कर दिया है। दूसरा, कई उच्च शिक्षा प्रणालियों में नवउदारवादी मोड़ के साथ कल्याण–से–कार्य–राज्य–राज्य में बदलाव के साथ एक गैर–सुरक्षित रोजगार प्रणाली को देखा जा सकता है जिसने बलात अनिश्चितता को बढ़ावा दिया है। रैंकिंग विश्वविद्यालयों और शिक्षाविदों के बाजारीकृत रूप के साथ, प्रतिस्पर्धा में आम तौर पर वृद्धि हुई है और इसने ऐसे प्रकार का कार्यशील विषय बनाया है जो अत्यधिक कुशल तरीके से उत्पादकता बढ़ाकर एक लचीले, अविनियमित श्रम बाजार और कार्यस्थल व्यवस्था की आवश्यकताओं को पूरा (लगता है) करता है। और तीसरे, इन नई आवश्यकताओं ने, लैंगिक रूप से तटस्थ दिखाई देते हुए, क्योंकि सभी को समान रूप से स्थान दिया गया है, उच्च शिक्षण संस्थाओं में लैंगिक व्यवस्थाओं पर एक नया प्रभाव डाला है। सरंचनात्मक रूप से, अपने समय का अधिक क्षमता से प्रबंधन करने वाले और जिनके ऊपर कोई उत्तरदायित्व नहीं हैं उन्हें पसंद किया जाता है।

संगोष्ठी के लेख उच्च शिक्षा प्रणाली में होने वाले इन परिवर्तनों और प्रवृत्तियों को उठाते हैं और इन प्रवृत्तियों के विभिन्न परिणामों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। पहले आलेख में, स्टेफनी रॉस और लैरी सैवेज ने उच्च शिक्षा के वस्तुकरण और कार्य व्यवस्थाओं के पुनर्गठन के संदर्भ में कनाडा के उच्च शिक्षा क्षेत्र के चल रहे नवउदारीकरण के प्रभावों की जांच करते हैं। वे कोविड–19 महामारी के दौरान किए गए अनुकूलन और उनके कारण दर्शनीय

अरबु द्वारा चित्रण।

अवसर और परिवर्तन की आवश्यकता को देखते हैं। का हो मोक पूर्वी एशियाई उच्च शिक्षा संस्थानों के मैसीफिकेशन के आलोक में उच्च शिक्षा स्नातकों के लिए नौकरी के अवसरों विषय पर लिखते हैं। वे इस विकास के फलस्वरूप आने वाले अत्यधिक प्रति–स्पर्धी श्रम बाजार के परिणाम की जाँच करते हैं। अपने आलेख में, एलिजाबेथ बल्बाचेव्स्की उन चुनौतियों की चर्चा करती हैं जिनका सामना विश्वविद्यालय नव–लोकलुभावन सरकार के समक्ष कर रहे हैं जो उच्च शिक्षण व्यवस्थाओं को हराना नहीं बल्कि उसे बदलने की कोशिश करती हैं। वे दिखाती हैं कि ब्राजीलियाई विश्विद्यालय के मामलों में सरकार के कुप्रबंधन के कारण जब प्रशासन ध्वंस होता है कैसे अर्ध–स्वायत्तशासी निर्णय–लेने की प्रक्रियाएं विश्वविद्यालयों की स्थिरता को सुनिश्चित करती हैं। दूरस्थ शिक्षण की प्रवृत्ति को गंभीर रूप से देखते हुए, युसेफ वाघिड ने केवल ज्ञान हस्तांतरण के प्रभारी संस्थानों के रूप में विश्वविद्यालयों के, कोविड–19 महामारी द्वारा तीव्र किये गए विचार की जांच की। वे अफ्रीकी (दक्षिण) विश्विद्यालयों को स्वायत्त संस्थाएं बनाने के साथ साथ समाज के साथ जुड़े रहने और स्थित होने के लिए अफ्रीकी नैतिक मूल्य *उबुन्टु* के अनुसार उनकी पुनर्रचना के लिए बहस करते हैं। ■

> महामारी के बाद
नवउदारवादी व्यवस्था में उच्च शिक्षा

स्टेफनी रश्वस, मैकमास्टर विश्वविद्यालय, कनाडा और श्रम आंदोलन पर आईएसए की शोध समिति (आरसी–44) के सदस्य और **लैरी सैवेज,** ब्रॉक विश्वविद्यालय, कनाडा द्वारा

फरवरी 2022 में कनाडा के नोवास्कोटिया में अकादिया विश्वविद्यालय (AUFA) में फैकल्टी एसोसिएशन हड़ताल पर था। श्रेयः केन मुतलू।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कुछ लोग आज की प्रमुख तीन प्रवृत्तियों को भापने से चूक सकते हैं। पहला, उच्च शिक्षण संस्थानों का उद्देश्य बाजार की जरूरतों की दिशा में तेजी से बदल गया है। दूसरा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कार्य की अंतर्वस्तु, संगठन, वितरण और पुरस्कार नाटकीय ढंग से गहराई से बदलते महसूस किए जा रहे हैं। तीसरा इन दो परस्पर संबंधित प्रक्रियाओं के प्रभाव उच्च शिक्षा में सामूहिक आयोजन और संघर्षों की लहरों को जारी रखते हैं, भले ही यह प्रतिरोध असमान हो और मुकाबला करने, सहमति या बाहर निकलने की व्यक्तिगत रणनीतियों के साथ जुड़ा हो। उच्च शिक्षण संस्थानों पर कोविड–19 महामारी के प्रभाव ने इन प्रवृत्तियों को और गहरा कर दिया है। परिणामतः ऐसे सवाल उठने स्वभाविक है कि महामारी के बाद का उच्च शिक्षा परिदृश्य कैसा होगा और यह व्यवस्था किनके पक्ष में जायेगी।

> उच्च शिक्षा के वस्तुकरण के रूप में नवउदारीकरण

पिछले तीन दशकों ने उच्च शिक्षा के नवउदारवादी परिवर्तन को चिन्हित किया है। अपने उद्देश्य के सन्दर्भ में उच्च शिक्षा अब बाजारोन्मुख बन रही है। उच्च शिक्षण संस्थानों को अनुसंधान और श्रम आपूर्ति की दृष्टि से निजी नियोक्ताओं की जरूरतों को तरजीह देनी ही पड़ेगी ताकि प्रतिस्पर्धी वैश्विक अर्थव्यवस्था में सफल ढ़ंग से सहभागिता की जा सके। अब उच्च शिक्षा के संस्थान स्वयं बाजार

>>

के अनुशासन के अधीन हो चले हैं। वे विश्वविद्यालय के उददेश्यों को विकसित कर छात्रों उनकी पढ़ाई, फीस, तनखाएं और और जो भी धन सरकार से इन छात्रों के साथ आता है के साथ अपने वित्तीय प्रभाव के द्वारा विश्विद्यालय के उद्देश्य को आकारित करने वाले दानदातओं का निवेश या उनका उनके लोकोपकार के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। "उच्च शिक्षा के निगमीकरण'' के अधिकांश पर्यवेक्षक नोट करते हैं कि वरिष्ठ प्रशासन में शक्ति के निगमीय शैली की संरचनाओं के कारण और कोलेजिअल शासन जिसमें शिक्षक एवं अन्य साझेदारों ने बड़ी भूमिका निभाई है को बदल दिया के साथ आतंरिक निर्णय लेने के प्रतिमान और प्रक्रियाओं में परिवर्तन हुए हैं। बाजार अभिविन्यास भी संसाधनों के लिए आंतरिक और बाहरी प्रतिस्पर्धा की संरचना के लिए बजटीय बाधाओं और प्रदर्शन संकेतकों के उपयोग दोनों का ही रूप लेता है। ये सभी परिवर्तन शैक्षिक कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम में भी स्पष्ट हैं, जो अब श्रम बाजार में एक अमूल्य साख प्राप्त करने वाले छात्रों को आकर्षित करना चाहिए और इसलिए उनके महत्वपूर्ण कौशल तथा दृष्टिकोण के विकास के बजाय उनकी नौकरी की प्रासंगिकता साबित होनी चाहिए।

> कार्य पुनर्गठन: नवउदारवादी कार्य व्यवस्थाओं का क्रियान्वयन

कार्य पुनर्गठन उच्च शिक्षा के नवउदारीकरण का एक अनिवार्य घटक है क्योंकि बाजारोंन्मुख शिक्षा के इस दृष्टिकोण को लागू करने के लिए नई शैक्षणिक श्रम प्रक्रियाओं और शक्ति संबंधों की आवश्यकता होती है। सीधे तौर पर, उच्च शिक्षा की श्रम प्रक्रियाएं अकादमिक श्रम के अपने शिक्षण, अनुसंधान और सेवा घटकों में विखंडन के, इन विभिन्न घटकों में संलग्न लोगों की अकुशलता और उनके तेजी से बदले जाने योग्य श्रम के सस्ते होने के अधीन हैं। शिक्षण और अनुसंधान दोनों में अस्थायी अनुबंधों में उभार उच्च शिक्षा में बढ़ रहा है। यह एक ऐसा बदलाव है जो पैसे बचाता है और साथ ही प्रशासनिक नियंत्रण को बढ़ाता है। क्योंकि अनिश्चित रूप से नियोजित अनुबंध धारक विरले ही कॉलेजियम शासन में भाग लेते हैं। कार्य गहनता विखंडन और दुर्लभ "अच्छी नौकरियों" के साथ–साथ पर अनिश्चित अनुबंध दोनों के लिए प्रतिस्पर्धा के बढ़ते माहौल के साथ होती है। इस गहन कार्य में भावनात्मक श्रम का एक महत्वपूर्ण घटक भी शामिल है। उनकी शिक्षा क्या प्रदान करेगी के सम्बन्ध में छात्रों की उभरती हुई अपेक्षाएं भी विश्वविद्यालय की नवउदारवादी अवधारणाओं से प्रेरित होती हैं। और इसके लिए शिक्षकों को अपेक्षाओं के अनुरुप नए तरीकों से प्रबंधित करने की जरुरत है। अंततः, जैसे जैसे शिक्षण संस्थाओं में श्रमिकों की उत्पादकता निचले पायदान पर रहती है , हम उर्ध्वमुखी जवाबदेही और अधोमुखी निगरानी के स्वरूपों के विस्तार को देखते हैं क्योंकि श्रमिकों की उत्पादकता उच्च शिक्षा संस्थानों की निचली रेखा के लिए केंद्रीय हो जाती है। वहीं पाठ्यक्रम जीवन में अकादमिक स्टॉपवॉच बन जाता है जिसका उपयोग वे स्वयं को नवउदारवादी श्रम प्रक्रिया में अनुशासित करने के लिए करते हैं।

> महामारी के बाद उच्च शिक्षा: एक समान या विकल्प के लिए जगह?

कोविड–19 महामारी ने मुख्यतः इन तीन प्रवृत्तियों–वस्तुकरण और केंद्रीकरण, कार्य पुनर्गठन एवं गहनता, और संघर्ष और प्रतिरोध को और अधिक तेज करने का काम किया है। आपातकालीन स्थितियों ने उच्च शिक्षण प्रशासकों को महामारी के दौरान निर्णय लेने को और अधिक केंद्रीकृत करने तथा नीतियों व परम्पराओं को विकसित करने के लिए कॉलेजियम निकायों के आसपास चलने की अनुमति दी है। व्यक्तिगत शिक्षण में कब और कैसे लौटना है और क्या कार्यस्थल पर स्वास्थ्य व सुरक्षा प्रदान की जाएगी, इस बारे में निर्णय संघर्ष के प्रमुख बिंदु रहे हैं। काम पर लौटने के कारकों के बारे में शिक्षकों की चिंताओं जैसे प्रशासकों के समुदाय के सदस्यों के स्वास्थ्य और कल्याण के बजाय बाजार हिस्सेदारी व बजट की रक्षा करने की इच्छा– और इन निर्णयों पर सार्थक प्रभाव की कमी ने अविश्वास क्रोध, आक्रोश और वियोग की बढ़ती भावनाओं को जन्म दिया है।

महामारी के कारण काम में भी काफी तेजी आई है। शिक्षकों को आपातकालीन ऑनलाइन शिक्षण और संचालन से लेकर शिक्षण के लिए नई तकनीकों व कौशल से जल्दी से अनुकूलन करना पड़ा है। बीमारी, मृत्यु, नौकरी छूटने और भविष्य के बारे में सामान्यीकृत चिंता का सामना करते हुए शिक्षा को आगे बढ़ाने का प्रयास करते हुए संकाय को भावनात्मक श्रम करने और छात्र की जरूरतों की एक श्रृंखला का जवाब देने के लिए बढ़ी हुई अपेक्षाओं का भी सामना करना पड़ा। शिक्षकों को अपने स्वयं के डर का प्रबंधन करते हुए छात्रों की भावनाओं को अवशोषित और प्रबंधित करना पड़ता था। अक्सर ऐसे संदर्भ में जहां घर से काम करने का मतलब उन बच्चों को ध्यान में रखना था जो घर से ऑनलाइन स्कूल में भी लगे हुए थे। यह सब एक ऐसे संदर्भ में हुआ है जहां अनुसंधान उत्पादकता की अपेक्षाओं को कम नहीं किया गया है, जो कि पहले से ही उच्च स्तरीकृत क्षेत्र में संरचनात्मक रूप से अधिक विशेषाधिकार प्राप्त शिक्षकों को और अधिक लाभान्वित करता है।

कोविड से थकान, प्रशासन के प्रति शिक्षकों की बढ़ती नाराजगी और क्षेत्र के वित्त को बहाल करने के लिए किए गए मितव्ययिता के उपायों ने सामूहिक प्रतिरोध के रूपों को जन्म दिया है। जहाँ, महामारी के प्रारंभिक दिनों में उच्च शिक्षा में हड़ताल की घटनाएं बहुत कम हो गई थीं, अब हमें परिसर में उग्रता, संघर्ष और श्रम व्यवधानों में वृद्धि दिखाई देती है। यह 2022 की शुरुआत में कनाडा और यूके में फैल रही माध्यमिक हड़ताल की लहर में सबसे स्पष्ट दिखा है। जहाँ महामारी की स्थिति सामूहिक कार्रवाई को और अधिक कठिन बनाने के लिए काम करती है, उन्होंने कुछ उपजाऊ जमीन भी बनाई है क्योंकि उच्च शिक्षण कामगार अपने प्रशासन से पहले से कहीं अधिक अलग–थलग महसूस करते हैं।

क्या हड़ताल की कार्रवाई के माध्यम से यह प्रतिरोध नवउदारवादी शिक्षण संस्थाओं को महामारी के बाद बदल देगा? यह अभी भी एक खुला प्रश्न है। हालाँकि, जो स्पष्ट है, वह यह है कि बाहरी राजनीतिक और आर्थिक दबाव लगभग निश्चित रूप से विश्वविद्यालय के प्रशासन के काम व निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को इस तरह से पुनर्गठित करने की माँगों को आकार देना और चलाना जारी रखेंगे जो अकादमिक कामगारों के मध्य क्रोध, आक्रोश और संभावित रूप से और भी अधिक उग्रता पैदा करेंगा। ■

सभी पत्राचार स्टेफनी रॉस को <rosss10@mcmaster.ca> पर और लैरी सैवेज को <lsavage@brocku.ca> पर प्रेषित करें।

> उच्च शिक्षा और रोजगार: पूर्वी एशियाई रुझान[1]

का हो मोक, लिंगनन विश्वविद्यालय, हांगकांग द्वारा

उच्च शिक्षा के बढ़ते विस्तार ने स्नातक रोजगार पर दबाव डाला है और साथ ही श्रम बाजार पर प्रतिस्पर्धी ध्यान केंद्रित किया है। श्रेयः लिंगनन विश्वविद्यालय।

हाल के वर्षों में, बड़े पैमाने पर उच्च शिक्षा प्रणाली के स्नातकों ने नौकरी की तलाश के साथ पूर्वी एशिया के श्रम बाजार ने उच्च शिक्षित कार्मिकों की भारी आमद का अनुभव किया है। पूर्वी एशिया में उच्च शिक्षा के बड़े पैमाने पर विस्तार ने निस्संदेह स्नातक रोजगार पर दबाव बढ़ाया है। परिणामतः श्रम बाजार अत्यधिक प्रतिस्पर्धी हुआ है। तालिका 1 शैक्षिक प्राप्ति के आधार पर 2020 में पूर्वी एशिया (चयनित देशोंध्क्षेत्रों) में बेरोजगारी दर को दर्शाती है। आंकड़े शायद सीधे तौर पर उच्च शिक्षा के वृहद विस्तार और बढ़ती बेरोजगारी दर के बीच कारकीय संबंध को प्रतिबिंबित करते हैं क्योंकि बेरोजगारी दर अपेक्षाकृत कम रहती है। यद्यपि, इस बात के प्रमाण बढ़ रहे हैं कि हाल के वर्षों में बड़े पैमाने पर शिक्षा के विस्तार के फलस्वरूप नए स्नातक मजबूत प्रतिस्पर्धी रोजगार की स्थिति को प्राप्त करने में असमर्थ रहे हैं। यह उन नौकरियों की गुणवत्ता के बारे में सवाल उठाता है जिनमें नए स्नातक प्रवेश कर रहे हैं चाहे वे औपचारिक या अनौपचारिक श्रम बाजार में हों। (यहां तालिका 1 देखें)

> उच्च शिक्षा का वृहद विस्तार द्धमैसीफिकेशनऋ और स्नातक रोजगार के लिए चुनौती

वैश्वीकरण के गति पकड़ने और ज्ञान–आधारित अर्थव्यवस्था की ओर परिवर्तन के साथ ही कई उभरते देशों ने अपनी वैश्विक प्रति–स्पर्धा में सुधार लाने के लिए अपनी उच्च शिक्षण व्यवस्था को विस्तारित किया है। हालाँकि, आशा के विपरीत इन नए स्नातकों ने अभी तक श्रम बाजार में मजबूत प्रतिस्पर्धा का प्रदर्शन नहीं किया है। यद्यपि, वैश्विक बेरोजगारी दर में कमी आयी है, अभी 170 मिलियन से अधिक लोग बेरोजगार हैं। (अंतर्राष्ट्रीय श्रम कार्यालय, 2019)। विश्व बैंक के आंकड़े बताते हैं कि इक्कीसवीं सदी की शुरुआत के साथ रोजगार प्राप्त युवा आबादी ने नीचे की ओर रुझान प्रदर्शित किया है। यूरोप, उत्तरी अमेरिका और अफ्रीका की तुलना में, एशियाई देशों में विशेष रूप से पूर्वी एशिया में युवा रोजगार दरों में गिरावट अधिक स्पष्ट है। (चित्र 1 देखें)। पूर्वी एशिया का डेटा युवा बेरोजगारी दर में उतार–चढ़ाव का खुलासा करता है, जो कि वर्तमान कोविड–19 महामारी में मंदी के तहत और तेज हो गई है। (यहां चित्र 1 डालें)

हाल के अध्ययनों से लगातार पता चला है कि पश्चिमी और पूर्वी एशियाई देशों में उच्च शिक्षा स्नातकों की नई पीढ़ी को नौकरी खोजने में परेशानी हो रही है और उन्हें अल्प–रोजगार या बेरोजगारी का सामना करना पड़ता है। चित्र 2 पूर्वी एशिया में युवा बेरोजगारी की बढ़ती प्रवृत्ति को दर्शाता है। इसके अलावा, उच्च शिक्षा स्नातक निम्न शिक्षा स्तर की आवश्यकता वाले कम वेतन वाली नौकरियों को स्वीकार करके रोजगार सुरक्षित कर सकते हैं, जिससे श्रम बाजार में तथाकथित "अति–योग्यता" की समस्या हो सकती है। अधिक योग्यता और अत्यधिक विस्तार (मैसीफिकेशन) के प्रभाव से उच्च बेरोजगारी दर, कम मासिक वेतन और अनिश्चित काम को अग्रेषित

>>

शैक्षणिक उपलब्धियों के अनुसार 2020 में पूर्वी एशिया में बेरोजगारी दर
(चयनित देशों / क्षेत्रों में)

Country/Region	Education Level	Unemployment Rate (%)
Hong Kong	Post-secondary education	5.10
Japan	College & university	2.90
South Korea	University & higher	3.50
Taiwan	University & graduate school	4.92

Table 1. *Data source: Hong Kong SAR, https://www.statistics.gov.hk/pub/B10100062020AN20B0100.pdf; Japan, https://news.yahoo.co.jp/byline/fuwaraizo/20210325-00228342/; Korean Statistical Information Service, https://kosis.kr/eng/search/searchList.do; Census and Statistics Department, National Statistics, Republic of China (Taiwan), https://eng.stat.gov.tw/ct.asp?xItem=42761&ctNode=1609&mp=5.*

युवा रोजगार – आबादी अनुपात

	World	East Asia	South East Asia and Pacific	South Asia	North America	North, South and West Europe	Central and West Asia	Sub-Saharan Africa	North Africa
1999	46.4	62.2	51.5	38.1	56.3	38.9	37.7	47.9	25.4
2019	35.6	40.8	42.4	25.7	47.9	37.3	35.4	44.1	19.2
2023	34.6	39.1	41.2	24.8	45.9	36.1	34.3	43.6	18.7

Figure 1. *Data source: The World Bank, http://datacatalog.worldbank.org.*

पूर्वी एशिया में युवा बेरोजगारी दर

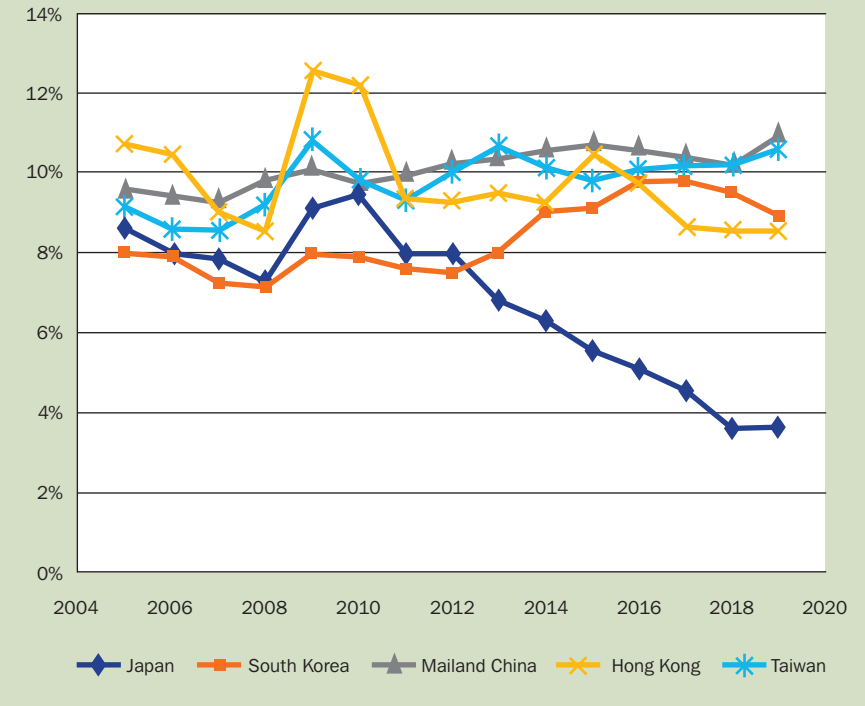

Figure 2. *Data source: National Bureau of Statistics of China, http://www.stats.gov.cn; Hong Kong SAR Census and Statistics Department, http://www.censtatd.gov.hk/sc; National Statistics, ROC (Taiwan), http://www.stat.gov.tw; National Statistical Office of South Korea, http://kostat.go.kr; Statistics Bureau of Japan, http://www.stat.go.jp.*

>>

कर सकती है। उच्च शिक्षा स्नातकों की अधिक आपूर्ति से न केवल मानव पूंजी सिद्धांत के "टूटे हुए वादे" का पता चलता है, जो कि यह मानता है कि उच्च शिक्षा में अधिक निवेश से न केवल सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि होगी बल्कि युवा विश्वविद्यालय के स्नातकों द्वारा सामना की जा रही बेमेल क्रूर वास्तविकता भी उजागर होगी। जहाँ उन्हें अपनी योग्यता और उपलब्ध नौकरियों में बेमेलता दिखाई देती है। उनकी योग्यता के हिसाब से नौकरी एक बड़ा मुददा है। अनिश्चित कार्य की शिकायत करने वाले दुखी युवा अधिकाधिक उभार पर हैं।

उदाहरण के तौर पर जापान, दक्षिण कोरिया, हांगकांग, ताइवान और चीन को देखो तो कॉलेज स्नातकों की बेरोजगारी दर में 2004 से 2020 तक भारी उतार–चढ़ाव आया है। (चित्र 2 देखें)। ध्यान दें कि उच्च शिक्षा को व्यापक बनाने की प्रवृत्ति पूर्वी एशियाई क्षेत्रों में युवा बेरोजगारी के मुद्दे को संबोधित करने में विफल रही है। जो महत्वपूर्ण रूप से कम होने के कोई संकेत नहीं दिखाती है। यानि कि, स्नातकों को उच्च शिक्षा की डिग्री प्राप्त करने के बावजूद नौकरी खोजने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। जापान ने युवा स्नातकों के बीच बेरोजगारी दर को कम करने में बेहतर प्रदर्शन किया। यद्यपि 2018 के बाद एक मामूली पलटाव हुआ था। इसलिए, उच्च शिक्षा स्नातक कैसे अच्छे रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकते हैं, यह पूरे पूर्वी एशिया में बड़ी चिंता का विषय बना हुआ है।

> नीतिगत निहितार्थ

इस लेख ने दिखाया है कि कैसे उच्च शिक्षा के प्रसार ने स्नातक स्तर के रोजगार पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है, विशेष रूप से स्नातक कौशल सेट और बदलते श्रम बाजार की बदलती जरूरतों के बीच में उभरता बेमेलपन है। वर्तमान शोध श्रम बाजार की जरूरतों के साथ विश्वविद्यालय के स्नातकों के ज्ञान और कौशल सेट के मिलान के महत्व को दर्शाता है। उच्च शिक्षा संस्थानों से युवा स्नातक जो कौशल हासिल करते हैं, जरूरी नहीं कि वे श्रम बाजार में रोजगार में तब्दील हो ही जाएं। इसके अलावा कुछ आपूर्ति–पक्ष दृष्टिकोण स्नातकों के कौशल को बढ़ाने के लिए उच्च शिक्षा संस्थानों पर जिम्मेदारी डालते हैं। हालांकि, अच्छी तरह से विकसित और अच्छी तरह से निष्पादित रोजगार योग्यता प्रावधान जरूरी नहीं कि स्नातकों के वास्तविक रोजगार परिणामों के बराबर हो। इसलिए, उच्च शिक्षण संस्थानों को तीव्र सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों को पूरा करने के लिए अपने पाठ्यक्रम का आलोचनात्मक मूल्यांकन करते रहना चाहिए।

मानव पूंजी सिद्धांत के "टूटे हुए वादे" के साथ संयुक्त रूप से स्नातक बेरोजगारी और अल्परोजगार की तीव्रता ने युवाओं में असंतोष बढ़ाया है। हाल के अध्ययन पूर्वी एशिया में युवाओं द्वारा स्वयं में बढ़ती नाखुशी को रिपोर्ट करते हैं। इसी तरह, यूनाइटेड किंगडम और यूरोप में नाखुश युवाओं ने पश्चिम में सरकारों को "युवा लोगों के संकट" को पहचानने के लिए मजबूर किया है। दुनिया के विभिन्न देशों में सरकारों को तीव्र अंतर–पीढ़ी संघर्षों को सावधानी से संभालना होगा। खासकर जब दुखी युवा व्यक्तियों की बढ़ती संख्या शिक्षा, कार्य, आवास और कल्याण में पीढ़ीगत असमानताओं को समस्या की जड़ के रूप में देखें। ■

सभी पत्राचार का हो मोक को <kahomok@ln.edu.hk> पर प्रेषित करें।

1. यह आलेख लेखक के हालिया आलेख का संषोधित एवं रूपांतरित संस्करण है : Mok, KH, Ke, GG and Tian, Z (2022) "Massification and privatisation of higher education in East Asia: Critical reflections on graduate employment from sociological and political economic perspectives," In: Brown, P et al (eds) *International Handbook for Graduate Employment*. Cheltenham: Edward Elgar. (प्रेस में).

> ब्राजील में लोकलुभावनवाद के तहत विश्वविद्यालय का लचीलापन

एलिजाबेथ बाल्बाचेवस्की, साओ पाउलो विश्वविद्यालय, ब्राजील द्वारा

एक दीवार पर चिपका ''लोकलुभावन'' शब्द का स्ट्रीट आर्ट। श्रेयः डॉ केस / पिलकर।

यह आलेख नव–लोकलुभावन सरकार के तहत सार्वजनिक विश्वविद्यालयों के सामने आने वाली चुनौतियों को सम्बोधित करता है। यह राष्ट्रपति बोल्सोनारो की सरकार के सामने ब्राजील के सार्वजनिक विश्वविद्यालयों के समकालीन अनुभव का अन्वेषण करके इस लक्ष्य को प्राप्त करता है।

पिछले कुछ दशकों में, दुनिया भर में उच्च शिक्षा को सरकारी पहलों से कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। नवउदारीकरण, बाजारीकरण, प्रबंधकीयकरण और अन्य शब्द उच्च शिक्षा, सरकारों और समाज के बीच संबंधों को आकार देने वाली बदलती गतिशीलता के कई पहलुओं का वर्णन करते हैं। हालाँकि, नव–लोकलुभावन सरकार का अनुभव एक कदम और गहरा जाता हैः इस तरह की सरकार के तहत, विश्वविद्यालयों को केवल एक प्रतिकूल नीतिगत माहौल का अनुभव नहीं होता है जो बदलाव के लिए दबाव डालता है। इसके बजाय, उन्हें एक दुश्मन के माहौल का सामना करना पड़ता है, जहां सरकार को रूपांतरण में नहीं बल्कि विश्वविद्यालयों को हराने में दिलचस्पी है।

लोकलुभावनवाद एक पुराना शब्द है जिसका उपयोग राजनीतिक विश्लेषण में उन नेताओं का वर्णन करने के लिए किया जाता है जो आबादी के बड़े हिस्से के प्रत्यक्ष समर्थन को जुटाकर सत्ता में आते हैं और सत्ता में बने रहते हैं। वे समाज में विभिन्न क्षेत्रों की शिकायतों और आक्रोशों को संबोधित करते हुए विभिन्न प्रवचनों को सावधानीपूर्वक तैयार करके इस लामबंदी को प्राप्त करते हैं। वर्तमान में, ज्ञान समाज की गतिशीलता के कारण हाशियेकृत क्षेत्रों में व्यापक आक्रोश राजनीतिक उद्यमियों के लिए इस असंतोष को आवाज देने और व्यवस्थित करने के लिए समय और संसाधनों के निवेश से लाभ उठाने के लिए एक उत्कृष्ट अवसर का प्रतिनिधित्व करता है। वे पुराने लोकलुभावन टूलकिट को नियोजित करके ऐसा करते हैंः नेता और अनुयायियों के बीच एक व्यक्तिगत गठजोड़ को पोषण कर और ''लंबे समय से उपेक्षित लोगों'' को शामिल करने और उनकी रक्षा करने का वादा कर के।

> विश्वविद्यालयों पर नव–लोकलुभावन हमला

इस विमर्श में, अन्य संस्थाओं के बीच, विश्वविद्यालय दुश्मन का प्रतिनिधित्व करते हैंः वे उत्तर–भौतिकवादी संस्कृति और मूल्यों के उद्गम स्थल हैं जो ''लोगों'' के मूल विश्वासों को चुनौती देते हैं। विश्वविद्यालय विज्ञान और प्रौद्योगिकी को शामिल करते हैं, जो पुरानी परंपराओं के लिए मुख्य खतरों में से हैं। स्थापित सत्यों को संबोधित करते समय विज्ञान जिस संशयपूर्ण दृष्टिकोण का पोषण करता है, वह संदेह का एक अन्य स्रोत है। ये धारणाएं विश्वविद्यालय को दुश्मन बनाती है जिसे घुटनों पर लाना है। नव–लोकलुभावनवाद के अधिक अधिनायकवादी संस्करण में, विश्वविद्यालय के जीवन को नियंत्रित करने की नीतियों का गहरा अर्थ हैः उनका उद्देश्य नव–लोकलुभावन शासन द्वारा कायम प्रमुख विचारधारा को फैलाने के लिए विश्वविद्यालय को एक उपकरण में परिवर्तित करना है।

ब्राजील में आज के लोकतंत्र के लिए खतरा पैदा करने वाले नव–लोकलुभावनवाद की जड़ें वैश्वीकरण द्वारा लाई गई दरिद्रता और असुरक्षा में भी हैं। लेकिन यह और भी गहरी जाती हैंः यह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच की अनिश्चितता और आधुनिक कौशल और दक्षताओं के लिए प्रशिक्षण में व्यापक कमी के कारण पैदा हुई असुरक्षा को बढ़ावा देती हैं। उम्मीदवार जायर मेसियस बोल्सोनारो ने 2018 में राष्ट्रपति पद के लिए इस नाराजगी को अपने विजयी अभियान में खोजा था। उन्होंने विभिन्न सोशल मीडिया चौनलों

>>

को लामबंद करके और अपने समर्थकों को दिशा प्रदान करने के लिए विविध आख्यानों को डिजाइन करके यह उपलब्धि हासिल की थी। प्रत्येक कथा ने घृणा और आक्रोश के स्रोतों की खोज की और उम्मीदवार को सभी शिकायतों की सही अभिव्यक्ति और पुराने, पारंपरिक मूल्यों के लिए सेनानी के रूप में प्रस्तुत किया।

एक बार कार्यालय में, बोल्सोनारो ने सोशल मीडिया के माध्यम से जुटाए गए अनुयायियों के एक बड़े, बिखरे हुए और विविध नेटवर्क के समर्थन और विभिन्न दलों के कांग्रेस के सदस्यों के विशाल संग्रह के उत्साही समर्थन के संयोजन से शासन किया है। बोल्सोनारो के राजनीतिक समर्थन को एक रूढ़िवादी एजेंडा जुटाता है। इसका मुख्य लक्ष्य सभी क्षेत्रों: पर्यावरण, स्वास्थ्य, शिक्षा, बुनियादी ढांचा और कल्याण में नियामक ढांचे को खत्म करना है।

बोल्सोनारो की सरकार ने सार्वजनिक विश्वविद्यालयों को भी दुश्मन माना है। विभिन्न अवसरों पर, सरकारी सदस्यों ने सार्वजनिक विश्वविद्यालयों को कम्युनिस्टों और नास्तिकों के अड्डे के रूप में चित्रित किया है और विश्वविद्यालय के अधिकारियों पर उनके परिसरों में मारिजुआना के बागानों को सहन करने का आरोप लगाया है। तदनुसार, उनकी सरकार ने संघीय विश्वविद्यालयों के बजट में कठोर कटौती की। न्याय मंत्रालय ने शिक्षाविदों और विश्वविद्यालय के उच्च प्रशासनिक कर्मचारियों के खिलाफ कानूनी प्रक्रिया शुरू करने के लिए 1960 के दशक के सत्तावादी वर्षों से दिनांकित एक पुराने कानून को तैयार किया, जब भी वे सार्वजनिक वार्ता में सरकार की आलोचना करने की हिम्मत करते थे। महामारी को बहाने के रूप में उपयोग में लेते हुए, सरकार ने नए शिक्षाविदों और कर्मचारियों की भर्ती पर भी रोक लगा दी। विभिन्न अवसरों पर अकादमिक स्वायत्तता में हस्तक्षेप करने के लिए कदम उठाए गए: सामाजिक विज्ञान और मानविकी के समर्थन के लिए संसाधनों में कटौती और लिंग और नस्लीय असमानताओं पर ध्यान केंद्रित करने वाले स्नातक कार्यक्रमों की निरंतरता को खतरे में डालने की दिशा में कार्रवाई। अंत में, कई अवसरों पर स्थापित नियमों को दरकिनार करते हुए और छोटे रूढ़िवादी आंदोलनों के नेताओं को विश्वविद्यालय प्रमुखों के रूप में नियुक्त कर सरकार विश्वविद्यालयों के आंतरिक शासन को अव्यवस्थित करने में सफल रही।

> विश्वविद्यालयों का विरोध

इस प्रतिकूल वातावरण के बावजूद, ब्राजील के विश्वविद्यालय जीवित रहे। वे महामारी से उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने में सक्षम थे, उन्हें दूरस्थ शिक्षा के लिए उपलब्ध उपकरणों का उपयोग करके शिक्षण और सीखने को फिर से शुरू करने के लिए संसाधन मिले, और उन्होंने गरीब पृष्ठभूमि के छात्रों को इंटरनेट तक पहुंचने में सक्षम बनाने वाले कार्यक्रम शुरू किए। विभिन्न क्षेत्रों के अनुसंधान और स्नातक कार्यक्रमों ने महामारी के बहुल परिणामों को समझने पर ध्यान केंद्रित करते हुए खुद को फिर से स्थापित किया, जिसने ब्राजील के समाज की नजर में विश्वविद्यालय की उपस्थिति को सही ठहराया।

विश्वविद्यालय प्रतिरोध विभिन्न लेकिन पूरक स्रोतों से आता है। पहला ब्राजील के समाज में, विशेष रूप से मीडिया और न्यायपालिका में मजबूत सहयोगियों की उपस्थिति है। यह 1970 और 1980 के दशक के बीच देश के लोकतंत्रीकरण की लड़ाई में सार्वजनिक विश्वविद्यालयों द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका की विरासत है। दूसरा विज्ञान और स्नातक शिक्षा नीतियों में सहकर्मी–समीक्षा प्रक्रियाओं द्वारा निभाई गई भूमिका है। उत्पीड़न के खतरों का सामना करते हुए, सभी क्षेत्रों के शिक्षाविदों ने अकादमिक स्वतंत्रता के समर्थन में लामबंदी की। अंत में, ऐसे कॉलेजियल नियम हैं जो अभी भी ब्राजील में विश्वविद्यालय शासन का आधार हैं। कॉलेजियलिटी का मतलब है कि विश्वविद्यालय के निर्णय लेने के उदाहरण प्रसारित हैं, जिसमें कई अर्ध–स्वायत्त निर्णय केंद्र अतिव्यापी हैं। विभाग, संकाय, प्रयोगशालाएं, संस्थान, कार्यक्रम सभी आंतरिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में कुछ हद तक स्वायत्तता साझा करते हैं। जब सरकार के कुप्रबंधन के कारण केंद्रीय प्रशासन का पतन हुआ, तो इन केंद्रों ने कदम बढ़ाए और तदर्थ संबंध बनाकर विश्वविद्यालय को परेशानी से बाहर निकाला। इस प्रकार, ब्राजील के अनुभव से पता चलता है कि नव–लोकलुभावन सत्तावादी सरकारों द्वारा बनाए गए तूफानों के सामने विश्वविद्यालय के लचीलेपन को बनाए रखने के लिए पुराने शासन मॉडल अभी भी कैसे प्रासंगिक हैं। ■

सभी पत्राचार एलिजाबेथ बाल्बाचेवस्की को <balbasky@usp.br> पर प्रेषित करें।

> उबंटू विश्वविद्यालय की संभावना पर

युसेफ वाघिड, स्टेलनबोश विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका द्वारा

इस आलेख में, मैं अफ्रीकी सदाचार *उबुन्टु*, शाब्दिक रूप से मानवीय गरिमा और अन्योन्याश्रयता के आलोक में, एक विश्वविद्यालय के विचार पर पुनर्विचार के लिए तर्क देता हूं। विश्व स्तर पर, विश्वविद्यालय विभिन्न उद्देश्यों के लिए ज्ञान (पुनः) उत्पादन से संबंधित संस्थानों के रूप में विकसित हुए हैं जो अर्थव्यवस्था और बाजारों के हितों की सेवा करने के लिए व्यक्तिगत स्वायत्तता से लेकर सार्वजनिक जवाबदेही तक विस्तृत हैं। हालांकि, मेरी प्राथमिक चिंता यह है कि विश्वविद्यालयों ने हमेशा सार्वजनिक रूप से जवाबदेह या जिम्मेदार होने के लक्ष्यों का जवाब नहीं दिया है।

> सार्वजनिक विश्वविद्यालय खतरे में

इन दावों के बावजूद कि (दक्षिण) अफ्रीका में सार्वजनिक विश्वविद्यालय महत्वपूर्ण रूप से बदल गए हैं, बढ़ती ट्यूशन लागत के खिलाफ चल रहे छात्र विरोधय संस्थागत भ्रष्टाचार और संसाधनों का कुप्रबंधनय लैंगिक असमानता और बहिष्करणय यौन उत्पीड़नय अंकों के लिए रिश्वत, अकादमिक साहित्यिक चोरी और अनुशासनहीनता कदाचारय और अत्यधिक छात्र शराब पीने और अपराध जैसे मामलों से पर्याप्त और साहसपूर्वक निपटने की इसकी अनिच्छा विश्वविद्यालय शिक्षा के संकट को बढ़ा देते हैं। फिर भी, विश्वविद्यालय जीवन का अब तक का सबसे विचलित करने वाला पहलू उच्च शिक्षण और स्वयं सीखने की शैक्षणिक गतिविधि से संबंधित है। ऐसा प्रतीत होता है कि अध्यापन और अधिगम महत्वपूर्ण शैक्षणिक अभ्यासों के लिए सीमित अवसर के साथ, ज्ञान हस्तांतरण और अधिग्रहण से अत्यधिक चिंतित हैं। कोरोनोवायरस महामारी के दौरान आपातकालीन ऑनलाइन दूरस्थ शिक्षण की शुरुआत के साथ, ऐसा लग रहा था कि ऑनलाइन दूरस्थ और मिश्रित शिक्षा के लिए विवेचानत्मक शिक्षा को फिर से त्याग दिया गया था जैसे कि उच्च शिक्षाशास्त्र के ये दृष्टिकोण अपने आप में विश्वविद्यालय शिक्षा में विश्वास पैदा कर सकते हैं। इस प्रकार, विश्वविद्यालय की सार्वजनिक जिम्मेदारी खतरे में प्रतीत होती है और, बहुत अधिक चिंतित न होकर, संस्थान ढहने के कगार पर लगते हैं ।

जिस विकट स्थिति में (दक्षिण) अफ्रीका में विश्वविद्यालय खुद को पाते हैं, उसके जवाब में, मैं प्रस्ताव देता हूँ कि विश्वविद्यालय के विचार को *उबुन्टु* के अफ्रीकी सदाचार के आलोक में पुनर्विचार किया जाना चाहिए। मेरे विचार में, *उबुन्टु* एक दार्शनिक और राजनीतिक–नैतिक अवधारणा दोनों है, जो सबसे पहले, संकट के समय में विश्वविद्यालय के बारे में अलग तरह से सोचने में योगदान दे सकता हैय और दूसरा, ऐसी प्रथाओं को स्थापित करना जो समुदाय के एक विचार के साथ संस्थागत और परिवर्तनकारी उद्देश्यों को संरेखित कर सकें जिसमें शिक्षाविद और छात्र व्यक्तिगत स्वतंत्रता, सहयोगात्मक जुड़ाव और सह–संबंधित संबंधों को विकसित कर सकें। एक *उबुन्टु* फ्रेमिंग एक ऐसे उच्च शिक्षण संस्थान को जन्म दे सकता है जो संस्थान स्वयं की परिवर्तनकारी क्षमता पर पुनर्विचार करता है।

उबुन्टु की विशिष्टता मानव क्रिया के आंतरिक संबंध और अन्य मनुष्यों, संदर्भों और गैर–मानव प्रकार की संस्थाओं, जैसे कंप्यूटर और अन्य तकनीकी उपकरणों के साथ संबंधों के बाहरी अधिनियमन में निहित है। ''मैं इसलिए हूं क्योंकि हम हैं,'' द्वारा रेखांकित किया गया, *उबुन्टु* का तात्पर्य अन्य चीजों सहित स्वयं और दूसरों के साथ अंतर और अंतरा–संबंध हैं, ताकि *उबुन्टु* द्वारा निहित कार्य दूसरों के *साथ* काम करने का मामला हो और हमेशा किसी *के* और दूसरों *के लिए* नहीं । मेरा तर्क है कि एक *उबुन्टु* –प्रेरित विश्वविद्यालय संस्थान को सार्वजनिक रूप से अपने कार्यों के लिए जिम्मेदार होते हुए भी स्वायत्त रहने का अवसर प्रदान कर सकता है। मुख्य रूप से, ऐसा विश्वविद्यालय न केवल संस्थान के परिवर्तन के एजेंडे को मजबूत करेगा, बल्कि सबसे पहले, इसे सार्वजनिक हित के मामलों में विस्तारित करेगा। यहां मैं उन मुद्दों का उल्लेख करता हूं जिनमें ज्ञान और तर्क के दावों और जांच की रेखाएं जिनके बारे में पहले नहीं सोचा गया था, के संबंध में इसका परिवर्तन शामिल है। दूसरे, ऐसा विश्वविद्यालय व्यापक समुदाय के साथ अपने जुड़ाव को सेवा प्रावधान या प्रभाव वाली गतिविधि के रूप में नहीं, बल्कि संस्था और व्यापक जनता दोनों के हित में वास्तविक सहयोग के कार्य के रूप में मानेगा। तीसरा, विश्वविद्यालय स्थानीय और सांसारिक चिंताओं के बारे में और मानव गरिमा, सामाजिक और पुनर्स्थापनात्मक न्याय और शांतिपूर्ण मानव सह–अस्तित्व को बढ़ाने वाले मामलों के बारे में नैतिक ध्यान पैदा करने का दावा करेगा।

> वि–औपनिवेशीकरण और एक *उबुन्टु* विश्वविद्यालय

उच्च शिक्षा के रूपांतरण का अब तक का सबसे महत्वपूर्ण पहलू, जिस पर सार्वजनिक विश्वविद्यालय को और अधिक तत्काल विचार करना चाहिए, वह है वि–औपनिवेशीकरण की धारणा। जब हम उच्च शिक्षा के वि–औपनिवेशीकरण के बारे में बात करते हैं, तो हम प्रतिरोध की प्रथाओं का उल्लेख करते हैं जो उच्च शिक्षा की कार्यप्रणालियों को सूचित करने वाली शक्ति–साझाकरण की विषम समझ को बाधित करने के लिए पेश की जाती हैं। वि–औपनिवेशीकरण के साथ, वि–उपनिवेशवाद की धारणा को सांस्कृतिक मूल्यों, आर्थिक आकांक्षाओं और (पूर्व में) उपनिवेशित समुदायों के ज्ञान हितों को बहाल करने के रूप में माना जा सकता है। इस निहितार्थ से, सार्वजनिक विश्वविद्यालय का वि–औपनिवेशीकरण साम्राज्यवादी विरासत का विरोध और कमजोर करने और हाशिए के समुदायों की संस्कृतियों और ज्ञान हितों के अवमूल्यन का एक प्रयास है। इस तरह, उच्च शिक्षा के वि–औपनिवेशीकरण को बहिष्कृत समुदायों की अंतर्निहित मूल्य प्रणालियों की पुनः अभिव्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है। यह वह जगह है जहां वि–औपनिवेशीकरण प्रोजेक्ट उबंटू से जुड़ता है, इस अर्थ में कि परवर्ती भी इसी तरह जोर देकर कहता है कि दूसरे के मूल्यों को उनकी अन्यता में शामिल किया जाना चाहिए। इसलिए, उच्च शिक्षा का वि–औपनिवेशीकरण *उबुन्टु* के नैतिक मूल्यों के अनुसार इसे फिर से आकार देने का पर्याय है।

>>

''एक उबुन्टु फ्रेमिंग एक ऐसे उच्च शिक्षण संस्थान को जन्म दे सकता है जो संस्थान स्वयं की परिवर्तनकारी क्षमता पर पुनर्विचार करता है।''

प्रश्न जिसे वैध रूप से पूछा जा सकता हैः क्या एक *उबुन्टु* विश्वविद्यालय एक उद्यमी विश्वविद्यालय, विचारशील विश्वविद्यालय और पारिस्थितिक विश्वविद्यालय से भिन्न है? यद्यपि ये भिन्न समझ स्वयं और जिन समाजों में ये प्रकट होते हैं के सन्दर्भ में विश्विद्यालयों की ज्ञानमीमांसीय और नैतिक अनिवार्यताओं को स्पष्ट करती हैं, मेरा तर्क है कि *उबुन्टु* विश्विद्यालय के माध्यम से ही भावनात्मकता गरिमा और मानवता के स्वरूपों के द्वारा एक विश्विद्यालय की स्वायत्तता, जिम्मेदारी और विवेचना की क्षमता को बढ़ाएंगी।

उबुन्टु विश्वविद्यालय जैसा है उसे कौन ऐसा बनता है ? सबसे पहले, यह सूक्ति ''मैं हूं इसलिए हम हैं,'' विशेष रूप से वाक्यांश, ''मैं हूं,'' का उपयोग स्वायत्त कार्रवाई के लिए विश्वविद्यालय के दावे को बढ़ाता है। जो बात किसी विश्वविद्यालय को सबसे पहले एक विश्वविद्यालय बनाती है, वह है स्वायत्त व्यक्तिगत कार्रवाई को विकसित करने और हासिल करने के प्रति उसकी निष्ठा– एक ऐसा विचार जो ''मैं हूं'' वाक्यांश के साथ प्रतिध्वनित होता है।

दूसरा, *उबुन्टु* में ''हम हैं'' वाक्यांश सामूहिक मानव क्रिया को आगे बढ़ाने के लिए प्रासंगिक है। हालाँकि, *उबुन्टु* द्वारा अनुमत यह सामूहिकता जानबूझकर जुड़ाव पर आधारित है। मुद्दा यह है कि, एक *उबुन्टु* विश्वविद्यालय अपने घटक सदस्यों– इसके बौद्धिक प्रश्नकर्ता –की ओर से जानबूझकर कार्रवाई को आगे बढ़ाता है। इस प्रकार का विचार–विमर्श शैक्षिक और राजनीतिक दोनों है। उच्च शिक्षा के एक कृत्य के रूप में जानबूझकर जुड़ाव स्वायत्त प्रश्नकर्ताओं के ऊपर आधारित है जो एक विश्वविद्यालय के भीतर और बाहर निर्णय के दावों का लाभ उठा सकते हैं। उच्च शिक्षा की स्थिति यह है कि लोग खुलेपन, सजगता और जुड़ाव की भावना से एक साथ काम करते हैं और कार्यवाही करते हैं जिससे वे मिलकर अपने आंतरिक और बाहरी मूल्य दोनों का एक साथ पता लगाते हैं। मुद्दा यह है कि, *उबुन्टु* को केवल आंतरिक उद्देश्यों के लिए उच्च शिक्षा करने तक ही सीमित नहीं रखा जा सकता है, क्योंकि ऐसा करना सार्वजनिक, सामाजिक और वैश्विक के प्रति विश्वविद्यालय की जिम्मेदारी को नकार देगा।

तीसरा, एक *उबुन्टु* विश्वविद्यालय को आगे की ओर देखना चाहिए और स्थानीय और वैश्विक अनिवार्यताओं पर विचार करना चाहिए। अफ्रीकी विश्वविद्यालय की ऐसी समझ के लिए बहस करना समझ में आता है क्योंकि एक *उबुन्टु* – प्रेरित विश्वविद्यालय बनने की प्रक्रिया में रहता है। ऐसे विश्वविद्यालय को न केवल स्थानीय और सामाजिक सरोकारों की विद्वता की चिंता करनी चाहिए, बल्कि सह–अस्तित्व की तलाश, आवाजों की बहुलता की पहचान, और शांतिपूर्ण सहयोग और उन्नति के लिए अन्य सभी पर सह–निर्भरता की खोज में वैश्विक समस्याओं को भी संबोधित करना चाहिए। यह एक ऐसा *उबुन्टु* विश्वविद्यालय है जो वैश्विक चिंताओं और डायस्टोपिया को संबोधित करने के लिए कुछ आगे जायेगा।

अंत में, ''मैं हूं इसलिए हम हैं'' से ''मैं हूं इसलिए हम हैं और बन सकते हैं। इसका तात्पर्य है कि *उबुन्टु* विश्विद्यालय को हमेशा एक सम्भावी के रूप में समझाना चाहिए, जहाँ संभावनाओं के निर्णायक समूह के बजाय ओपन–एंडेडनेस हो। ■

सभी पत्राचार युसेफ वाघिड को <yw@sun.ac.za> पर प्रेषित करें।

> वास्तविक यूटोपिया की आवश्यकता

माइकल बुरावॉय, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, यूएसए द्वारा

एरिक ओलिन राइट मार्क्सवाद के पुनर्निर्माण में अग्रणी थे। विरोधाभासी वर्ग स्थानों पर उनका कार्य – मार्क्स के मौलिक वर्गों के बीच मध्यस्थता संबंध – एक वैश्विक परियोजना में बदल गया और इसने दुनिया भर में वर्ग विश्लेषण को प्रेरित किया। वे अंतिम दिनों तक तार्किक बुनियाद और वर्ग के अनुभवजन्य संबंधों के साथ जूझे। उनकी सबसे महत्वपूर्ण पुस्तकों में क्लासेस (1985), क्लास काउंट्स (1997) और उनके अंतिम प्रतिबिंब अंडरस्टैंडिंग क्लास (2015) हैं। अधिकांश व्यक्ति इस तरह की एक प्रमुख वैश्विक परियोजना से संतुष्ट होंगे, लेकिन 1990 के दशक की शुरुआत में राइट ने एक दूसरी वैश्विक परियोजना रियल यूटोपियास प्रोजेक्ट की शुरुआत की। यह सोवियत संघ और उसके उपराष्ट्र में वास्तव में मौजूदा समाजवाद के पतन का, चीन का राज्य पूंजीवाद के संक्रमण का और साथ ही नवउदारवाद के साथ समेकन का समय था।

इन ऐतिहासिक घटनाओं के साथ कई विद्वानों ने मार्क्सवाद को मृत घोषित कर दिया। यद्यपि, ऐसे समय में राइट ने विपरीत दृष्टिकोण अपनाया। सोवियत रूस और चीन के पार्टी–राज्यों के संबंधों से मुक्त हों कर, उन्होंने इसे मार्क्सवाद को वास्तविक समाजवादी भविष्य की जमीनी दृष्टि – वह दृष्टि जो पूंजीवाद के अन्तर्सम्बन्धों में बढ़ती मौजूदा संस्थाओं में स्थापित थी या श्रम पर पूंजीवाद के बढ़ती निर्भरता से उभार रही थी, से पुनर्जीवित करने के एक अवसर के रूप में देखा। उन्होंने अपने मैग्नम ओपस एनविजनिंग रियल यूटोपियास (2010) में वास्तविक यूटोपिया के लिए एक विस्तृत सैद्धांतिक वास्तुकला का निर्माण किया। अपने विचारों को 21वीं सदी के दूसरे दशक में एक घोषणापत्र / मेनिफेस्टो जिसका शीर्षक 'हाऊ तो बी एन एंटी– कैपिटलिस्ट इन द ट्वेन्टी फर्स्ट सेंचुरी'' (2019) था में प्रकशित किया। इस घोषणपत्र का प्रकाशन उनके मरणोपरांत 13 भाषाओं में हुआ था।

राइट केवल वास्तविक यूटोपिया के सिद्धांतकार नहीं थे। वे वास्तविक यूटोपिया के अभ्यासी भी थे। पूंजीवाद की चुनौतियों को तलाशने के लिए दुनियां में, जहाँ भी वे उभरती थीं, वे जाते थे। वे वहां उन सक्रिय कार्यकर्त्ताओं के साथ बातचीत करते थे जो अपने वादे को साकार करने का प्रयास कर रहे थे। वे केवल शिक्षाविदों के लिए ही नहीं बल्कि सामाजिक न्याय के लिए एक व्यापक सार्वजनिक संघर्ष करने वालों के लिए भी प्रेरणा थे। इन वास्तविक यूटोपिया के नायकों के साथ संवाद के जरिए राइट अपने अंतर्निहित सिद्धांतों, उनके आंतरिक अंतर्विरोधों और उनके अस्तित्व व विस्तार की स्थितियों को दूर करने में लगे रहे। वे विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालय में न केवल अपने विभाग में सेमिनार आयोजित करते रहे बल्कि वास्तविक यूटोपिया के लिए सेमिनारों की संभावनाओं और सीमाओं पर चर्चा करने के साथ–साथ दुनिया के सबसे दूर–दराज के कोनों में भी गए। सेमिनार में उनके विचार वर्सो द्वारा प्रकाशित पुस्तक श्रंखला में प्रकाशित हुए जो निरन्तर इस दिशा में मार्गदर्शन करते रहेगें।

अपने द्वारा किए गए तमात कार्यों की प्रगति के साथ एरिक राइट ने हमें एक पूंजीवाद विरोधी परियोजना के रूप में वास्तविक यूटोपिया में एकता लाने के अधूरे कार्य के साथ छोड़ दिया है। ''*एनविजनिंग रियल यूटोपियास*'' में राइट ने पूंजीवाद की विनाशकारी विशेषताओं को सूचीबद्ध करते हैं जिनका वास्तविक यूटोपिया को भंग करने का इरादा था और यह दावा करते हैं कि उनकी जड़ें नागरिक समाज में पाई जाती हैं। उन्होंने समाज को समाजवाद में बहाल करने की मांग की। *हाऊ टू बी एंटी– कॅपिटलिस्ट इन ट्वेन्टी फर्स्ट सेंचुरी* में वे वास्तविक यूटोपिया को उन मूल्यों पर आधारित करते हैं जिन्हें वे मानते हैं – समानता, लोकतंत्र, सामाजिक न्याय, और एकजुटता – वे मूल्य जिन्हें वैध पूंजीवाद के लिए तैनात किया गया है लेकिन उन्हें पूंजीवाद के तहत केवल आंशिक रूप से महसूस किया जा सकता है। फिर भी, वास्तविक यूटोपिया के पीछे प्रेरक शक्ति के बारे में यह अस्पष्टता है कि वे किस अर्थ में पूंजीवाद विरोधी हैं। इस छोटे से लेख के माध्यम से मैं यह सुझाव दूंगा कि इन प्रश्नों का एक उत्तर कार्ल पोलानयी की *द ग्रेट ट्रांसफॉर्मेशन* (1944) में खोजा जा सकता है। जैसा कि मैं तर्क देता हूँ कि पोलानयी के विचार स्वयं सीमित हैं, उन्हें पूंजीवाद की गतिशीलता पर मार्क्सवादी सिद्धांत की खुराक देने की जरूरत है। यह चक्र तब पूरा हो जाता है जब हम यह मानते हैं कि मार्क्सवादी सिद्धांत को काल्पनिक से वास्तविक यूटोपिया में राइट के मोड़ की आवश्यकता है।

> वास्तविक यूटोपिया की एकता की खोज

राइट की *एनविजनिंग रियल यूटोपिया* की वास्तुकला बेहद सरल है: पूंजीवाद की आलोचना (निदान) हैय पूंजीवाद के विकल्प (समाधान) है और परिवर्तन समस्या का (उपचार) है। राइट ने पूंजीवाद की 11 आलोचनाएं की हैं। संक्षेप में, पूंजीवाद अनावश्यक मानवीय पीड़ा को कायम रखता है; मानव उत्कर्ष के लिए परिस्थितियों को अवरुद्ध करता है; व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सीमित करता है; समतावादी सिद्धांतों का उल्लंघन करता है; महत्वपूर्ण पहलुओं में अक्षम है; उपभोक्तावाद के प्रति पूर्वाग्रह है; पर्यावरण को नष्ट कर देता है; व्यापक रूप से धारित मूल्यों के लिए खतरा है; सैन्यवाद और साम्राज्यवाद को बढ़ावा देता है; समुदाय को नष्ट करता है; और लोकतंत्र को सीमित करता है। यह सब अभ्यारोपण है। सभी तत्व एक दूसरे से निकटता से जुड़े हुए हैं लेकिन वे कोई एकीकृत थीम या मूल समालोचना प्रदान नहीं करते हैं।

यदि एकता है तो वह पूंजीवाद की आलोचना में नहीं है बल्कि समाधान में है अर्थात् अर्थव्यवस्था और राज्य की तुलना में नागरिक समाज का सशक्तिकरण, समाजवाद में समाज को बहाल करना।

>>

''मानवता को पूंजीवाद से बचाने के लिए सामूहिक कर्त्ता कौन बनेगा? यही वह समस्या है जिसका समाधान मार्क्स, पोलानयी और राइट ने हम पर छोड़ दिया है।''

समाजवाद के इतिहास में दृढ़ता से जमे काल्पनिक यूटोपिया के विचार का त्याग करते हुए, उन्होंने ''वास्तविक यूटोपिया'' की खोज करने का प्रयास किया: वास्तव में मौजूदा संरचनाएं – एक पूंजीवादी विरोधी चरित्र की संस्थाएं, संगठन जो पूंजीवाद की दरारों में या पूंजीवाद के विकास के सहजीवन में विकसित होते हैं।

उनके अपने कुछ पसंदीदा वास्तविक यूटोपिया: मूल आय अनुदान, सहकारी समितियां, विकिपीडिया, सहभागी बजट, सामाजिक अर्थव्यवस्था थे। उनकी परियोजना में पेशेवर के साथ काम करना, वास्तविक यूटोपिया को अमूर्त रूप से तैयार करना, और इसके अस्तित्व और प्रसार की स्थितियों के साथ–साथ इसके आंतरिक अंतर्विरोधों की जांच करना था। असली यूटोपिया पूंजीवादी विरोधी थे क्योंकि उन्होंने पूंजीवाद की एक या अधिक विनाशकारी विशेषताओं को चुनौती दी थी। राइट ने संक्रमण की रणनीतियों का एक सेट– सहजीवी, अंतरालीय, निकास और फूटन–तैयार किया । लेकिन इस तरह के परिवर्तन के एजेंटों के बारे में वे काफी मितभाषी था। यह भी कम महत्वपूर्ण नहीं था कि वे इन वास्तविक यूटोपिया को पूंजीवाद की गतिशीलता के सिद्धांत से जोड़ने में विफल रहे, एक ऐसा सिद्धांत जो उनकी उपस्थिति के साथ–साथ पूंजीवाद के लिए उनकी चुनौती की व्याख्या कर सकता है। मैं राइट की परियोजना को बचाने के लिए अब कार्ल पोलानयी और मार्क्स की ओर मुड़ता हूं।

> राइट से पोलानयी तक

पोलानयी भी वास्तविक यूटोपिया के प्रति आसक्त थे– रॉबर्ट ओवेन की सांप्रदायिकता, सहकारी समितियों का विकास और गिल्ड समाजवाद के भ्रूण। वे श्रम के अनियमित वस्तुकरण का विरोध करते हुए सभी उन्नीसवीं सदी के सामाजिक आंदोलनों में सन्निहित थे। जैसा कि हम देखेंगे, राइट के वास्तविक यूटोपिया को वस्तुकरण के प्रति–आंदोलन के रूप में भी देखा जा सकता है। जो बात कम स्पष्ट है वह है पूंजीवाद के साथ इनका संबंध।

पोलानयी ने फासीवाद, स्टालिनवाद, सामाजिक लोकतंत्र को अनियंत्रित बाजारीकरण के लिए राज्य के नेतृत्व वाली प्रतिक्रियाओं के रूप में माना। लेकिन बाजार कट्टरवाद और पूंजीवाद के आवधिक दावों के बीच क्या तार्किक संबंध है के उत्तर के लिए एक दिलचस्प सुराग प्रसिद्ध पोलानयी विरोधाभास में ही निहित है– 1970 के दशक में शुरू होने वाले बाजारीकरण के तीसरे उछाल, जिसे हम नवउदारवाद कहते हैं, का अनुमान लगाने में उनकी विफलता। मैं इसे तीसरी लहर का बाजारीकरण मानता हूं क्योंकि पोलानयी स्वयं के ऐतिहासिक वर्णन में बाजारीकरण की एक नहीं बल्कि दो लहरें बतायी हैं। एक उन्नीसवीं शताब्दी में जो बड़े पैमाने पर श्रम के वस्तुकरण की प्रतिक्रियाओं पर केंद्रित थी और दूसरी बीसवीं शताब्दी में धन के वस्तुकरण द्वारा संचालित थी। पहली ने सामाजिक आंदोलनों की प्रतिक्रिया को जन्म दिया तो दूसरी ने राज्य की प्रतिक्रियाओं– कुछ प्रगतिशील और कुछ रोगात्मक– को सिद्ध किया। पोलानयी फासीवादी प्रतिक्रिया से विशेष रूप से सावधान थे।

पोलानयी ने सोचा कि मानवता फिर कभी बाजारु कट्टरवाद के साथ प्रयोग करने की हिम्मत नहीं करेगी। मानवता कभी भी अनियमित बाजारों की विनाशकारीता का जोखिम नहीं उठाएगी। वह कभी भी जिसे वे "काल्पनिक वस्तु" कहते हैं – श्रम, धन और प्रकृति– वे वस्तु जिनका उपयोग मूल्य अनियमित विनिमय के अधीन होने पर नष्ट हो जाता है, का निर्माण नहीं करेगा। वे गलत थे। 1970 के दशक के प्रारम्भ में बाजारीकरण का एक और दौर शुरू हुआ। वे इस संभावना के प्रति अंधे क्यों थे? मेरा मानना है कि इसका उत्तर यह है कि वे बाजार के कट्टरवाद की आदर्शवादी धारणा को मानते थे– एक खतरनाक यूटोपिया जो गुमराह उदारवादी अर्थशास्त्रियों के दिमाग से उपजा था।

पोलानयी का आदर्शवाद पूंजीवाद के मार्क्सवादी विश्लेषण के प्रति उनकी शत्रुता –पूंजीवाद के विकास के नियमों के प्रति शत्रुता और परिणामी वर्ग संघर्ष– में भी प्रकट होती है। पोलानयी के विचार में मार्क्स ने शोषण द्वारा संचालित वर्ग संघर्ष की संभावना को अधिक आंका। वास्तव में, मार्क्स के वर्णन में एक विरोधाभास है: जब शोषण स्पष्ट नहीं है, बल्कि रहस्यमय है और जब श्रमिकों की पूंजीवाद के अधिकतम विस्तार में भौतिक रुचि है तो वर्ग संघर्ष कैसे हो सकता है?

इन मार्क्सवादी विरोधाभासों के साथ संघर्ष करने के बजाय, पोलानयी यह विचार रखते हैं कि पूंजीवाद के तहत अलगाव को उत्पादन के लेंस के बजाय वस्तुकरण के लेंस के माध्यम से बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। जहाँ मार्क्स के लिए वस्तुकरण उत्पादन में शोषण को रहस्यमय बनाने का काम करता है, पोलानयी के लिए वस्तुकरण की विनाशकारिता, विशेष रूप से "काल्पनिक वस्तुओं" की बेदखली और अप्रसन्नता पैदा करती है। लेकिन मार्क्सवादी गतिकी को त्यागते हुए और शोषण की कीमत पर वस्तुकरण पर, उत्पादन की कीमत पर बाजार पर ध्यान केंद्रित करने में, पोलानयी पूंजीवादी गतिकी के सिद्धांत, (अ) संचय के सिद्धांत के बिना रह जाते हैं। अतः, वे बाजारीकरण की जड़ों को स्वयं पूंजीवाद के विरोधाभासी विस्तार में नहीं देख पाते हैं। इसके लिए हमें मार्क्स की ओर लौटना ही होगा।

> पोलानयी से वापस मार्क्स की ओर

वस्तुकरण जो कमजोर उदारवादी अर्थशास्त्रियों द्वारा बनाया गया है, पूंजीवाद की एक आकस्मिक विशेषता नहीं है। बल्कि यह वह तरीका है जिससे पूंजीवाद अतिउत्पादन और लाभप्रदाता के अपने प्रणालीगत संकटों को हल करने का प्रबंधन करता है। नए बाजारों की खोज से अति उत्पादन की भरपाई हो जाती है और यह न केवल पूंजीवाद की शुरुआत में है, बल्कि पूरे पूंजीवाद में जारी है और हम कह सकते हैं कि इसमें हिंसा की एक अच्छी खुराक शामिल है। हम साम्राज्यवाद को उपनिवेशों में सस्ते श्रम द्वारा संभव कच्चे माल की निकासी के रूप में सोच सकते हैं, जिससे नए उपभोक्ता बाजार बनते हैं। दूसरे शब्दों में, बाजारीकरण की लहरों– वस्तुकरण का विस्तार– के माध्यम से स्पष्ट है कि पूंजीवाद अपने द्वारा उत्पन्न संकट पर विजय प्राप्त करता है। ऐसा होने पर, वस्तुकरण का विरोध करने वाले आंदोलन पूंजीवाद के लिए एक चुनौती हो सकते हैं। वस्तुकरण–विरोधी पूंजीवाद विरोधी हो सकता है। इस प्रकार, यदि हम वस्तुकरण की आवर्तक लहरों के माध्यम से पूंजीवाद की

>>

विनाशकारिता का अनुभव करते हैं, तो वस्तुकरण एक पूंजीवाद विरोधी राजनीति के लिए जमीन तैयार कर सकता है।

मार्क्स आवश्यक रूप से हमें पूंजीवाद की गतिशीलता का एक सिद्धांत प्रदान करते हैं, वास्तव में एक ऐसा सिद्धांत है जो गहराते वस्तुकरण को पूंजीवाद के अस्तित्व के लिए जरूरी मानता है। हालाँकि, मार्क्स पूंजीवाद के प्रतिरोध को केवल उत्पादन में संघर्ष से उत्पन्न होने के रूप में देखता है। वे हर चीज के वस्तुकरण, स्वयं बाजार को सामूहिक प्रतिरोध का एक अधिक शक्तिशाली स्त्रोत के रूप में नहीं देखते हैं। यदि मार्क्स हमें पूंजीवाद के तहत बाजारीकरण की लहरों की आवश्यकता का एक भौतिकवादी सिद्धांत प्रदान करते हैं, तो पोलानयी हमें बाजारीकरण से निकलने वाले पूंजीवाद के प्रतिरोध का सिद्धांत प्रदान करते हैं।

पोलानयी और मार्क्स के सहारे हम राइट पर लौट सकते हैं। हम उनके वास्तविक यूटोपिया को वस्तुकरण–विरोधी परियोजनाओं के रूप में देख सकते हैं। बुनियादी आय अनुदान श्रम के वस्तुकरण को चुनौती देता है। सहभागी बजट और सार्वजनिक बैंकिंग चुनौती पूंजी के वस्तुकरण को चुनौती देता है। विकिपीडिया ज्ञान के वस्तुकरण के खिलाफ है, ग्रामीण सहकारी समितियाँ भूमि के साथ–साथ श्रम के वस्तुकरण की धमकी देती हैं। इसलिए, मैं सुझाव दे रहा हूं कि एंटी–कमोडिफिकेशन उनके असमान वास्तविक यूटोपिया के लिए एक एकीकृत ढांचा है। वे उस बात का हिस्सा बन जाते हैं जिसे पोलानी प्रति–आंदोलन कहते हैं।

> एजेंसी का प्रश्न

साम्यवाद को संस्थागत सामग्री से भरने से इनकार करके मार्क्स ने मार्क्सवाद का गहरा नुकसान पहुंचाया हैय जिससे किसी भी शासन या किसी आंदोलन को खुद को "कम्युनिस्ट" कहने की अनुमति मिली है। अपने वास्तविक यूटोपिया के साथ राइट एक महत्वपूर्ण सुधारात्मक प्रस्ताव को प्रस्तुत करते हैं लेकिन उन्हें एक एकीकृत रूब्रिक की आवश्यकता है। वस्तुकरण की पोलानयी की आलोचना वह एकता प्रदान करती है लेकिन वे पूंजीवाद की गतिशीलता और बाजारीकरण की क्रमिक लहरों के बीच संबंध को देखने में विफल रहते हैं। भले ही मार्क्स वस्तुकरण की विनाशकारिता को कम करके आंकते हैं, वे संचय को बाजारीकरण से जोड़कर अंतिम चिपकाव प्रदान करते हैं लेकिन यह सैद्धांतिक संश्लेषण और भी समस्याएं खड़ी करता है।

सबसे पहले, जैसा कि पोलानयी बताते हैं कि वस्तुकरण–विरोध, तथाकथित प्रति–आंदोलन सत्तावाद और फासीवाद को बढावा दे सकता हैं जिससे राइट के यूटोपिया के लोकतांत्रिक चरित्र का त्याग हो सकता है। बाजारीकरण के लिए एक सत्तावादी समाधान के बजाय एक लोकतांत्रिक समाधानकी गारंटी कौन दे सकता है?

दूसरा, पोलानयी ने यह मान लिया था कि जब वस्तुकरण से समाज को खतरा होगा तो समाज वापस प्रतिक्रिया करेगा। अब हम इसे मान नहीं सकते हैं। दूसरे शब्दों में, हमें केवल प्रति–आंदोलन के स्वरुप –सत्तावादी या लोकतांत्रिक– के बारे में चिंता करने की जरूरत नहीं है। बल्कि क्या एक प्रति–आंदोलन से संभव है।

तीसरा, जब एंटी–कमोडिफिकेशन डी–कमोडिफिकेशन का एक रूप बन जाता है तो यह एक प्रभावी अवशोषण रणनीति हो सकती है। इस प्रकार एक कल्याणकारी राज्य के निर्माण से पूंजीवाद को सहमति मिल सकती है न कि उसके अतिक्रमण को। किन परिस्थितियों में एंटी–कमोडिफिकेशन पूँजीवाद–विरोधी हो जाता है?

चौथा, बाजारीकरण वस्तुकरण की तुलना में बहुत आगे जा सकता है। यह काल्पनिक वस्तुओं और उत्पादन के कारकों को बाजार से पूरी तरह से निकाल सकता है, यानि कि कचरे का उत्पादन जिसे मैं पूर्व–वस्तुकरण कहता हूँ। वस्तुकरण श्रम, भूमि, धन, ज्ञान, पर्यावरण के विनाश को अग्रेषित कर सकता है। यह बात पिछले पचास वर्षों के तीसरे–लहर के विपणन के बारे में विशेष रूप से सत्य है।

पांचवीं, आज की चुनौती वैश्विक स्तर पर प्रति–आंदोलनों को बढ़ाना है। वस्तुकरण के वैश्विक ढांचे से निपटने के बिना काउंटर–आंदोलन स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर अभी भी अटके हैं। जब हम तीसरे–लहर के बाजारीकरण के बीच में हैं तब भी हम दूसरी–लहर के बाजारीकरण की प्रतिक्रियाओं के लिए प्रतिबद्ध होते हैं।

ये सभी सवाल एजेंसी के तीखे सवालों को जन्म देते हैं। मानवता को पूंजीवाद से बचाने के लिए सामूहिक कर्त्ता कौन बनेगा? यही वह समस्या है जिसका समाधान मार्क्स, पोलानयी और राइट ने हम पर छोड़ दिया है। ■

सभी पत्राचार माइकल बुरावॉय को <burawoy@berkeley.edu> पर प्रेषित करें।

> तुर्की समाजशास्त्र:
चुनौतियां और संभावनाएं

एन. बेरिल ओजर टेकिन, डोगुस विश्वविद्यालय, तुर्की, और स्वास्थ्य और चिकित्सा के समाजशास्त्र (आरएन–16) पर ईएसए रिसर्च नेटवर्क के सदस्य के द्वारा

तुर्की में समाजशास्त्र का एक बहुत ही गतिशील चरित्र रहा है जिसके अपने कुछ विशिष्ट मुद्दे और चर्चा के क्षेत्र हैं। इस संबंध में, नागरिक समाज, राजनीति, नीतियां, पर्यावरणीय समस्याएं, रोजमर्रा की जिंदगी और बढ़ता उपभोक्तावाद सबसे अधिक चर्चा वाले मुद्दें हैं। दुनिया के अन्य देशों की तुलना में तुर्की की अनूठी संस्कृति, सामाजिक–आर्थिक विशेषताओं, राजनीतिक गतिशीलता तथा संस्थागत विशेषताओं द्वारा लाए गए मतभेदों के साथ महामारी ने समाजशास्त्र की परम्पराओं को भी प्रभावित किया है। महामारी के साथ, समाज के विभिन्न वर्गों द्वारा अनुभव की गई सामाजिक–आर्थिक कठिनाइयों और व्यापार करने व दैनिक जीवन के बदलते तरीकों ने वर्तमान में अध्ययन किए जा रहे मुद्दों एवं असमानताओं पर अधिक एकाग्रता के लिए यह महामारी एक दृष्टिकोण बनी है।

इस खंड के लेख तुर्की की सामाजिक वास्तविकता और समाजशास्त्र की प्रथाओं की बेहतर समझ प्रदान करते हैं।

असली टेलसेरेन ने अपने लेख में "तुर्की में लैंगिक अध्समानता और नारीवाद" शीर्षक से नारीवादी आंदोलन पर अतीत से वर्तमान तक चर्चा की है। एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य के साथ, वे वर्तमान चुनौतियों की ओर इशारा करती हैं और दिखाती हैं कि महामारी से संबंधित प्रक्रियाओं ने कैसे लैंगिक अंतराल को गहरा किया है और इसने लिंग–आधारित हिंसा और स्त्री–हत्या को बढ़ाया है। यह लेख ये भी बताता है कि इस महामारी ने महिलाओं के श्रम के वैतनिक और अवैतनिक दोनों के महत्व का खुलासा किया।

"कोविड–19 और तुर्की में मध्यम वर्ग की खपत" में डिस्ले कोयलन महामारी के बाद सफेदपोश श्रमिकों के नए कामकाजी पैटर्न पर चर्चा करते हैं। यह लेख काम के माहौल और आदतों के संदर्भ में घर से काम करने के फलस्वरूप आये परिवर्तनों, लंबे समय तक काम करने के मामले में प्रबंधकों से बढ़ती अपेक्षाएं बढ़ाना, कर्मचारियों पर बढ़ता दबाव और तनाव तथा उपभोग की आदतों में बदलाव पर केंद्रित है।

"तुर्की में पर्यावरणवाद का समाजशास्त्र" में ओजकां ओजतुर्क तुर्की में पर्यावरणीय समस्याओं के लिए सामाजिक प्रतिक्रियाओं की ऐतिहासिक प्रक्रिया पर चर्चा करते हैं। उनका सुझाव है कि तुर्की में वर्तमान प्रमुख राजनीतिक दल AKP (जस्टिस एंड डेवलपमेंट पार्टी) प्रशासन की राजनीति ने पर्यावरणीय समस्याओं को बढ़ा दिया है जिससे आबादी के व्यापक प्रभावित हुए हैं जैसा कि हाइड्रो–इलेक्ट्रिक पावर प्लांट जैसी ऊर्जा परियोजनाओं में देखा गया है। इसने पर्यावरणीय प्रवचन को व्यापक दर्शकों के साथ इंटरनेट के प्रभाव से भी, प्रतिध्वनित करने में सक्षम बनाया है।

इल्कनूर हकिसोफ्ताओग्लु ने "तुर्की के वैचारिक संघर्ष में जकड़ी महिलाएं" शीर्षक से अपने लेख में लैंगिक असमानता की स्थिति पर चर्चा की। वे खेल के क्षेत्र में लिंग और शरीर के निर्माण पर ध्यान आकर्षित करती है। अंत में, यह लेख इस बात पर जोर देता है कि जहां राजनीतिक बहसों में महिलाओं के शरीर की भूमिका बनी रहती है वहीं महिलाएं अपना भाग्य बनाने के लिए संघर्ष करती हैं।

"तुर्की में महामारी और डिजिटल आप्रवासियों में" एन. बेरिल ओजर टेकिन महामारी के दौरान बढ़ती उम्रवाद पर चर्चा करती हैं और बुजुर्गों, तथाकथित "डिजिटल अप्रवासी" के लिए इंटरनेट और स्मार्ट डिजिटल प्रौद्योगिकियों की संभावनाओं को इंगित करती हैं। वे दिखाती है कि इंटरनेट के माध्यम से तुर्की में बहिष्कार, सामाजिक अलगाव और असमानताओं को कम किया जा सकता है। साथ ही यह कुछ सुझाव भी प्रदान करता है। ■

सभी पत्राचार एन.बेरिल ओजर टेकिन को <btekin@dogus.edu.tr> पर प्रेषित करें।

> तुर्की में लिंग अ/समानता और नारीवाद

असली टेलसेरेन, दोगस विश्वविद्यालय, तुर्की एवं Laboratoire de changement social et politique Centre d'Enseignement, de Documentation et de Recherches pour les Études Féministes (LCSP-CEDREF), Université Paris-Cité, फ्रांस द्वारा

मार्च को तुर्की में एक प्रदर्शन। महामारी के संदर्भ में नारीवादी प्रतिरोध को सड़कों पर लाना और भी महत्वपूर्ण हो गया है।

सामाजिक अवधारणा के रूप में जेंडर सामाजिक भूमिकाओं के बीच सामाजिक–सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक अंतर को संदर्भित करता है जो समय और स्थान के साथ बदलता रहता है। समाजों की सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जरूरतों के अनुसार सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से निर्मित लिंग व्यवस्था सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक संरचनाओं के भीतर लैंगिक असमानताओं और पदानुक्रमों को निर्धारित करती है। इसलिए असमानताएँ न तो प्राकृतिक हैं और न ही जैविक रूप से दी गई हैं बल्कि सामाजिक रूप से निर्मित हैं।

मौलिक मानवाधिकारों में से एक के रूप में लैंगिक समानता लिंग की परवाह किये बिना सार्वजनिक, आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक संसाधनों और अवसरों तक पहुँच के समान अवसरों को संदर्भित करती है। समाजशास्त्री निलय साबुक काया इसे सामाजिक जीवन के हर आयाम में महिलाओं और पुरुषों की समान भागीदारी के रूप में परिभाषित करती हैं। उस संदर्भ में लैंगिक समानता सभी व्यक्तियों को प्रभावित करती है, चाहे सीआईएस हो या ट्रांस महिलाएं और पुरुष; वयस्क या बच्चे अथवा रोजगार प्राप्त या बेरोजगार या अन्य इसी तरह। इसलिए, यह राजनीतिक जीवन में समान प्रतिनिधित्व से अधिक है और नारीवादी आंदोलनों व एलजीबीटीआईक्यू आंदोलन से मजबूती से जुड़ा हुआ है। तुर्की की स्थिति और सामाजिक संरचना के भीतर लैंगिक समानता प्राप्त करने के लिए महिलाओं और एलजीबीटीआईक्यू व्यक्तियों के खिलाफ सभी हानिकारक प्रथाओं को समाप्त करने की जरुरत है जिसमें अन्य के मध्य शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक और यौन हिंसा, स्त्री–हत्या, वेतन अंतराल व लिंग–आधारित भेदभाव शामिल हैं। यह लेख 2021 के अंत तक तुर्की में लैंगिक अ/समानता की वर्तमान स्थितियों पर चर्चा करता है।

> तुर्की में लिंग समानता का अत्यंत संक्षिप्त इतिहास है

लैंगिक समानता पर बहस व चर्चाएं (मुख्य रूप से लिंग के मध्य समानता के सन्दर्भ में) ओटोमन साम्राज्य के आधुनिकीकरण की अवधि व तुर्की गणराज्य की नींव तक जाती हैं। जैसा कि सर्पिल संकार और आयका बुलट चर्चा करते हैं कि 1920 और 1930 के दशक के रिपब्लिकन सुधारों ने महिलाओं को आधुनिकीकरण के प्रतीक के रूप में और तुर्की समाज के आधुनिक चेहरे के रूप में चित्रित किया। इस प्रकार लैंगिक समानता नीतियों को आर्थिक एवं सामाजिक विकास की एक अनिवार्य विशेषता होने के बजाय आधुनिकीकरण या सांस्कृतिक परिवर्तन प्रक्रियाओं के एक भाग के रूप में विकसित किया गया। यद्यपि इस काल ने परिवार को एक संरचना के रूप में प्राथमिकता दी, पुरुषों और महिलाओं की समानता पर कानूनों की एक श्रृंखला पारित की गई जिसमें मतदान का अधिकार और नागरिक संहिता सम्मिलित थे। इन सुधारों के बावजूद सामाजिक स्तर पर लैंगिक समानता हासिल नहीं की जा सकी और लैंगिक विषमता बनी रही।

1980 के दशक के अंत से, महिला संगठनों और नारीवादी आंदोलनों ने जबरदस्ती लैंगिक समानता लाने में एक आवश्यक भूमिका निभायी है। उनके प्रमुख राजनीतिक प्रयास और राजनीतिक–सामाजिक परिदृश्य को आकार देने में उनकी बढ़ती भागीदारी तेजी से दिखाई देने लगी है। 1990 के दशक में नारीवादी प्रयासों के परिणामस्वरूप महिलाओं को कानूनी और सामाजिक दोनों तरह के लाभ प्राप्त होने लगे। महिलाओं के मानवाधिकारों जैसे सार्वजनिक, आर्थिक और राजनीतिक संसाधनों तक समान पहुंच, महिलाओं के खिलाफ हिंसा का उन्मूलन और विधानसभाओं में महिलाओं का राजनीतिक प्रतिनिधित्व बढ़ाने के लिए नारीवादी संघर्ष जारी रहा। इस अवधि में नारीवादियों ने परिवार में महिलाओं की जगह और मौजूदा पितृसत्तात्मक संरचना पर सवाल उठाना शुरू कर दिया। उन्होंने लिंगवाद, पुरुष प्रभुत्व, घरेलू हिंसा और अवैतनिक घरेलू काम जैसे मुद्दों पर भी ध्यान केंद्रित किया। इस संबंध में उन्होंने पितृसत्ता और पितृसत्तात्मक सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था की भूमिका के विश्लेषण पर विशेष ध्यान दिया। उनके प्रयासों की बदौलत ही लैंगिक असमानता पर आधारित मौजूदा समस्याओं साथ

>>

ही उनके समाधान के संसाधनों और तंत्रों के बारे में सूचना से जन जागरूकता बढ़ी है।

> समसामयिक चुनौतियां

1980 और 1990 के दशक में नारीवादियों के प्रयासों के कारण नारीवादी आंदोलन सामाजिक और राजनीतिक रूप से मजबूत हुआ। 2000 के दशक और उसके बाद, ऐसा लगता है कि धर्म, जातीयता, वर्ग, यौन अभिविन्यास और उम्र की परवाह किए बिना ही सभी महिलाएं जो पितृसत्ता व पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना को एक समस्या के रूप में देखती हैं, वे नारीवादी आंदोलन की समर्थक हैं। हिल–कोलिन्स (1990) का तर्क है कि आधुनिक दुनिया में लिंग, वर्ग और जातीयता सबसे अस्पष्ट राजनीतिक रंग में डूबे सामाजिक संबंधों में से हैं। यह देखते हुए कि वर्ग, यौन अभिविन्यास, उम्र, धर्म, स्वास्थ्य की स्थिति, नागरिकता संबंधों आदि महिलाओं के अनुभवों को अलग करते हैं, नारीवादी व्यवस्थित रूप से गुंथे हुए शक्ति संबंधों व महिलाओं के सामाजिक व राजनीतिक अनुभवों के बीच की कड़ी पर सवाल उठाते रहे हैं। तुर्की में नारीवादी आंदोलन के प्रतिच्छेदित चरित्र को आंदोलन की ताकत के मूल कारण के रूप में देखा जा सकता है।

जब हम 2000 के दशक में नीति–निर्माण प्रक्रिया को देखते हैं तो यह स्पष्ट होता है कि लैंगिक राजनीति यूरोपीय संघ के विलय की प्रक्रिया, जिसने 1999 में हेलसिंकी शिखर सम्मेलन का अनुगमन किया, के साथ सुसंगत थी। इस अवधि में तुर्की ने महिला अधिकारों कई क्षेत्रों में प्रगति के बहुत से संकेत, जिसमें तुर्की दंड संहिता और नागरिक संहिता में संशोधन व इस्तांबुल कन्वेंशन की मेजबानी सम्मिलित थी, को अनुभव किया। इस्तांबुल कन्वेंशन, पहला ऐसा यूरोपीय कन्वेंशन जिसका उद्देश्य यौन अभिविन्यास की परवाह किए बिना महिलाओं के खिलाफ हिंसा और घरेलू हिंसा से सुरक्षित क्षेत्र को बनाना था, पर हस्ताक्षर करने वाला तुर्की पहला देश था। यह एक किया था। इस दस्तावेज़ को एलजीबीटीआईक्यू व्यक्तियों के लिए एक आश्वासन के रूप में देखा जा सकता है। कन्वेंशन की पुष्टि करने के ठीक बाद, तुर्की ने 2012 में अपना संबंधित कानून संख्या 6284 पारित किया।

हालाँकि 2012 के बाद डी–यूरोपीयकरण नीतियों के साथ ही इन सुधारों की गति धीमी हो गई है। यह अवधि एक समतावादी प्रवचन से एक रूढ़िवादी संक्रमण के साथ मेल खाती है। इस अवधि की नवउदारवादी नीतियां परिवार के महत्व और परिवार के भीतर महिलाओं की भूमिका पर बयानबाजी के साथ आईं, जो पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना को सुदृढ़ करने वाला एक आवश्यक उपकरण है। 2021 में तुर्की इस्तांबुल कन्वेंशन को छोड़ने वाला पहला देश बन गया। इसे तुर्की ग्रैंड नेशनल असेंबली की मंजूरी के बिना ही किया गया।

पिछले दशकों में प्रगति के बावजूद, राजनीति और कार्यबल में महिलाओं का कम प्रतिनिधित्व, बेरोजगार महिलाओं की उच्च दर, लिंग–आधारित हिंसा और स्त्री–हत्या सहित कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं। इसके अलावा कोविड–19 महामारी का लैंगिक समानता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। आंकड़े बताते हैं कि महामारी ने महिलाओं के खिलाफ हिंसा में वृद्धि की है। कई महिलाओं को लॉकडाउन के उपायों के कारण असुरक्षित परिस्थितियों में रहना पड़ा है जिससे उनके लिए सेवाओं तक पहुंचना मुश्किल हो गया।

तुर्की जैसे देशों में जहां श्रम के पारंपरिक और रूढ़िवादी विभाजन आम हैं और जहाँ देखभाल कार्य का भार मुख्य रूप से महिलाओं पर पड़ता है जबकि पुरुष घर के लिए सेवाएं प्रदान करते हैं, व्यवहार में होने वाले महत्वपूर्ण परिवर्तनों और घटनाक्रमों के बावजूद भी कोविड–19 महामारी ने लिंग अंतर को गहरा किया और महिलाओं पर गैर–अनुपातिक रूप से भार डाला है। यद्यपि हालिया अध्ययनों ने दर्शाया है कि महामारी के दौरान पुरुषों ने भी घर के काम पर अधिक समय बिताया। उन्हीं अध्ययनों से स्पष्ट हुआ कि घरेलू श्रम में पुरुषों की भागीदारी से महिलाओं का बोझ कम नहीं हुआ। असल में महामारी ने महिलाओं के श्रम के महत्व का खुलासा किया है। जैसा कि मेल्दा यमन बताती हैं, यद्यपि घरों के बाहर जीवन ठप हो गया है महिलाओं ने श्रम शक्ति को पुनः उत्पन्न करने व घर पर बच्चों–बुजुर्गों की देखभाल करने के लिए वैतनिक और अवैतनिक क्षमताओं में काम करना जारी रखा है। वे कोविड–19 के आर्थिक प्रभावों से अधिक प्रभावित हुए हैं क्योंकि वे असुरक्षित श्रम बाजारों में गैर–अनुपातिक रूप से काम करते हैं। ये सभी कारक सार्वजनिक व निजी दोनों जगहों पर महिलाओं को कमजोर बनाते हैं और लैंगिक समानता हासिल करने में एक बड़ी बाधा बनते हैं। ■

सभी पत्राचार असली टेलसेरेन को <telserena@dogus.edu.tr> पर प्रेषित करें।

1. BBC News Türkçe, Toplumsal cinsiyet eşitliği nedir, Türkiye'de neden tartışma yaratıyor? https://www.bbc.com/turkce/haberler-turkiye-49679143 (तुर्की में साक्षात्कार। 17 मई 2022 को एक्सेस किया गया).

2. Sancar, S. and Bulut, A. (2006) *Turkey: Country Gender Profile, Final Report*, https://www.jica.go.jp/english/our_work/thematic_issues/gender/background/pdf/e06tur.pdf (9 मई 2022 को एक्सेस किया गया).

3. See Ikkaracan, İ. and Memiş, E. (2021) "Transformations in the gender gaps in paid and unpaid work during the COVID-19 pandemic: findings from Turkey." *Feminist Economics*. 27 (1-2), 288-309, https://doi.org/10.1080/13545701.2020.1849764, और Hızıroğlu-Aygün, A., Köksal, S. and Uysal, G. (2021) "Covid-19 pandemisinde toplumsal cinsiyet eşitsizliği: ev işlerini kim yaptı? Çocuklara kim baktı?". İstanbul Politikalar Merkezi. Sabancı Üniversitesi. https://ipc.sabanciuniv.edu/Content/Images/CKeditorImages/20210401-19040880.pdf (तुर्की में लेख).

4. Yaman, M. (March 7, 2021) "Pandeminin içinden: kadınların yeniden üretim emeği." *Birgün*, https://www.birgun.net/haber/pandeminin-icinden-kadinlarin-yeniden-uretim-emegi-336621 (तुर्की में लेख).

> कोविड–19 और तुर्की में और मध्यम वर्ग की खपत

डिस्ले कोयलन, दोगुस विश्वविद्यालय, तुर्की द्वारा

श्रेयः ट्रान मऊ ट्री टैम, क्रिएटिव कॉमन्स।

कोविड–19 महामारी ने समाज, संस्थानों और रोजमर्रा की जिंदगी को अचानक बहुत तेजी से बदल दिया है। एक के बाद एक दुनिया भर की सरकारों द्वारा सामाजिक जीवन पर प्रतिबंधों ने सामाजिक दूरी और सामाजिक अलगाव की अवधारणाओं को रोजमर्रा की जिंदगी पर लाद दिया है। जीवन को उन सभी क्षेत्रों में पुनर्व्यवस्थित किया गया है जहां हम सामाजिक रूप से एक साथ आते हैं जैसे व्यवसाय करने से लेकर अवकाश गतिविधियों तक और इसके कारण दिनचर्या व जीवन शैली तथा उपभोग की आदतों में बदलाव आया है।

यह अचानक बदलाव विशेष रूप से मध्यम वर्ग के सफेदपोश श्रमिकों में देखा गया है जो महामारी से पहले नियमित रूप से काम पर जाते थे, ट्रैफिक जाम से जूझते थे, आमने–सामने बैठकें करते थे, एक कार्यालय में निर्धारित घंटों तक काम करते थे और नियमित रूप से सार्वजनिक स्थानों पर प्रवेश करते थे। निस्संदेह, कोविड–19 महामारी ने समाज के सभी वर्गों और उनके दैनिक जीवन को प्रभावित किया है, लेकिन सफेदपोश श्रमिकों, जिन्होंने घर पर काम करना शुरू कर दिया है, के जीवन में परिवर्तन बहुत अधिक स्पष्ट हुए है। कार्य का यह रूपांतरण बेशक बड़ी फर्मों और संगठनों के डिजिटलीकरण प्रयासों से संभव हुआ। महामारी के दौरान इसे विलासिता के रूप में माना जाता था। यह एक विकल्प है जो मध्यम व उच्च वर्ग के सफेदपोशों के पास है जबकि निम्न वर्गों के पास नहीं है।

तुर्की समाज में ब्लू–कॉलर कार्यकर्ता (श्रमिक) और स्वास्थ्य कर्मी कोविड–19 महामारी के दौरान सबसे कमजोर समूह थे। उनमें से बहुत से कम–कुशल श्रमिक हैं। जिनके पास कम वेतन वाली नौकरियां हैं और काम करने की खराब स्थितियां है जैसे डिलीवरी ड्राइवर, मांस उद्योग के श्रमिक, सुपरमार्केट कैशियर और निर्माण श्रमिक, जिन्हें संक्रमण होने का उच्च जोखिम था। आम तौर पर उनकी काम करने की परिस्थितियाँ डिजिटलीकरण, घर से काम करने या लचीले होने के लिए उपयुक्त नहीं होती हैं इसलिए कोविड–19 महामारी ने उनके कामकाजी जीवन को इतना नहीं बदला। दूसरी ओर उनकी सामाजिक दिनचर्या, जीवन शैली और उपभोग की आदतें, जिसमें मानवीय संपर्क जैसे कि कैफे में एकत्रित होना या भीड़–भाड़ वाली शादी में भाग लेना सम्मिलित है, निश्चित रूप से महामारी से प्रभावित हुए हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि पूंजीवादी समाज का मुख्य फोकस काम की स्थिरता पर रहता है इसलिए निम्न वर्गों का कामकाजी जीवन पहले की तरह, जितना संभव हुआ, उतना जारी रहा है।

> सफेदपोश श्रमिकों पर प्रभाव

उच्च वर्ग और धनी अभिजात वर्ग के विपरीत, जो अपने अभ्यस्त विलासिता में महामारी से बचे हैं, निम्न और मध्यम वर्ग ने लगभग पूरी तरह से इसका नकारात्मक प्रभाव देखा है। मेरा जोर विशेष रूप से मध्यम वर्ग पर है, खासकर उसके सफेदपोश कार्यकर्ताओं

>>

पर। यद्यपि वे महामारी के दौरान बेरोजगार नहीं थे लेकिन फिर भी दूसरों की तरह ही पीड़ित थे। लेकिन उनके दुखों को पहचाना नहीं जाता और यहां तक कि उनकी उपेक्षा की गई है। वे कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं जबकि उनकी नौकरियों को डिजिटल कर दिया गया है। उनके काम करने की परिस्थितियों में बदलाव और इन परिस्थितियों में काम करने के लिए आवश्यक योग्यताओं ने उनके पूरे जीवन को प्रभावित किया है।

सफेदपोश नौकरियों में आम तौर पर कार्यालय जाने और आमने–सामने की बैठकों में भाग लेने की आवश्यकता होती है। ऐसे कार्यों में मानवीय संपर्क की आवश्यकता होती है। हालांकि महामारी ने इन आवश्यकताओं को तेजी से स्थानांतरित कर दिया। कामकाजी जीवन सहित जीवन के सभी क्षेत्रों में मानवीय (आमने–सामने) बातचीत की आवश्यकता वाली कार्रवाइयां प्रतिबंधित या सीमित थीं। अतः सफेदपोश कामगार जो अचानक अपने घरों तक सीमित हो गए थे और घर से काम करने के लिए अनुकूल होने की कोशिश कर रहे थे, उन्हें एक नया दैनिक जीवन बनाना पड़ा जिसके परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर उपभोग की आदतों में बदलाव आया।

यह आश्चर्य की बात नहीं है कि महामारी द्वारा लाए गए सामाजिक पृथक्करण के संदर्भ में, मोटे तौर पर लोग अपने घरों तक ही सीमित रहे हैं और उन्होंने कम उपभोग करने की प्रवृत्ति रखी है। एकांतवास, प्रतिबंध और लॉकडाउन सार्वजनिक क्षेत्र में किसी की दृश्यता को कम करते हैं। लोग बहुत कम भोजन या सभा के लिए बाहर निकलते हैं या किसी शादी में भाग लेते हैं, किसी मित्र से मिलते हैं या किसी बड़े शॉपिंग मॉल में खरीदारी करते हैं। इसका मतलब है कि विलासिता और प्रदर्शन उपभोग (विशेष रूप से आर्थिक शक्ति के सार्वजनिक प्रदर्शन के रूप में विलासिता की वस्तुओं और सेवाओं पर पैसा खर्च करना) में कमी आई है। आमतौर पर लोग महंगे कपड़े, ऊँची एड़ी के जूते, महंगा इत्र या सौंदर्य प्रसाधन तब तक नहीं खरीदते जब तक कि वे बाहर न जाएं। यदि वे सार्वजनिक क्षेत्र जैसे कि शॉपिंग स्ट्रीट या प्लाजा में एक कार्यालय में दूसरों द्वारा नहीं देखे जाते हैं, तो वे प्रदर्शन उपभोग में लिप्त नहीं होते हैं। यदि सार्वजनिक प्रदर्शन का कोई अवसर नहीं है तो कोई प्रदर्शन उपभोग नहीं होगा।

रोजमर्रा की जिंदगी और उपभोग की आदतों के परिवर्तन के बारे में एक और खोज कार्यस्थल और घर के मध्य के अंतर से संबंधित है। महामारी के कारण, घर में एक कमरा कार्यस्थल बन गया है। काम का समय और फुरसत का समय भी पहले से कहीं ज्यादा करीब आ रहा है। कार्यालय की जगह और कार्यालय के घंटों तथा घर व खाली समय के बीच की सीमाएं धुंधली हो गई हैं। घर एक अधिकेंद्र बन गया है। जिसमें एक संपूर्ण जीवन समाहित है। काम और गृहस्थ जीवन के बढ़ते मेल–मिलाप के परिणामस्वरूप मध्यमवर्गीय सफेदपोश श्रमिकों के पारिवारिक संबंधों में गिरावट आयी है। एक कार्यालय में काम करने से घर पर काम करने के परिवर्तन का मतलब है कि व्यक्ति को किसी भी समय काम करने के लिए तैयार रहना होगा। सफेदपोश कार्यकर्ताओं ने कहा कि महामारी के बाद से उनके वरिष्ठ और प्रबंधक उन्हें तत्काल प्रतिक्रिया की उम्मीद में रात में भी ई–मेल भेजते हैं। प्रबंधकों की अपेक्षाएं बदल गई हैं। अब वे चाहते हैं कि सभी सफेदपोश कर्मचारी किसी भी कार्य के लिए किसी भी समय तैयार रहें। जैसे कि बैठकें, विपणन योजनाएँ बनाना, ई–मेल लिखना, रिपोर्ट तैयार करना आदि। ये अस्पष्ट कार्य घंटे निजी जीवन में समस्याओं का बड़ा कारण बन रहे हैं। कामगार अपने परिवार या दोस्तों के साथ कार्यक्रम नहीं बना सकते हैं या यहां तक कि लाइव प्रसारण देखने की योजना भी नहीं बना सकते हैं। इसके कारण अभिप्रेरणा का अभाव और तनाव व अवसाद की दरों में बढ़ोतरी हुई है।

कुल मिलाकर, कोविड–19 महामारी ने इस्तांबुल में मध्यम वर्ग के सफेदपोश श्रमिकों के रोजमर्रा के जीवन और उपभोग की आदतों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर बदल दिया है। ■

सभी पत्राचार डिस्ले कोयलन को <dkoylan@dogus.edu.tr> पर प्रेषित करें।

> तुर्की में पर्यावरणवाद का समाजशास्त्र

ओजकां ओजतुर्क, कराबुक विश्वविद्यालय, तुर्की द्वारा

पर्यावरणवाद, अधिनायकवाद के विरुद्ध पर्यावरणीय सक्रियता और नागरिक समाज की लामबंदी के बीच की खाई को पाट सकता है। श्रेयः कॉन्गर डिजाइन/पिक्साबे, क्रिएटिव कॉमन्स।

तुर्की में पर्यावरणवाद के पाठ्यक्रम और रूपों ने देश के सामाजिक परिवर्तन के साथ–साथ राजनीति के समानांतर प्रगति की है। पर्यावरणवाद के रूपांतरण के साथ, राजनीतिक बहसों के अलावा नागरिक समाज के विकास के लिए संघर्षों, नवउदारवाद के वैचारिक रूपों और वर्गीय भेदभाव द्वारा बनाए गए सामाजिक विभाजनों का पालन करना संभव है।

यद्यपि तुर्की में पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति सामाजिक प्रतिक्रियाओं के इतिहास को 1970 के दशक के अंत में देखा जा सकता है, एक संगठित पर्यावरणवाद का उदय 1980 के दशक के अंत में ही संभव हो पाया था। संगठित पर्यावरणवाद की इस पहली अवधि ने 1980 के सैन्य तख्तापलट द्वारा निर्मित सामाजिक संगठन के लिए मनोवैज्ञानिक बाधाओं को नष्ट करने और 1970 के दशक में विरोध की भाषा को पुनः प्राप्त करके एक नए राजनीतिक आधार के निर्माण में योगदान दिया। जिसने पर्यावरणीय समस्याओं को राजनीति और अर्थव्यवस्था से जोड़ा। उस काल की राजनीतिक भाषा से परे अखंडता पर जोर देने के साथ ग्रीन पार्टी द्वारा अब पर्यावरणवादी सम्भाषण को सीधे राजनीति में प्रतिनिधित्व देने की मांग की गई थी। हालाँकि, यह प्रयास अल्पकालिक था क्योंकि पर्यावरणवाद यद्यपि एक अभिनव दृष्टिकोण था, यह एक संकीर्ण मध्य–वर्गीय व्यवहार में फंसा था और जनता तक नहीं पहुंचा। इस असफल राजनीतिक प्रयास के बाद पर्यावरणीय गैर–सरकारी संगठनों के माध्यम से पर्यावरण प्रवचन का विभिन्न रूपों में निर्माण जारी रहा।

> 1990 का दशक: पर्यावरणवाद का संस्थानीकरण

1990 का दशक, जब पर्यावरणवाद नागरिक समाज के एक घटक में बदल गया था, वह दौर था जब पर्यावरणीय मूल्यों को मध्यम वर्ग के मूल्यों के साथ एकीकृत किया गया था और जब पर्यावरणवाद सार्वजनिक क्षेत्र में दिखाई देने लगा था। इस अवधि में, पर्यावरण संगठन पर्यावरणीय समस्याओं के संबंध में राजनीतिक मांगों का उत्पादन करने वाले सामाजिक संगठन होने से आगे निकल गए। राज्य शक्ति सत्ता के खिलाफ गतिशील नागरिक समाज के विस्तार के अनुरूप पर्यावरणवाद नागरिक समाज का एक मजबूत घटक बन गया। पर्यावरणवाद का नागरिक समाज पर गहरा प्रभाव पड़ने के दो मुख्य कारण हैं। पहला, पर्यावरणवाद की एक गैर–राजनैतिक रूप से सक्षम लोगों के रूप में सामाजिक छवि, वे लोग जिन्हे तख्तापलट की प्रक्रिया के दौरान राजनीतिकरण से वंचित कर दिया था, को पुनः सामाजिक संगठन में सम्मिलित करना। दूसरा, पूरे देश में उद्योग और ताप विद्युत संयंत्रों द्वारा उत्पादित प्रदूषण के साथ नियोजित परमाणु ऊर्जा संयंत्र के संभावित जोखिमों के बारे में बनाए गए प्रवचनों ने स्पष्ट कर दिया कि पर्यावरणीय समस्याएँ प्रादेशिक नहीं बल्कि राष्ट्रीय थीं और पर्यावरणीय सम्भाषण के सामाजिक संचरण को तीव्र करती थीं। उदाहरण के लिए, उस समय के सबसे विख्यात पर्यावरणीय प्रतिरोध के रूप में बर्गमा स्वर्ण खानों के खिलाफ प्रतिरोधों ने माध्यम वर्ग के भीतर पर्यावरणीय सम्भाषण को फैलाने का काम जारी रखा। इस अवधि के दौरान पर्यावरणवाद मध्यम वर्ग पर आधारित एक सार बनाने में कामयाब रहा जो आज तक जीवित है।

>>

तुर्की में पर्यावरण प्रतिरोध। श्रेयः ओज़कान ओज़तुर्क।

नागरिक समाज पर जोर देने से विभिन्न पर्यावरण संगठनों और पर्यावरणवाद पर विभिन्न दृष्टिकोणों का निर्माण हुआ। इस अवधि, जिसे संस्थागतकरण की अवधि कहा जा सकता है, ने पर्यावरण संगठनों के लिए विशेष रुचियों को विकसित करने व विभिन्न सामाजिक प्रक्रियाओं में शामिल होने का मार्ग प्रशस्त किया। विभिन्न और विशिष्ट मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने वाले पर्यावरणीय गैर–सरकारी संगठन जैसे कि कृषि समस्याएं, प्राकृतिक जीवन की रक्षा व क्षरण का मुकाबला करना तथा शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से पर्यावरण में सामाजिक जागरूकता एवं रुचि बढ़ाने के साथ–साथ अपने स्वयं के हित के क्षेत्रों में संलग्न होने के लिए कार्य किया। जागरूकता बढ़ाने वाली गतिविधियों पर विशेष ध्यान दिया गयाः बच्चों और युवा वयस्कों के लिए पर्यावरण शिक्षा गतिविधियाँ आने वाले वर्षों में उच्च जागरूकता के साथ एक सामाजिक समूह बनाने के प्रयास का हिस्सा थीं।

साथ ही इसी अवधि में, न केवल संस्थागत रूप से संचालित होने वाले पर्यावरणीय गैर–सरकारी संगठनों ने बल्कि सीधे तौर पर राजनीति को लक्षित करने वाले पर्यावरणीय आंदोलनों को भी बल मिला। पर्यावरणीय आंदोलनों, जिनमें वित्तीय संसाधनों की कमी और इसलिए संस्थागत पर्यावरणवाद के लिए उपलब्ध प्रचार के साधनों ने पर्यावरणीय समस्याओं के राजनीतिक आयाम पर जोर देना जारी रखा है, विशेष रूप से स्थानीय समस्याओं की अभिव्यक्ति के लिए संयुक्त कार्य समूहों व स्थानीय विरोध प्रदर्शनों के निर्माण के साथ। पर्यावरणीय आंदोलनों के राजनीतिक–विरोध रवैये और संस्थागत पर्यावरणवाद के बीच आम भाजक जो पर्यावरणवाद को अपनी राजनीतिक सामग्री से अलग करने के लिए उत्सुक था जिसका उद्देश्य व्यापक दर्शकों का ध्यान पर्यावरणीय समस्याओं की ओर आकर्षित करना था।

> 2000 का दशकः पर्यावरणवाद का व्यावसायीकरण

संस्थाकरण की प्रक्रिया, जिसने 1990 के दशक में गति प्राप्त की, ने 2000 के दशक में पर्यावरणवाद की दिशा के लिए कुछ नए दृष्टिकोण प्रदान किए। 1990 के दशक की तुलना में अब पर्यावरणवादी संगठनों के एजेंडे में अधिक विस्तृत लक्ष्य शामिल थे और साथ ही वे इन लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए उपयोग किए जाने वाले उपकरणों की पहचान भी करते थे। इस प्रक्रिया, जिसे व्यावसायीकरण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, के परिणामस्वरूप पर्यावरणवादी संगठनों ने अपने राजनीतिक और आर्थिक कार्यक्रमों के साथ–साथ उनकी वैचारिक स्थिति की बौद्धिक संरचना को भी स्पष्ट किया। हालांकि, बड़ी कंपनियों की छाया में स्थापित किए गए कई नए "पर्यावरणवादी" संगठनों ने पूंजी की वर्तमान आर्थिक और राजनीतिक परम्पराओं के अनुकूल घरेलू पर्यावरणवाद के प्रचार को निर्मित किया। पर्यावरणवाद में यह दिलचस्पी बड़ी कंपनियों के नियंत्रण में स्थापित संगठनों तक ही सीमित नहीं थी। विशेष रूप से 2000 के दशक के मध्य में जब जस्टिस एंड डेवलपमेंट पार्टी (AKP) ने अपनी राजनीतिक शक्ति को समेकित किया, रूढ़िवादी और धार्मिक संगठन जो अपने सामाजिक प्रभाव का विस्तार करना चाहते थे, ने एक धार्मिक–पर्यावरणीय विमर्श वाले पर्यावरण संगठनों की स्थापना की। एक धार्मिक प्रवचन के संदर्भ ने जन कल्याण के ढांचे के भीतर पर्यावरणीय समस्याओं को हल करने के बजाय वर्तमान संयोजन के भीतर सुलह का सुझाव भी दिया गया।

2000 के दशक वे वर्ष थे, जब पर्यावरणवाद और पर्यावरणीय समस्याओं में सामाजिक रुचि मध्यम वर्ग से निम्न वर्गों तक फैल गई थी। इंटरनेट जैसी संचार प्रौद्योगिकियों ने पर्यावरणवादी प्रवचनों को पहले से कहीं अधिक व्यापक सामाजिक आधार तक फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। हालाँकि, अधिक महत्वपूर्ण रूप से, इस तथ्य के कारण एक बड़ा सामाजिक समूह प्रत्यक्ष रूप से पर्यावरणीय समस्याओं से संलग्न है कि तीव्र सत्तावादी ।झच की पर्यावरणीय नीतियां, जो कि सुलह से बहुत दूर हैं, गहन रूप से इन समस्याओं को पैदा करती हैं। नदियों पर बने जलविद्युत संयंत्र द्वारा उन स्थानों पर जहाँ वे बने हैं और उस क्षेत्र के सैंकड़ों गावों को होने वाले नुकसान, या खनिज खनन कार्य से राष्ट्रीय उद्यानों की लूटपाट ने पर्यावरणीय समस्याओं के साथ राजनैतिक सत्तावाद से स्थानीय लोगों का प्रत्यक्ष अनुभव करा दिया है। राजनीतिक सत्तावाद के साथ ही पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान है।

यह तथ्य कि आज अधिक लोगों द्वारा पर्यावरणीय समस्याओं का अनुभव किया जा रहा है और पर्यावरणवादी विमर्श को नागरिक समाज और राजनीति दोनों में सबसे आगे लाया जा रहा है। इस अर्थ में, पर्यावरणवाद ने सत्तावादी राजनीति के साथ–साथ पर्यावरणीय समस्याओं के खिलाफ संघर्ष में एक बड़ी भूमिका निभाई है। इस भूमिका को अपने राजनीतिक स्वरूप में कम करने का अर्थ तुर्की के अपने संक्षिप्त इतिहास में पर्यावरणवाद के मार्ग की अनदेखी करना होगा। साथ ही प्रत्यक्ष राजनीतिक संघर्ष, लोकतांत्रिक मूल्यों पर जोर देने वाली नागरिक पहलें विकसित करना और पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से जागरूकता बढ़ाने वाली गतिविधियों की शुरुआत ने भी पर्यावरणवाद की सामाजिक गुणवत्ता को मजबूत किया है।■

सभी पत्राचार ओजकां ओजतुर्क को <ozkanozturk@karabuk.edu.tr> पर प्रेषित करें।

> तुर्की के वैचारिक संघर्ष में जकड़ी महिलाएं

इल्कनूर हाजिसोफ्तगलू, इस्तांबुल बिल्गी विश्वविद्यालय, तुर्की द्वारा

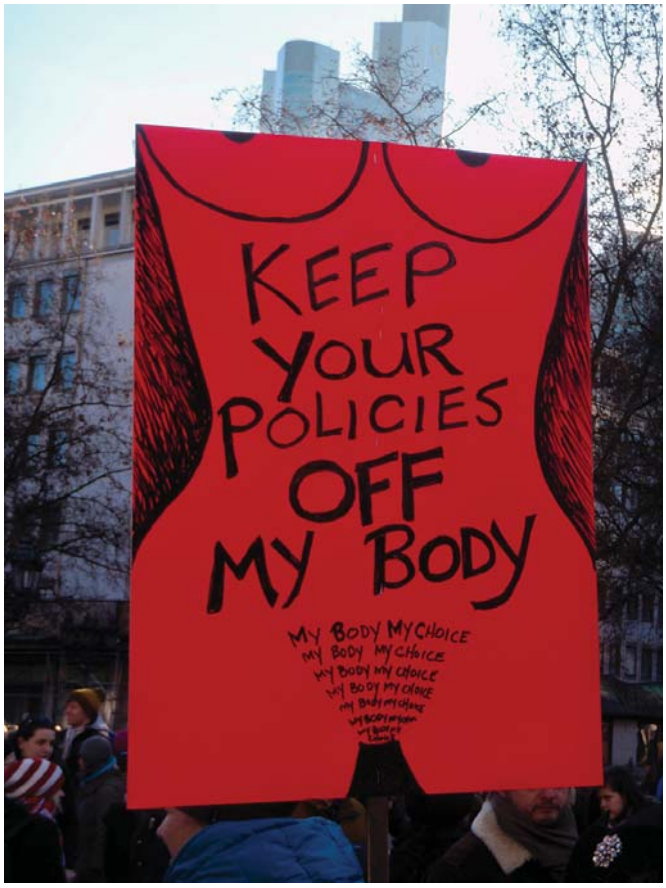

2017 में फ्रैंकफर्ट में महिला मार्च में एक महिला के शरीर को विनियमित करने वाली नीतियों का विरोध करते हुए पोस्टर। श्रेयः विकिमीडिया कॉमन्स।

अन्य देशों की तरह, तुर्की के इतिहास में महिलाओं के शरीर विभिन्न राजनीतिक बहसों के केंद्र में रहे हैं। इस आलेख में, मैं विभिन्न उदाहरणों से यह बताने का प्रयास करूँगा कि महिलाओं के शरीर कैसे विभिन्न राजनीतिक संघर्षों के लिए एक कैनवास बन गए हैं।

बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में, तुर्की की प्रारंभिक गणतंत्रात्मक निर्माण अवधि में, शासन ने गणतंत्र की ''नई महिला'' को परिभाषित किया। महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति और उनके शारीरिक व्यवहार (उदाहरण के लिए, कपड़े, खेल और व्यायाम का चुनाव) को एक ही सूत्र में एक साथ लाया गया। महिलाएं अपने शरीरों और प्रथाओं के माध्यम से तुर्की राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को पूरा करती थीं ।

इस अवधि में, नव स्थापित गणराज्य के मूल्यों की चर्चा में, एक केंद्र बिंदु सभ्यता और संस्कृति के बीच की दरार थी। बुद्धिजीवियों और नए शासन के संस्थापकों का तर्क था कि पश्चिम के साथ पहचानी जाने वाली सभ्यता आधुनिकीकरण के माध्यम से देश में आएगी। यद्यपि, देश के अंतर और विशिष्टता का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्कृति को कैसे संरक्षित किया जाए, यह भी एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय था। इस विरोधी स्थिति में, महिलाओं ने एक साथ पश्चिम से अंतर और पश्चिम की समानता का प्रतिनिधित्व किया। वे ''पुरातन'' महिलाये, जिनकी सार्वजनिक स्थान तक पहुंच सख्त नियमों के माध्यम से नियंत्रित थी, उन्हें ''नवीन'' महिलाओं के साथ बदल दिया गया, जिन्होंने कानून के समक्ष पुरुषों के साथ समानता प्राप्त की थी, लेकिन फिर भी अपनी पारंपरिक घरेलू भूमिकाएं बनाए रखीं।

जैसा कि सोलक ने अपने लेख ''तुर्की में धर्मनिरपेक्षता और इस्लामवाद के बीच नागरिकता'' में कहा है, एक नए नागरिक के रूप में, प्रत्येक तुर्की महिला को अपने शरीर में परिलक्षित ''आदर्श'' और ''सभ्य'' प्रतीकों, छवियों और अनुष्ठानों की एक श्रृंखला का पालन करना पड़ता था। खेल को उस स्थान के रूप में देखा जाता था, जहां नवीन महिलाओं का प्रदर्शन होता था। 1936 के बर्लिन ओलंपिक में भाग लेने वाली मुस्लिम बहुल देश की पहली महिला रैली खिलाड़ी, सामिया काहिद मोर्काया, साथ ही साथ हैलेट एंबेल और सुआत फेटगेरी भी शामिल थीं, जो इस काल के प्रतीकात्मक नामों में से थीं।

> इस्लामवाद, धर्मनिरपेक्षता, और महिलाओं के शरीरों पर लड़ाई

1950 और 1980 के बीच समाज में महिलाओं की स्थिति एक प्रमुख मुद्दा नहीं थी। हालाँकि, 1980 के सैन्य तख्तापलट के बाद की अवधि, जिसमें तुर्की में शासन बदल गया था, इसने महिला आंदोलन का उदय देखा। जैसा कि नसीद बर्बर ने कहा, सेवगी सुबुकु के शब्दों में, ''जो स्वतंत्र नारीवादी आंदोलन उभरा, वह एक 'विद्रोह' आंदोलन था, जो कानूनी अधिकारों के लिए व्यवस्थित नहीं था, इसने इस भ्रम पर आपत्ति जताई कि केमलवाद द्वारा लैंगिक समानता मुक्कमल हुई और वह आमूल और कट्टरपंथी मांगों के साथ उभरी।"

एक और आंदोलन जो 1980 के बाद उठा, वह इस्लामी आंदोलन था। सैन्य शासन द्वारा खोले गए क्षेत्र में इस आंदोलन का विस्तार हुआ, और 1990 के दशक के दौरान इसके प्रभाव में वृद्धि हुई। 1990 के दशक के बाद, यह राजनीतिक एजेंडे पर एक स्थिर स्थिति के साथ एक मान्यता प्राप्त विपक्षी आंदोलन बन गया। एक बार फिर, हेडस्कार्फ के मुद्दे को लेकर सार्वजनिक क्षेत्र में महिलाओं के शरीर संघर्ष के केंद्र में थे। हेडस्कार्फ इस्लामवादियों की बयानबाजी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था, और उस समय के आधिपत्यवादियों

>>

द्वारा हेडस्कार्फ को इस्लाम के प्रतीक के रूप में देखा थाय उन्होंने इसे प्रति–धर्मनिरपेक्षता की छवि के रूप में स्थान दिया। इस प्रकार महिलाओं को स्कूलों और मंत्रालयों जैसे सार्वजनिक सेवा भवनों में हेडस्कार्फ के साथ काम करने की अनुमति नहीं थी।

बढ़ते हुए महिला आंदोलन ने इस्लामी आंदोलन को भी प्रभावित किया। महिलाओं के बढ़ते आंदोलन और हेडस्कार्फ के साथ सार्वजनिक स्थान पर महिलाओं की भागीदारी के बारे में गर्म चर्चाओं के संयुक्त प्रभाव के साथ, महिलाओं ने इस्लामी आंदोलन में, विशेषकर स्थानीय राजनीति में बहुत सक्रिय भूमिका निभाई। 2002 में, एक इस्लामी–उन्मुख पार्टी एकेपी सत्ता में आई। सार्वजनिक जीवन में महिलाओं का सिर पर स्कार्फ बांधकर अपनी जगह बनाने का संघर्ष उनकी लफ्फाजी का एक अनिवार्य हिस्सा था। उन्होंने सिर पर स्कार्फ पहनने की महिलाओं की आजादी पर अपने सम्भाषण का निर्माण किया, जिसमें उन्होंने महिलाओं द्वारा अपने शरीरों के साथ अपनी इच्छा अनुसार कुछ भी कर पाने के महिला अधिकारों के संदर्भ में अपना विमर्श तैयार किया। प्रारंभिक गणतंत्र काल में, जहाँ बयानबाजी सभ्यता और संस्कृति की दरार पर आधारित थी, और वर्तमान संघर्ष में यह धर्मनिरपेक्षता और इस्लाम पर आधारित है। दोनों ही मामलों में महिलाओं के शरीरों का इस संघर्ष का प्रतिनिधित्व करने वाली छवि के रूप में उपयोग किया गया है।

आने वाले वर्षों में इस्लामी आंदोलन के उदय के साथ, महिला शरीर के बारे में चर्चा ने नई परतें प्राप्त की हैं। महिलाओं के शरीर के संबंध में सिर पर हेडस्कार्फ पहनने वाली महिलाएं अब एकमात्र बहस का मुद्दा नहीं हैं। कुछ इस्लामी विचारों के नेताओं द्वारा महिलाओं से अपने शरीरों के साथ इस्लामी मूल्यों का पालन करने और हद में रहने का आह्वान किया है। महिला आंदोलनों द्वारा गारंटीकृत अधिकार फिर से विवादास्पद हो गए हैं। इन उपलब्धियों में से एक 2011 का इस्तांबुल कन्वेंशन था जिसका उद्देश्य महिलाओं को सभी प्रकार की हिंसा से बचाना और महिलाओं के खिलाफ हिंसा और लैंगिक हिंसा को रोकना, अभियोग चलाना और उन्हें समाप्त करना था। कुछ तथाकथित सरकारी समर्थक समाचार पत्रों के महीनों के अभियानों के बाद, तुर्की, जिसने 2012 में कन्वेंशन पर हस्ताक्षर करने में कोई झिझक नहीं दिखाई थी, ने घोषणा की कि उसे इसके बारे में संदेह हैं और 2021 में इसे वापस ले लिया। वास्तव में, इस्तांबुल कन्वेंशन की बहस ने तुर्की में, विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के अधिकारों के आसपास तनाव को दर्शाया। इन बहसों में जहाँ होमोफोबिया, चर्चा का सबसे दृश्यमान विषय था, यह भी स्पष्ट था कि, महिलाओं की पारंपरिक स्थिति में बदलाव के बारे में चिंताओं से अवगत कराता राजनीतिक सम्भाषण, मुक्त महिलाओं को उनके घरों में वापस बुला रहा था।

> प्रतीक के रूप में महिला खिलाड़ी

जहाँ इस्तांबुल कन्वेंशन से वापसी के कारण सदमे की लहरें जारी रहीं, वहीं टोक्यो ग्रीष्मकालीन ओलंपिक शुरू हुआ। ओलम्पिक में तुर्की से लगभग समान संख्या में पुरुषों और महिलाओं ने भाग लिया। हालांकि उन्होंने पदक नहीं जीता, परन्तु, तुर्की की वॉलीबॉल टीम जिन्हे *फिलिनिन सुल्तानलारी* (''नेट के सुल्तान'') के रूप में जाना जाता है, ने बहुत ध्यान आकर्षित किया। इसके सबसे महत्वपूर्ण कारणों में से एक यह था कि अंतरराष्ट्रीय खेल क्षेत्र में, सोशल मीडिया पर इस्लामी विचार के नेताओं में से एक द्वारा पोस्ट किये गए एक ट्वीट के माध्यम से टीम की सफलता ने एक अलग अर्थ लिया।[1] ट्वीट में इस्लामी लड़कियों को लोकप्रिय संस्कृति के हिस्से के रूप में वर्णित महिला वॉलीबॉल खिलाड़ियों की तरह नहीं बनने का आह्वान किया गया, बल्कि उन्हें सुचरित्र और शालीनता के सुल्तान बनने के लिए कहा गया। वही महिलाएं धर्मनिरपेक्ष लोगों के लिए आधुनिक तुर्की की प्रतीक बन गईं। इस प्रकार महिला वॉलीबॉल टीम ने जल्दी ही महत्वपूर्ण प्रतीकात्मक अर्थ ग्रहण कर लिया और महिला शरीर, एक बार फिर, एक यंत्र के रूप में, इस्लामी–धर्मनिरपेक्ष बहस में एक प्रतीक के रूप में परिवर्तित हो गया।

जब ये चर्चाएं चल रही थीं, तब टीम की सबसे सफल खिलाड़ियों में से एक ने अपनी गर्लफ्रेंड के साथ इंस्टाग्राम पर एक फोटो पोस्ट की। इस बार, जैसे–जैसे होमोफोबिक हमले बढ़े, भेदभाव–विरोधी सम्भाषण के साथ उनका बचाव करने वाले और उन्हें नैतिक भ्रष्टाचार के प्रतीक के रूप में देखने वाले एक बार फिर ध्रुवीकृत हो गए। हालाँकि, ओलंपिक के ठीक बाद, महिला यूरोपीय वॉलीबॉल चौम्पियनशिप थी और तुर्की टीम पसंदीदा में से एक थी। इन घटनाक्रमों के परिणामस्वरूप, सरकार से संबद्ध एक संस्था, तुर्की वॉलीबॉल फेडरेशन ने खिलाड़ी का समर्थन करते हुए एक बयान दिया, जिसमें कहा गया है कि खिलाडी का निजी जीवन निजी है और खिलाडी की सफलता और टीम में योगदान के अलावा कोई अन्य विषय मुद्दा नहीं होना चाहिए। इसके तुरंत बाद, खिलाडी, इटली की एक टीम में शामिल हो गयी। महिला एथलीटों की यौन पहचान के बारे में अन्य बहसों की तरह और जैसा कि पैट ग्रिफिन ने अपने लेख ''चेंजिंग द गेमः होमोफोबिया, सेक्सिज्म, और लेस्बियन इन स्पोर्ट'' में बताया है, मौन को जल्दी से लागू किया गया और मुद्दा बंद हो गया।

वर्तमान में, जैसा कि इस अंक में असली टेलसेरेन का लेख भी नोट करता है, जहाँ महिलाओं के शरीर राजनीतिक बहस के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, वहीं महिलाएं अपनी नियति बनाने के लिए संघर्षरत रहती हैं। ■

सभी पत्राचार इल्कनूर हैजिसऔताग्लू को <ilknur.hacisoftaoglu@bilgi.edu.tr> पर प्रेषित करें।

1. (तुर्की में) https://twitter.com/ihsansenocak/status/1419296320267997187

> तुर्की में महामारी और ''डिजिटल अप्रवासी''

एन. बेरिल ओजर टेकिन, डोगुस विश्वविद्यालय, तुर्की, और स्वास्थ्य और चिकित्सा के समाजशास्त्र (आरएन 16) पर ईएसए अनुसंधान नेटवर्क के सदस्य द्वारा

महामारी के दौरान डिजिटल उपकरणों के साथ डिजिटल अप्रवासियों के अनुभव।
श्रेयः ओलेगवोलोविक, क्रिएटिव कॉमन्स।

कोविड –19 महामारी से तुर्की दुनिया के बाकी हिस्सों की तरह ही प्रभावित था, जिससे विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों पर गंभीर आर्थिक और सामाजिक प्रभाव पड़ा। विशेष रूप से, बुजुर्ग (65 वर्ष और उससे अधिक आयु के व्यक्ति), जो वंचित समूह के रूप में वर्गीकृत हैं, अन्य सामाजिक वर्गों की तुलना में इस प्रक्रिया से अलग तरह से प्रभावित हुए। जैसा कि बटलर (1969) ने बताया है, जैसे–जैसे महामारी का प्रभाव बढ़ा, भय के माहौल के अनुरूप ''उम्रवाद'' भी बढ़ता गया। उम्रवाद को उम्र के आधार पर लोगों के साथ भेदभाव के रूप में परिभाषित किया गया है। हालांकि इस शब्द में नस्लवाद के साथ समानता है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण अंतर यह है कि हम में से हर कोई बूढ़ा होगा! यह लेख महामारी से संबंधित प्रतिबंधों के दौरान बुजुर्गों के अनुभवों और विशेष रूप से, डिजिटलीकरण पर बढ़ती निर्भरता के उनके अनुभव पर केंद्रित है।

संयुक्त राष्ट्र 2019 के आंकड़ों के अनुसार, वैश्विक जनसंख्या में 703 मिलियन बुजुर्ग व्यक्ति (65 वर्ष और अधिक) हैंय अनुमान दर्शाते हैं कि 2050 तक यह आबादी दो गुना बढ़कर 1.5 बिलियन हो जाएगी। रोजगार और सामाजिक सेवाओं के अनुकूल मिलान के बिना यूरोपीय देशों की तुलना में तुर्की दोगुना तेजी से बूढ़ा हो रहा है। ''बूढी होती'' जनसँख्या को ध्यान में रखते हुए, वैश्विक और तुर्की दोनों स्तर पर ''आयुवृद्धि'' पर अधिक अध्ययनों की आवश्यकता है।

> ''डिजिटल अप्रवासी'' के रूप में बुजुर्ग

इक्कीसवीं सदी ने, इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या में वृद्धि और कई सार्वजनिक सेवाओं के ऑनलाइन उपलब्ध होने के साथ, डिजिटलीकरण की गति को तीव्र होते देखा है। लेकिन सभी व्यक्तियों की डिजिटल तकनीकों तक समान पहुंच नहीं है। आर्थिक और शिक्षा चरों के अलावा, उम्र भी नुकसान का कारण बनती है। ''डिजिटल अप्रवासी'' (प्रेंस्की, 2001) सम्बोध बुजुर्गों के लिए डिजिटल क्षेत्र में प्रवेश करने की कठिनाइयों की ओर इशारा करता है। यह उस पीढ़ी को संदर्भित करता है जो कंप्यूटर प्रौद्योगिकियों के फैलने से पहले पैदा हुई थी और जिनका बढ़ती उम्र में इन तकनीकों से मेल हुआ है। यह ''डिजिटल नेटिव्स'' के विपरीत है –अर्थात डिजिटल अप्रवासियों के छोटे बच्चे या उनके पोते–पोती, जो नई तकनीकों के ही समय में पैदा हुए थे। डिजिटल अप्रवासियों ने नेटिव्स की मदद से इन तकनीकों का उपयोग करने में अपने कौशल में सुधार करना शुरू किया ।

TURKSTAT (तुर्की सांख्यिकीय संस्थान, 2020) के आंकड़े बताते हैं कि तुर्की में 65–74 आयु वर्ग के व्यक्तियों द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग 2015 और 2020 के बीच बढ़ा है। बुजुर्ग उपयोगकर्ताओं का प्रतिशत 6% से बढ़कर 27% हो गया। सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाने वाला उपकरण स्मार्ट मोबाइल फोन हैः अनुसंधान डेटा

>>

(बिनार्क एट अल., 2020) के अनुसार, तुर्की में 57% महिलाएं और 60% पुरुष इंटरनेट का उपयोग करने के लिए इन उपकरणों का उपयोग करते हैं।

बुजुर्गों ने मीडिया और संचार में बड़े पैमाने पर परिवर्तन देखा है, जिसकी शुरुआत अखबारों और रेडियो से हुई, इसके बाद स्मार्ट मोबाइल फोन, स्मार्ट टीवी और टच स्क्रीन आये। यह पीढ़ी, जो पहले पत्र भेजती थी और फोन का इंतजार करती थी, अब नए युग से अनुकूलन करने की कोशिश कर रही है जिसमें सूचना प्रवाह, संचार और संचार की गति, सभी बढ़ गए हैं। डिजिटलीकरण के कारण ही, बुजुर्ग महामारी की अवधि के कठिन प्रतिबंधों के दौरान स्वतंत्रता और आनंद का स्थान खोज पाने में सक्षम थे। वहीँ दूसरी ओर, डिजिटल प्लेटफॉर्म के कुछ नकारात्मक पक्ष भी हैं, जैसे सूचना प्रदूषण, गलत सूचना, धोखाधड़ी और गलत भाषा का उपयोग।

> महामारी के दौरान बुजुर्गों द्वारा डिजिटल उपयोग

महामारी के दौरान डिजिटलीकरण प्रक्रिया में बुजुर्गों की भागीदारी बढ़ी है। उन पर सख्त पाबंदियां लगाई गईं, जैसे उनके आवास से निकलने पर कर्फ़्यू (22 मार्च, 2020) और सार्वजनिक परिवहन के इस्तेमाल पर रोक (नवंबर 2020)। बुजुर्गों के लिए सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करने पर प्रतिबंध ने उनके रोजमर्रा के जीवन के लिए कई समस्याएं पैदा कीं, खासकर उन लोगों के लिए जो टैक्सी या निजी कार का खर्च उठाने में असमर्थ थे । महामारी के साथ उनकी मौजूदा मनोवैज्ञानिक और शारीरिक नाजुकता भी बढ़ गई। कई स्वास्थ्य समस्याओं जैसे उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, मधुमेह, गुर्दे की समस्याओं और रक्तवह तंत्र विकार के लिए दवाओं की आवश्यकता के बावजूद, वे जांच के लिए या अपनी खुराक को नियंत्रित करने के लिए डॉक्टरों के पास नहीं जा सके।

दुर्भाग्य से, बुजुर्गों को समाज में लेबलिंग, कलंक और भेदभाव का सामना करना पड़ता है। स्वास्थ्य या मनोवैज्ञानिक समस्याओं से संबंधित मौजूदा समस्याओं के अलावा, मीडिया में दिखाई देने वाली भेदभावपूर्ण भाषा ने बुजुर्गों को समाज से अलग–थलग और बहिष्कृत महसूस कराया। इस कठिन समय के दौरान उन्हें अपने परिवार और बच्चों से सामाजिक और मनोवैज्ञानिक रूप से सबसे बड़ा समर्थन मिलाय इस बुजुर्ग आबादी की पीढ़ी पर नकारात्मक प्रभाव वर्षों तक रह सकते हैं। सरकार द्वारा लागू प्रतिबंधों के अलावा, बुजुर्गों को अपने बच्चों द्वारा खरीदारी, पड़ोसियों से मिलने, या दोस्तों से मिलने जैसी रोजमर्रा की गतिविधियों पर भी प्रतिबंधों का सामना करना पड़ा। दबाव और नियंत्रण ने उनके डर और चिंता को और बढ़ा दिया। उन्होंने अपने पड़ोसियों या दोस्तों से मिलने और खरीदारी करने जाना बंद कर दिया। इस दौरान या तो उनके बच्चों ने उनके लिए खरीदारी की, या उन्होंने ऑनलाइन खरीदारी शुरू की। इसने, उन्हें ऑनलाइन खरीदारी के अलावा अन्य उद्देश्यों के लिए इंटरनेट के अधिक उपयोग के लिए प्रेरित किया, जैसे कि ऑनलाइन वीडियो संचार कार्यक्रम और अपने दोस्तों के साथ मेलजोल करने हेतु। महामारी के दौरान बुजुर्गों द्वारा फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर, यूट्यूब और व्हाट्सएप जैसी एप्लिकेशन सबसे अधिक पसंद की गईं।

महामारी के दौरान संभावनाओं के अनुरूप बुजुर्गों ने शारीरिक गतिविधियाँ, चलना, इंटरनेट सर्फिंग, फिल्में देखना और हॉबी (पढ़ना, सिलाई करना, ध्यान लगाना, ऑनलाइन पाठ्यक्रमों में भाग लेना) जैसी रणनीतियों का विकास किया। इन गतिविधियों ने उनके मनोवैज्ञानिक और शारीरिक स्वास्थ्य की रक्षा करने में मदद की। हालांकि अधिकांश बुजुर्गों में पहले चलने की आदत नहीं थी, लेकिन उन्होंने प्रतिबंधों के दौरान चलने की प्रथा को अपनाया और जारी रखा।

अंत में, महामारी के दौरान इंटरनेट और नई मीडिया प्रौद्योगिकियां एक महत्वपूर्ण बफर तंत्र रही हैं। बुजुर्गों को उनकी समस्याओं से निपटने में मदद करने और समाजीकरण और मनोरंजन के अवसर प्रदान करने के मामले में इंटरनेट और सामाजिक नेटवर्क एक महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। यह पाया गया कि बुजुर्गों ने शिक्षा, आर्थिक और सामाजिक कारकों के आधार पर इंटरनेट का काफी प्रभावी ढंग से उपयोग किया। उम्र बढ़ने की सक्रिय प्रक्रिया, दैनिक कार्यों को आसान बनाने और स्वस्थ और स्वतंत्र जीवन जीने के लिए नवीन प्रौद्योगिकियां भी महत्वपूर्ण हैं। यह देखते हुए कि बुजुर्गों, महिलाओं और गरीबों जैसे वंचित समूहों के लिए महामारी के दौरान मौजूदा असमानताएं असमानताओं और गहरी हो गई थीं, यह महत्वपूर्ण है कि इन जैसे समूहों को इंटरनेट सदस्यता, स्मार्ट उपकरणों को प्राप्त करने में आर्थिक सहायता, और संबंधित संस्थानों द्वारा उनके उपयोग पर शिक्षा प्रदान की जाए। ■

सभी पत्राचार नाजली बेरिल जेर टेकिन को <btekin@dogus.edu.tr> पर प्रेषित करें।

> अति–वैश्वीकरण से सतत सहयोग के लिए कौन से रास्ते हैं?

हंस–जुर्गन अर्बन, आईजी मेटल और फ्रेडरिक शिलर यूनिवर्सिटी जेना, जर्मनी द्वारा

पूंजीवादी ''अति–वैश्वीकरण'' (दानी रॉड्रिक) की सामाजिक और पारिस्थितिक विकृतियां अत्यधिक वैश्विक समाजशास्त्रीय शोध का विषय रही हैं, विशेष रूप से, पूंजीवादी उत्पादन के तरीके पर, जो इसकी वैश्विक आपूर्ति और मूल्य श्रृंखलाओं के साथ विभिन्न कार्य स्थितियों को उत्पन्न करता है। इन श्रृंखलाओं में आमतौर पर अंतरराष्ट्रीय निगमों का वर्चस्व होता है, जिनका मुख्यालय पूंजीवादी उत्तर के राज्यों में होता है और उनकी आपूर्तिकर्ता कंपनियां ग्लोबल साउथ में होती हैं।

> वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में विषमताएं

वैश्विक अनुसंधान ने इन श्रृंखलाओं के साथ काम करने की परिस्थितियों में अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) के मुख्य श्रम मानकों और बुनियादी मानवाधिकारों के बड़े पैमाने पर उल्लंघन को भी दिखाया है। पूंजीवादी उत्तर में मूल उपकरण निर्माताओं (ओईएम) से लेकर ग्लोबल साउथ में मध्यवर्ती उत्पादों (आपूर्तिकर्ताओं) के उत्पादकों तक, खराब कामकाजी परिस्थितियों और उच्च स्वास्थ्य जोखिमों की प्रवृत्ति देखी जा सकती है। यह भौगोलिक असमानता विभिन्न पर्यावरणीय कारकों द्वारा पूरक होती है जो स्वास्थ्य के लिए खतरा पैदा करते हैं।

काम की वास्तविकता और उपर्युक्त कानूनी और नैतिक मानदंडों के बीच इस स्पष्ट विसंगति को समाप्त किए बिना, अति–वैश्वीकरण से, स्थायी सहयोग में रूपांतरण सफल नहीं हो सकता है। काम के बोझ और स्वास्थ्य के अवसरों के वितरण में विषम संरचना लगातार सुधार प्राप्त करने के लिए श्रमिकों के प्रतिरोध और ट्रेड यूनियन पहल के लिए एक आवर्ती प्रारंभिक बिंदु है। यद्यपि, परिवर्तन को लाना कठिन है क्योंकि बोझ का आसमान वितरण, लाभ और लागत के असमान वितरण से मेल खाता है। अबाधित आपूर्ति और उत्पादन संबंधों के आर्थिक लाभ पूंजीवादी उत्तर के देशों में ओईएम के मालिकों के साथ केंद्रित हैं। इस प्रकार वे वैश्विक शक्ति और विशेषाधिकार वाले लोगों को लाभ पहुँचाते हैं। अब तक केवल कुछ मामलों में ही आपूर्ति श्रृंखलाओं के साथ श्रम संघ शक्ति संरचना का निर्माण करना या महानगरीय राज्यों की सरकारों को प्रभावी सामाजिक और पारिस्थितिक नियमों को लागू करने के लिए राजी करना संभव हो पाया है।

> टिप्पिंग बिंदु पर पूंजीवादी वैश्वीकरण?

हालाँकि, 2008 के महान वित्तीय संकट के साथ–साथ वैश्विक कोविड–19 महामारी ने पूंजीवादी अति–वैश्वीकरण के स्याह पक्ष को इस समूह के मुनाफाखोरों के लिए भी बोधगम्य बना दिया है। एक असंगठित ''जंगली संरक्षणवाद'' के पुनर्जागरण ने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं और मूल्य निर्माण प्रक्रियाओं को तोड़ दिया। विक्रय बाजार अचानक बंद हो गए और प्राथमिक उत्पादों की कमी के कारण उत्पादन में रुकावट आई। हालांकि कुछ मामलों में नए आपूर्तिकर्ताओं को ढूंढना और वैकल्पिक विक्रय क्षेत्रों को खोलना संभव था, परन्तु बढ़ती खरीद लागत और अतिरिक्त बाजार विकास लागत ने फिर भी मुनाफे पर दबाव डाला।

एक दूसरा घटनाक्रम भी हुआ है। पूंजीवादी महानगरों में, आश्रित लाभकारी रोजगार के विभाजन और अनिश्चितता ने वंचित श्रमिकों के क्षेत्रों को जन्म दिया है। वे मजदूरी के सामाजिक रूप में या आश्रित स्व–रोजगार के रूप में,काम, स्वास्थ्य और पर्यावरणीय बोझ के मामले में विभिन्न डिग्री के नुकसान के साथ, मौजूद हैं। जर्मनी में कोरोना महामारी के दौरान, यह मांस उद्योग में दक्षिण–पूर्वी यूरोप के श्रमिकों की निंदनीय कार्य स्थितियों से स्पष्ट हुआ । यहां, कम से कम जर्मन ट्रेड यूनियनों के दबाव के कारण, जर्मन विधायकों द्वारा बनाए गए न्यूनतम कानूनी रूप से निर्धारित स्वच्छता और संक्रमण सुरक्षा उपायों की भी कमी थी। इन गैरकानूनी और अमानवीय स्थितियों के मीडिया कवरेज ने जिम्मेदार कॉर्पोरेट और राजनीतिक कर्ताओं पर काफी दबाव डाला।

तीसरा घटनाक्रम यूरोप में विधायी हस्तक्षेप है जो वहां मुख्यालय वाले निगमों पर नए उचित परिश्रम दायित्वों को लागू करता है। यह दक्षिण में आपूर्तिकर्ताओं की कामकाजी परिस्थितियों पर सकारात्मक प्रभाव के अवसर खोल सकता है। उदाहरण के लिए, जर्मनी में एक तथाकथित *आपूर्ति श्रृंखला कानून* (“Lieferkettensorgfaltspflicht &Gesetz”) को एक सामाजिक गठबंधन के दबाव में आगे बढ़ाया गया। और 2021 में, यूरोपीय संसद ने *Directive on Corporate Due Diligence and Corporate Accountability* के मसौदे को मंजूरी दी। भले ही इन नियमों की प्रभावशीलता निश्चित नहीं है, ये कंपनी और ट्रेड यूनियन पहलों के लिए शुरुआती बिंदु हो सकते हैं।

वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं की भेद्यता, जो एक बार फिर महामारी में स्पष्ट हो गई है, ने एक अति–विस्तारित वैश्वीकरण के जोखिमों और तर्कसंगतता पर एक बहस को जन्म दिया है। उदाहरण के लिए, जर्मन अर्थशास्त्री सेबेस्टियन डुलियन ने सवाल किया है कि क्या उत्पादन अर्थव्यवस्था के वैश्वीकरण ने अपने इष्टतम बिंदु को पार कर लिया है और आगे के वैश्वीकरण की सीमांत उपयोगिता अब जोखिमों की भरपाई नहीं कर सकती है। वित्तीय बाजार संकट और कोरोना महामारी के कारण हुई भारी क्षति और पीड़ा को देखते हुए, विशेष रूप से ग्लोबल साउथ में, ट्रेड यूनियनों और अन्य कर्ताओं को वैश्वीकरण के मार्ग में संभावित परिवर्तन की पहचान करने के कार्य का सामना करना पड़ रहा है। तेजी से कमजोर होते वैश्वीकरण की लागत, प्रवासी श्रमिकों के अति–शोषण के प्रति बढ़ती

>>

"अब तक केवल कुछ मामलों में ही आपूर्ति श्रृंखलाओं के साथ श्रम संघ शक्ति संरचना का निर्माण करना या महानगरीय राज्यों की सरकारों को प्रभावी सामाजिक और पारिस्थितिक नियमों को लागू करने के लिए राजी करना संभव हो पाया है।"

संवेदनशीलता, और अंतरराष्ट्रीय निगमों के सम्यक उद्यम को मजबूत करने की पहल, वैश्विक अर्थव्यवस्था के सामाजिक और पारिस्थितिक विनियमन के उद्देश्य से गतिविधियों के लिए नई परिस्थितियों का निर्माण कर रही है।

> एक वैश्विक जन समाजशास्त्र की अनुसंधान रेखाएं

वैश्विक समाजशास्त्रीय संवाद के लिए इसका क्या अर्थ होना चाहिए? इस ऐतिहासिक समूह में काम करने की स्थिति में सुधार के लिए विवेचनात्मक सामाजिक विज्ञान कैसे योगदान दे सकता है? सबसे पहले, जिन देशों में वैश्विक मूल्य श्रृंखलाएं स्थित हैं, वहां के शोधकर्ताओं को एक सामान्य समाजशास्त्रीय आत्म–समझ और अनुसंधान की सामान्य पद्धतियों सहमत होना होगा। माइकल बुरावॉय का *वैश्विक जन समाजशास्त्र* का सिद्धांत, जिसने पहले से ही प्रभावशाली शोध निष्कर्ष तैयार किये हैं, इसके लिए एक उपयुक्त आधार होगा। श्रम समाजशास्त्र के दृष्टिकोण से, कार्य की पारिस्थितिकी की ओर उन्मुख अनुसंधान की एक पद्धति उपयोगी होगी। सामाजिक–पारिस्थितिकीय नियमों और वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं के साथ न्यूनतम मानकों के कार्यान्वयन के लिए हितों, रणनीतियों और बाधाओं में अधिक शोध की आवश्यकता है।

आर्थिक, पारिस्थितिक और कानूनी समस्याओं के परस्पर संबंध के लिए भी अनुसंधान की आवश्यकता होती है जिसमें राजनीतिक अर्थव्यवस्था, सामाजिक–आर्थिक और मानवाधिकार के दृष्टिकोण परस्पर जुड़े हुए हों। श्रम, समाज और प्रकृति के सतत पुनरुत्पादन के पहलुओं को सामान्य शोध प्रश्नों में बांधा जाना चाहिए। *मजदूर वर्ग के पर्यावरणवाद* या *पर्यावरण श्रम अध्ययन* के लेबल के तहत अनुसंधान, यहां प्रारंभिक बिंदु प्रदान कर सकता है।

एक संगठनात्मक समाजशास्त्र की ओर उन्मुख अनुसंधान की एक पद्धति भी आवश्यक होगी। अब तक, राष्ट्रीय ट्रेड यूनियनों के शक्ति संसाधनों को अंतरराष्ट्रीय छत्रक संगठन बनाकर गठबंधन करने का प्रयास असंतोषजनक रहा है। वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं के साथ ट्रेड श्रम संगठन शक्ति संरचनाओं के निर्माण के प्रयासों में भी बड़ी बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जैसे अपर्याप्त वित्तीय और मानव संसाधन और राष्ट्रीय और ट्रेड यूनियन परंपराओं द्वारा पोषित सांस्कृतिक दरार, जो विशेष रूप से दक्षिणी श्रम संघों और कंपनी–आधारित हित समूहों में देखने को मिलती है । अनुसंधान से यह पता लगाना चाहिए कि क्या अति–वैश्वीकरण के परिणामों से संयुक्त रूप से प्रभावित होने का अनुभव भी संयुक्त रणनीति–निर्माण प्रक्रियाओं को बढ़ावा दे सकता है।

> दृष्टिकोण

समाजशास्त्रीय अनुसंधान ने दर्शाया है कि अति–वैश्वीकरण से स्थायी सहयोग के शासन में रूपांतरण, ज्ञान की कमी से कम तथा इच्छा और शक्ति संरचनाओं से अधिक अवरुद्ध है। इन्हें केवल नए शोध प्रयासों से समाप्त नहीं किया जा सकता है। लेकिन उत्पादन की तर्कसंगतता और वैश्विक पूंजीवाद में मूल्य वर्धित संबंधों के बारे में बढ़ते संदेह ने अवसरों को खोला है। यदि वैश्विक समाजशास्त्र, विवेचनात्मक अनुसंधान के साथ इस नई जागरूकता के साथ आता है, तो सहयोग के नए क्षेत्र और वैश्विक सार्वजनिक समाजशास्त्र के नए अवसर पैदा हो सकते हैं। ■

सभी पत्राचार हन्स–जुर्गन अर्बन को <Hans-Juergen.Urban@igmetall.de> पर प्रेषित करें।

> प्रकृति लौटती है :

वोल्कलिंगर हुट्टे, यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल

वोल्कलिंगर हुट्टे https://voelklinger-huette.org/en/ औद्योगिक युग के लौहकार्य की एकमात्र पूरी तरह से बरकरार साइट और यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल है जो उत्पादन के इस स्थान के साथ साथ यह भी दिखाता है कि प्रकृति कैसे लौटती है?

चित्र : मैक्स औलेनबैकर द्वारा। वोल्कलिंगर हुट्टे यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के संचार, मीडिया और प्रेस विभाग के सौजन्य से *ग्लोबल डायलॉग* में तस्वीरों का प्रकाशन। ■

सभी पत्राचार मैक्स औलेनबैकर को <max.aulenbacher@t-online.de> पर प्रेषित करें।

>>

>>

> ऊपर क्यों देखें?

दक्षिणपंथी ''लोकलुभावनवाद'' पर कार्ल पोलानयी

सांग हुन लिम, क्यूंग ही विश्वविद्यालय, दक्षिण कोरिया द्वारा

श्रेय: इवानरेडिक/फ्लिकर

पोलानयी नवउदारवादी वैश्वीकरण द्वारा पीछे छोड़ दिए गए द्वारा कट्टरपंथी दक्षिणपंथी राजनीति के हालिया उदय की व्याख्या अक्सर एक लोकलुभावन सामाजिक संरक्षण आंदोलन के रूप में की जाती है। सामाजिक आलोचक प्रगतिशील राजनेताओं और बुद्धिजीवियों की आलोचना करते हैं जिन्होंने ''तीसरे मार्ग'' के नाम पर बाजार अर्थव्यवस्था को स्वीकार किया है और सामाजिक और आर्थिक वर्ग असमानताओं की अनदेखी करते हुए पहचान की राजनीति, जैसे कि लिंग और जातीयता पर ध्यान केंद्रित किया है। एक समाधान के रूप में, वे ''वामपंथी लोकलुभावनवाद'' को बढ़ावा देने का सुझाव देते हैं, जो निचले–मध्य और कामकाजी वर्गों को कट्टरपंथी दक्षिणपंथी बयानबाजी से अधिक खुले और समतावादी प्रगतिशील लोकलुभावनवाद की ओर ले जाने का एक तरीका है।

मेरे लेख के लिए प्रेरणा (''लुक उप रादर देन डाउन'', *करंट सोशियोलॉजी*, 2021, ऑनलाइन फर्स्ट) इस विचार पर सवाल उठाने से उपजी है कि व्याकुल ''लोग'' दक्षिणपंथी राजनीति के उदय के लिए दोषी हैं। लोकलुभावनवाद के रूप में कट्टरपंथी दक्षिण पंथी राजनीति की पहचान इस तथ्य की व्याख्या नहीं कर सकती है कि कई उच्च और मध्यम वर्ग के ''अभिजात वर्ग'' भी कट्टरपंथी दक्षिणपंथी दलों और नीतियों का समर्थन करते हैं, और यह कि अधिकांश कट्टरपंथी दक्षिणपंथी दल एक नवउदारवादी कार्य नीति का समर्थन करते हैं। वे कल्याण प्राप्तकर्ताओं को उनकी राष्ट्रीयता की परवाह किए बिना दोष देते हैं। अंतर–युद्ध काल के दौरान फासीवाद पर कार्ल पोलानयी का (1886–1964) लेखन कट्टरपंथी दक्षिणपंथी राजनीति की पहेली को समझने के लिए अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। जैसा कि सर्वविदित है, पोलानी आधुनिक पूंजीवादी बाजार अर्थव्यवस्था के आलोचक थे। वे ''दोहरे आंदोलन'' –स्व–विनियमन बाजार की प्रगति और सामाजिक सुरक्षा के लिए प्रति–आंदोलनों के बीच संघर्ष –के अपने विचार के साथ आधुनिक पूंजीवादी सभ्यता के विकास (और, उनके विचार में, पतन), जो की के रूप में व्याख्या करते हैं। तदनुसार, पोलैनियन विद्वान अक्सर कट्टरपंथी दक्षिणपंथी राजनीति की व्याख्या पूंजीवाद के नुकसान के खिलाफ जनता द्वारा एक प्रकार के सामाजिक संरक्षण आंदोलन के रूप में करते हैं। हालांकि, पोलानयी खुद, फासीवाद को पूंजीवादी अभिजात वर्ग द्वारा, स्व–विनियमन बाजार अर्थव्यवस्था की रक्षा के लिए एक चरम आंदोलन के रूप में देखते थे।

> कार्ल पोलानयी का दोहरा आंदोलन और फासीवाद

पोलानयी का तर्क है कि उदार अर्थशास्त्रियों और पूंजीपतियों ने अर्थव्यवस्था को ''जनता'' के हस्तक्षेप से बचाने का प्रयास किया है। स्व–विनियमन बाजार– श्रम, भूमि और धन के वस्तुकरण के माध्यम से लोगों के मानव और सामाजिक जीवन के आधार पर अतिक्रमण करता है। जो लोग इस ''छद्म वस्तुकरण ।'' के कारण अपनी आजीविका और सामाजिक संबंधों से वंचित हैं, वे स्व–विनियमन बाजार द्वारा इस अतिक्रमण से खुद को बचाना चाहेंगे। स्व–विनियमन बाजार की रक्षा करने के इच्छुक लोगों के लिए, अर्थव्यवस्था पर जनता का सुरक्षात्मक प्रभाव बाजार के ''प्राकृतिक'' कामकाज को विकृत करता है, जो कम उत्पादकता और अंततः, माल्थुसियन सर्वनाश की ओर जाता है।

ऐतिहासिक रूप से, पूंजीपतियों ने मुक्त बाजार की सुरक्षा और लोकतांत्रिक राजनीति के बीच एक समझौता पाया है। हालाँकि, तीव्र आर्थिक मंदी के कारण लोकतांत्रिक ताकतों का दबाव बढ़ जाता है और अंततः, दोनों पक्षों के बीच गतिरोध उत्पन्न हो जाता है।

>>

1930 के दशक की महामंदी के दौरान यही स्थिति थी। फासीवाद एक ''सरल मार्ग'' के रूप में प्रकट हुआ, जिसने लोकतंत्र को नष्ट करके पूंजीवादी बाजार अर्थव्यवस्था को बचाया और पूंजीवाद को व्यक्तिवादी से निगमवादी प्रणाली में बदला, जो लोगों को ''सामान्य अच्छे'' के लिए उत्पादक रूप से योगदान करने के लिए अनुशासित करती है। पोलानयी हमें याद दिलाते हैं कि अंतर–युद्ध फासीवादी नेताओं में से किसी ने भी, यहां तक कि हिटलर ने भी, राजनीतिक और आर्थिक अभिजात वर्ग के समर्थन के बिना राजनीतिक सत्ता हासिल नहीं की।

बेशक, 1930 के दशक का फासीवाद वर्तमान राजनीतिक स्थिति के समान नहीं है। अक्सर बताया जाने वाला अंतर यह है कि वर्तमान कट्टरपंथी दक्षिणपंथी राजनेता लोकतांत्रिक संस्थानों को खुले तौर पर गले लगाते हैं। हालांकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि नए लोकतंत्रों में कट्टरपंथी दक्षिणपंथी राजनीति अक्सर उनके लोकतंत्र को ''अशिष्ट लोकतंत्र'' या यहां तक कि ''चुनावी तानाशाही'' में बदल देती है। इसके अलावा, हाल के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव के बाद की राजनीतिक अशांति से पता चलता है कि चुनाव, जो कि एक मौलिक लोकतांत्रिक संस्था है, को भी एक स्थिर लगने वाले लोकतंत्र में चुनौती दी जा सकती है।

> पोलानयी का फासीवाद और वर्तमान दक्षिणपंथी राजनीति

जैसा कि मेरे लेख के शीर्षक से पता चलता है, पोलानयी हमें कट्टरपंथी दक्षिणपंथी राजनीति के सशक्तिकरण का निदान करने के लिए नीचे देखने के बजाय ''ऊपर देखने'' के लिए कहते हैं। कट्टरपंथी दक्षिणपंथी राजनीति की जीत को रोकने के लिए, हमें उच्च और मध्यम वर्गों को विभाजित करने की आवश्यकता है, कम से कम इस स्तर पर कि निम्न और निम्न–मध्य वर्गों को एकजुट करने के लिए। इस तरह, हम संसाधनों और सूचनाओं के संकेन्द्रण को रोक सकते हैं, जिन्हें पूंजीवादी अभिजात वर्ग, प्रगतिशील सरकारों द्व ारा प्रचारित सामाजिक सुरक्षा नीतियों को निराश करने के लिए जुटा सकते हैं, जिसने अंतर–युद्ध की अवधि में, लोकतंत्र और पूंजीवाद के बीच गतिरोध को और खराब कर दिया और एक फासीवादी समाधान के लिए जमीन जोत दी।

हम उच्च और मध्यम वर्ग के कुलीन वर्ग को कैसे विभाजित कर सकते हैं? एक अर्थ में, पहचान की राजनीति के साथ पुनर्संरेखण ने सामाजिक वर्ग और दलीय विचारधाराओं के बीच की कड़ी को धुंधला कर दिया है। यह पुनर्संरेखण उच्च और मध्यम वर्ग के सदस्यों को विभाजित करता है, तथा उनमें से कई को प्रगतिशील पक्ष की ओर खींचता है। बेशक, जैसा कि नैन्सी फ्रेजर के आलोचनात्मक शब्द ''प्रगतिशील नवउदारवादी'' में निहित है, वहां वर्ग संघर्षों और आर्थिक असमानता को अनदेखा करने का खतरा है। हालांकि, इसे नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए कि पहचान की राजनीति के मुद्दों ने कई उच्च और मध्यम वर्ग के सदस्यों को प्रगतिशील दलों के साथ जोड़ दिया है।

अभिजात वर्ग को विभाजित करने का एक और संभावित तरीका सार्वभौमिक सामाजिक नीतियों में पाया जा सकता है। थॉमस पिकेटी ने प्रसिद्ध रूप से दिखाया कि गंभीर संपत्ति असमानता, आय असमानता को पीछे छोड़ती है। कई युवा पेशेवर जो आय–समृद्ध हैं, लेकिन संपत्ति–गरीब हैं, वे आय के भावी नुकसान के साथ–साथ तकनीकी और औद्योगिक परिवर्तनों के कारण उनके व्यावसायिकता के मूल्य में संभावित कमी के खिलाफ बीमा कराना चाहते हैं। प्रगतिशील दल सार्वभौमिक कल्याणकारी नीतियों को बढ़ावा दे सकते हैं, जिससे न केवल निम्न वर्ग बल्कि उच्च–मध्यम वर्ग के पेशेवरों को भी लाभ होता है। विशेष रूप से, एक फ्लैट–दर समतावादी पुनर्वितरण प्रणाली के साथ एक आय–संबंधी सामाजिक बीमा योजना उन उच्च–आय और निम्न–परिसंपत्ति पेशेवरों को लुभाने में सक्षम हो सकती है ।

> निष्कर्ष

दक्षिणपंथी राजनीति की व्याख्या एक ''लोकलुभावन'' सामाजिक सुरक्षा आंदोलन के रूप में करने से, हम नवउदारवादी वैश्वीकरण के पीड़ितों पर इस तरह की राजनीति के लिए जिम्मेदारी थोपते हुए ''नीचे की ओर देखते हैं''। फासीवाद का पोलानयी निदान, हमें पूंजीवादी अभिजात वर्ग के लिए ''ऊपर की ओर देखने'' के लिए प्रेरित करता है, जिनके संसाधनों और सूचनाओं के प्रावधान के बिना, कट्टरपंथी दक्षिणपंथी राजनेता शायद ही राजनीतिक सत्ता हासिल कर सकते हैं। पोलानयी हमें याद दिलाते हैं कि, उनके सभी लोकलुभावन बयानबाजी के बावजूद, कट्टरपंथी दक्षिणपंथी राजनेता बाजार अर्थव्यवस्था के समर्थक रहे हैं। यदि हम पोलानयी के फासीवाद के राजनीतिक सशक्तिकरण के निदान को, स्व–विनियमन बाजार की रक्षा के लिए , कुलीनों के प्रयास के रूप में स्वीकार करते हैं, तो हमें विचार करना चाहिए कि पूंजीवादी अभिजात वर्ग को कैसे विभाजित करते हुए निम्न वर्गों के बीच एकता को बढ़ावा दिया जाए। ■

सभी पत्राचार लिम सांग हुन को <limsanghun@khu.ac.kr> पर प्रेषित करें।

> हत्या के अपराधियों की कहानियों से सीख

मार्टिन हर्नान डि मार्को, ओस्लो विश्वविद्यालय, नॉर्वे और जीवनी और समाज पर आईएसए अनुसंधान समिति (आरसी 38) के सदस्य द्वारा

ब्यूनस आयर्स में सैनमार्टिन जेल (छोटी तस्वीर), और देवोटो संघीय जेल (बड़ी तस्वीर)। श्रेयः मार्टिन हर्नान डि मार्को।

सामाजिक विज्ञान और मनोविज्ञान से लेकर कानून, साहित्य और सिनेमा तक कई क्षेत्रों में हत्याओं को संबोधित किया गया है। जैसा कि ओरियन बिनिक कहते हैं, हिंसा के प्रति आकर्षण अकादमिक और सामान्य सिद्धांतों की श्रृंखला द्वारा सचित्र है जो इस विषय के बारे में हम कैसे सोचते हैं पर सवाल उठाते हैं। यद्यपि, खलनायकीकरण, मिथ्याकरण, चिकित्सियाकरण या इस आधार से सोचना कि अपराधियों के कृत्य अतार्किक हैं, ने इनके पीछे की सामाजिक प्रक्रियाओं को पूरी तरह से समझने की सम्भावना को कमतर किया है।

इस विषय में एक केंद्रीय विरोधाभास यह है कि हत्या के अपराधियों की कहानियों और आत्मकथाओं का उनकी अपनी स्थिति और तर्कों को ध्यान में रखते हुए शायद ही कभी अध्ययन किया जाता है। हिंसक मौतों की विशेषताओं के बारे में व्यापक अकादमिक शोध ने सूक्ष्म, मध्य और मैक्रो स्तरों पर ज्ञान को व्यापक बनाया है। जहाँ इस जोर ने सांख्यिकीय प्रवृत्तियों और प्रमुख चर (जैसे आयु, लिंग और सामाजिक आर्थिक स्थिति) के ज्ञान को न्यायोचित रूप से विस्तृत किया है, परन्तु यह कथानक् प्रक्रियाओं के व्यापक विश्लेषण के लिए हानिकारक रहा है।

> हत्या के अपराधियों की विश्वदृष्टिः अनुभवजन्य समझ के लिए एक याचिका

हिंसा के मानवविज्ञान क्षेत्र में अग्रणी, डेविड रिचेस ने कहा कि इस क्षेत्र की एक प्रमुख विशेषता यह है कि ''हिंसा'' गवाहों और पीड़ितों द्वारा नियोजित एक शब्द है, लेकिन इसके निर्वाहकों की व्यक्तिपरक व्याख्या आमतौर पर गायब होती है। चूंकि मात्रात्मक डेटा पर अधिक ध्यान दिया जाता है, इसलिए अपराधियों द्वारा हिंसा को तर्कसंगत बनाने और अनुभव करने के विशिष्ट तरीके कम ज्ञात हैं।

हम अपराधियों के दृष्टिकोण से क्या सीख सकते हैं? पुरुष–पुरुष हत्याकांड को समझने में उनकी कहानियां और जीवन कैसे योगदान

>>

करते हैं? कथानक् अपराध विज्ञान पर आधारित, मेरे पीएचडी शोध का उद्देश्य अपराधियों द्वारा नियोजित आख्यानों को समझना और उनकी कहानियों में इन घटनाओं के महत्व का विश्लेषण करना रहा है। अपने डिजाइन द्वारा, यह दृष्टिकोण एक पदार्थवादी विश्लेषण से बचता है और यह इस बात को उजागर करने की कोशिश करता है कि हिंसक प्रथाओं से जुड़े अर्थ प्रत्येक सामाजिक समूह में ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से आकार लेते हैं।

> एक कथानक् और जीवनी दृष्टिकोण

इस अध्ययन में मेट्रोपॉलिटन ब्यूनस आयर्स, अर्जेंटीना में पुरुष अपराधियों के साथ 72 कथा साक्षात्कारों के निदर्श से डाटा लिया गया था। निदर्शन मानदंड फिट करने के लिए, वे प्रतिभागी लिए गए थे जिन पर पर झगड़े और पारस्परिक विवादों के संदर्भ में इरादतन पुरुष–पुरुष हत्या का आरोप लगाया गया था। साक्षात्कारों ने उन सम्भाषणो और समय अवधि का अनुसरण किया, जिसे इन पुरुषों द्वारा तलाशने के लिए चुना गया। ब्रेकेटिंग प्रक्रिया –जिसमे व्यक्तिगत अनुभवों और विश्वासों को अलग रखा जाता है – इस विश्लेषण में महत्वपूर्ण थी। फील्डवर्क, संघीय और प्रांतीय जेलों में क्षेत्रीय कार्य के साथ–साथ उन पुरुषों, जिन्होंने अपनी सजा पूरी कर ली थी, के घरों में भी क्षेत्रीय कार्य आयोजित किया गया था ।

प्रत्येक प्रतिभागी को उसके साथ किए गए साक्षात्कारों के प्रतिलेख प्रदान किये गए, और प्रतिभागी के साथ मिलकर उनकी एक संक्षिप्त पुनर्निर्मित जीवन कहानी लिखी गई। एक खुली और अक्षीय कोडिंग प्रक्रिया का पालन किया गया। यह लेख दो डोमेन पर केंद्रित है: जीवनी संबंधी मोड़ (एक चौराहे के रूप में पहचाने गए क्षण) और तर्कसंगतता (घटनाओं को अर्थ देने वाले प्रतिभागी स्पष्टीकरण)।

> हिंसक मौतें: अर्थ और कहानियां

उन तरीकों की खोज करना जिनसे अपराधियों ने हत्या को अर्थ दिया, एक दिलचस्प और फलदायी प्रयास निकला। पुरुषों ने कैसे हिंसा और हिंसक मौत को प्रस्तुत किया और संकेत दिया, इसके बारे में तीन मुख्य बिंदु सामने आते हैं।

सबसे पहले, शारीरिक हिंसा के बारे में बात की गई और इसे विविध और बदलते तरीकों से प्रस्तुत किया गया। हिंसा को सहज, प्राकृतिक, भावनात्मक स्थिति का तार्किक परिणाम या स्थितिजन्य गतिशील के रूप में वर्णित किया गया थाय इसे एक आवश्यक उपकरण, सजा के एक रूप तथा सम्मान, मर्दानगी, और प्रस्थिति के एक पुनर्स्थापनात्मक अभ्यास के रूप में देखा गया थाय यह एक अनपेक्षित कार्रवाई भी थी, या सामाजिक परिस्थितियों द्वारा मजबूर एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना थी। एक व्यवहार और संसाधन के रूप में हिंसा एक बहुसंयोजी क्रिया है। इसे बेअसर और युक्तिसंगत बनाने के लिए, पुरुषों ने इसे न्यूनतम करने वाली एजेंसी का सहारा लिया, पश्चाताप की भावनाओं को हटा दिया और कुछ प्रमुख कथानकों के साथ खुद को संरेखित किया (जैसे ''मेरे पास कोई विकल्प नहीं था,'' ''उसके लिए ऐसा होना ही था,'' ''मैं नियंत्रण से बाहर था'', ''यह मेरी परवरिश थी, मैं नहीं'')। इसलिए, हिंसा में कभी भी अर्थ की कमी नहीं थी, और यह अंततः कर्त्ताओ द्वारा नियोजित एक वैध संसाधन था।

दूसरा, मानसिक स्वास्थ्य क्षेत्र में मेरी प्रारंभिक परिकल्पना और आधिपत्य सिद्धांतों के विपरीत जो हिंसा के प्रदर्शन की ''दर्दनाक'' प्रकृति का चिकत्सीयकरण करते हैं, हत्या को मुख्य रूप से एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया था। उनके माता–पिता का छोड़ जाना, आर्थिक संकट के संदर्भ में नौकरी छूटना, रोमांटिक ब्रेक–अप, मित्र बनाना या खोना, और विशेष रूप से, कैद होना उनके जीवन की कहानियों में महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है। इन घटनाओं ने उनके ''स्व'' तथा जिस तरह से वे खुद को और दूसरों को देखते हैं, को बदल दिया। हालांकि, हत्याकांड को शायद ही कभी दोराहों के क्षण के रूप में प्रस्तुत किया गया था।

यह तथ्य है कि हत्या से अधिक, कारावास को एक प्रमुख घटना के रूप में वर्णित किया गया था, जो इस बात से सम्बंधित था कि यह संस्था उनके लिए क्या अर्थ रखती है। उसे उनके जीवन के ''सबसे निचले'' पल की रूप में, अपने जीवन को बदलने और पुनरुपित करने, पूर्व के स्व से या समाज द्वारा निर्धारित एक घटना से छुटकारा पाने के एक अवसर के रूप में प्रस्तुत किया गया था।

तीसरा, जेल, हत्या, और पूर्व की कठोर महत्वपूर्ण घटनाओं को मुख्य रूप से ''सीखने के अनुभव'' के रूप में प्रस्तुत किया गया था। साक्षात्कारदाताओं द्वारा नियोजित प्रचलित सम्भाषणों ने हानिकारक अनुभवों का सकारात्मक मूल्यांकन किया। कारावास, झगड़े, रिश्तेदारों और दोस्तों के साथ संपर्क खोने को परिपक्वता, व्यक्तिगत विकास, व्यक्तिपरक परिवर्तन, या मजबूती के क्षणों के रूप में डिकोड किया गया था। एक हिंसक मौत एक नए ''स्व'' का उद्घाटन कर सकती है। यह तर्कसंगतता न केवल आधिपत्य पुरुषत्व से गहराई से जुड़ी हुई है, अपितु जेल में परिसंचारी सम्भाषणो (जैसे, मनोविज्ञान, कोचिंग, धर्म, पुनर्वास और सामाजिक कार्य उपकरण) से भी जुड़ी है जो कहानियों को आकार देती हैं।

> समापन टिप्पणी

जैसा कि सामाजिक अंतःक्रियावादियों ने दशकों से जोर दिया है, सामाजिक वास्तविकता को समझने और पूर्व–स्थापित वैज्ञानिक श्रेणियों के भीतर इसे बदलने से बचने के लिए सामाजिक कर्त्ताओं के परिप्रेक्ष्य की रक्षा करना आवश्यक है। जहाँ हत्या के बारे में विद्वानों के सिद्धांतों की अधिकता है – जिसमे अपराधी के जीवन में मृत्यु के लगभग सार्वभौमिक ''दर्दनाक'' प्रभाव को संदर्भित करना शामिल है,– इसमें केवल अर्थ–निर्माण के बारे में अनुभवजन्य अन्वेषण, घटना की व्यापक समझ में योगदान कर सकते हैं। अकादमिक और सामान्य ज्ञान में, हत्या को एक अस्तित्वगत क्षण और एक तर्कहीन, विक्षिप्त या अनैतिक कार्य से जोड़ा है। यह शोध अन्यथा दिखाता है।

मौजूदा डेटा, सिद्धांतों, रूपरेखाओं और संस्थागत उपकरणों पर पुनर्विचार करना, जो उनके लिए अनुभवजन्य आधार के बिना हिंसा के कुछ अर्थ बताते हैं, जांच का एक योग्य मार्ग है, जो अभी भी काफी हद तक अनदेखा है। ■

सभी पत्राचार मार्टिन हेर्नान दी मार्को को <mh.dimarco@gmail.com> पर निर्देशित करें।

> ब्राजील में डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से वितरण कार्य

ब्रुना दा पेन्हा और **एना बीट्रिज ब्यूनो,** रियो डी जनेरियो राज्य विश्वविद्यालय (यूईआरजे), ब्राजील द्वारा

कोविड–19 महामारी की शुरुआत में ब्राजील में डिलीवरीकर्मी।
श्रेयः मार्सेलो रेंडा/पेक्सल्स।

प्राथमिक अनुभवजन्य डेटा और समाजशास्त्रीय प्रतिबिंब के आधार पर, हम ब्राजील में डिलीवरी श्रमिकों की कामकाजी परिस्थितियों पर महामारी के प्रभाव की जांच करते हैं। हम यह भी विश्लेषण करना चाहते हैं कि, क्या यह प्रभाव श्रमिकों की असमानता की व्यक्तिपरक समझ को भी प्रभावित कर सकता है। हम इस परिकल्पना से शुरू करते हैं कि स्वास्थ्य संकट ने ऐसी असमानता (पूंजीवाद के लिए आंतरिक) नहीं बनाई है, बल्कि इसे बढ़ा दिया है। अर्थात, इसने काम के घंटों, भुगतान और जोखिमों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, श्रम–पूंजी संघर्ष के अंतर्विरोधों को गहरा करते हुए, काम करने की स्थिति में गिरावट को संभावित बना दिया है। हमारे अनुभवजन्य शोध में, हमने ब्राजील में एक सौ डिजिटल प्लेटफॉर्म वितरितकर्ताओं के निदर्श के साथ, एक मूल डेटाबेस का उपयोग किया हैं। ये डेटा ब्राजील के दक्षिण–पूर्व, उत्तर–पूर्व और मध्य–पश्चिम क्षेत्रों में वितरितकर्ताओं के समूहों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, सोशल नेटवर्क्स के माध्यम से *गूगल फॉर्म* द्वारा उत्तर प्राप्त किए गए थे। उत्तर मार्च और मई 2021 के बीच प्राप्त हुए, और इसमें मात्रात्मक और गुणात्मक डेटा दोनों सम्मिलित हैं।

> उबेरीकरण और श्रम–पूंजी संघर्ष

श्रम के उबेरीकरण (सर्वोचिकरण) को एक पूर्ण ऐतिहासिक नवीनता के रूप में समझने से दूर, हमें इसे सामाजिक भौतिकता के भीतर स्थापित करना चाहिए। अर्थात, यह उस तरह से असंगतता या विचलन का प्रतिनिधित्व नहीं करता है जिस तरह से पूंजीवादी संचय के पैटर्न को उसके मूल के बाद से बनाए रखा गया है। उबेरीकृत कार्य की सामाजिक सम्बन्धी विशेषता, श्रम शक्ति का एक वस्तुकरण है, जिसकी आवश्यकता को जीवन के साधनों के स्वामित्वहरण द्वारा समझाया गया है। यह पूंजीवाद में अधीनस्थ श्रम की सामाजिक स्थिति है और इसलिए वह कानूनी स्थिति से स्वतंत्र है।

>>

जहाँ उबेराइजेशन को एक ऐतिहासिक नवीनता के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए,परन्तु समकालीन परिदृश्य में इस घटना की रूपरेखा को समझना आवश्यक है। ब्राजील में डिलीवरी श्रमिकों के मामले में, श्रमिकों और प्लेटफार्मों के बीच संबंधों में असमानता की धारणा काफी हद तक काम के दैनिक और शहरी अनुभव के बंटवारे पर आधारित प्रतीत होती है। भले ही कार्य प्रक्रिया का विखंडन बढ़ रहा है, परन्तु शहर से सवारी करते गुजरने और दूसरों से मिलने से, इस संबंध के बारे में अपने स्वयं के अर्थ उत्पन्न करते हैं।

इसके अलावा, प्रमुख रूप से संबंधपरक होने के कारण, वितरण की गतिविधि मानव कार्य की सबसे बुनियादी विशेषता को स्पष्ट करती हैः तथ्य यह है कि यह वास्तविकता की मध्यस्थता और अंतःविषय संबंधों के विकास की प्रक्रिया है। यह असमानताओं के बारे में धारणाओं के निर्माण के साथ–साथ विरोध आंदोलनों की सामूहिक अभिव्यक्ति के लिए एक महत्वपूर्ण पहलू है। निम्नलिखित में, हमने अपने अनुभवजन्य शोध से प्राप्त मुख्य परिणाम प्रस्तुत किये हैं।

> गूगल प्रपत्र प्रश्नावली

जब उनसे महामारी के दौरान डिलीवरी करने के प्रति दिन घंटों की संख्या के बारे में पूछा गया, तो अधिकांश उत्तरदाताओं (42%) ने कहा कि उन्होंने नौ से बारह घंटे काम किया, इसके बाद वे जिन्होंने आठ घंटे (20%) और तेरह घंटे या उससे अधिक (13%) काम करने का संकेत दिया। महामारी से पहले की अवधि में काम के घंटों के बारे में पूछे जाने पर, और यदि हम नमूने के रूप में उस अवधि में पहले से ही वितरण कराने वाले उत्तरदाताओं की संख्या (66 उत्तरदाताओं) के रूप में लेते हैं, तो 39.3% ने नौ से बारह घंटे, 22.7% ने आठ घंटे और 9% तेरह घंटे या उससे अधिक काम किया।। अर्थात, काम के घंटों में वृद्धि दर्ज की गयी।

महामारी के दौरान वितरण कार्य से उनकी मासिक आय के सम्बन्ध में, सबसे बड़े हिस्से (25%) ने कहा कि उन्होंने ब्राजील के न्यूनतम वेतन (जो कि उत्तर के समय 1,100 *रियास* के बराबर था) से औसतन कम कमाया, इसके बाद 23% थे जो 1,100 और 1,650 के बीच कमा रहे थे । इसकी तुलना में, 15.3% ने कहा कि उन्हें महामारी से पहले की अवधि में वर्तमान न्यूनतम वेतन की तुलना में कम पारिश्रमिक प्राप्त हुआ (न्यूनतम वेतन के लिए 1,100 *रियास* के समान मूल्य पर विचार करते हुए)। अधिकांश उत्तरदाताओं (लगभग 37%) ने कहा कि महामारी से पहले वे 2,750 और 3,300 *रियास* के बीच कमाते थे, जबकि महामारी के दौरान केवल 15% ने यह औसत पारिश्रमिक अर्जित किया था। यह मासिक पारिश्रमिक में एक महत्वपूर्ण गिरावट को दर्शाता है, भले ही इन सेवाओं की मांग और काम के औसत घंटे में वृद्धि हुई हो।

इस प्रकार, प्रतिदिन तेरह या अधिक घंटे काम करने वाले उत्तरदाताओं और साथ ही प्रतिमाह न्यूनतम मजदूरी से कम कमाने वालों के अनुपात में स्पष्ट वृद्धि हुई है। वैसे, भुगतान प्लेटफार्म कार्य के काम की असमानताओं की व्यक्तिपरक धारणा में एक निर्धारण कारक प्रतीत होता है, खासकर जब यह विचार करते हुए कि लगभग 84% उत्तरदाताओं के लिए यह उनकी आय का एकमात्र स्रोत है। यानि कि, पूरक पारिश्रमिक के स्रोत के रूप में सेवा प्रदान करने से बहुत दूर, यह कार्य ब्राजील में श्रमिकों की आय का एक अभिन्न अंग है।

मांगों के संदर्भ में, भुगतान में वृद्धि की मांग (उत्तरों का 91%) पूर्ण प्रमुखता लेती है, जिसके बाद अनुचित नाकाबंदी, दुर्घटना बीमा, खाद्य भत्ता, अधिक स्वायत्तता, श्रम लाभ और एक हस्ताक्षरित रोजगार अनुबंध के अंत की मांग आती है। 20% से कम उत्तरदाताओं ने अपनी मांगों के हिस्से के रूप में इस अंतिम तत्व (रोजगार अनुबंध के माध्यम से विनियमन) का संकेत दिया। एक संभावित व्याख्या यह है कि व्यापक सामाजिक संकट के विकराल रूप लेने के क्षण में, असमानता के सबसे स्पष्ट पहलू सामने आ जाते हैं। इस संबंध के मौद्रिक आयाम में सबसे स्पष्ट रूप से इस श्रम की गतिशीलता के सामाजिक अंतर्विरोधों को मूर्त रूप देने की शक्ति है।

जहां तक डिलीवरी कार्य की मांग के लिए दिए गए कारणों का सवाल है, हमारे लगभग सभी उत्तरदाताओं ने आय अर्जित करने की आवश्यकता का उल्लेख किया। सामाजिक–जनसांख्यिकीय प्रोफाइल के संबंध में, उत्तरदाताओं में से 98ः पुरुष थे, 54ः ने खुद को ब्राउन या अश्वेत बताया, और उनमें से अधिकांश युवा थे। अधिकांश उत्तरदाताओं (24%) की आयु 31 से 35 वर्ष के बीच थी, इसके बाद 21 से 25 (19%), 35 से 40 (18%), और 25 से 30 (17%) के बीच थे। यह काफी हद तक इस तथ्य को दर्शाता है कि युवा लोग बेरोजगारी से सबसे अधिक प्रभावित समूह हैं। शिक्षा के संबंध में, उत्तरदाताओं में से 77% के पास हाई स्कूल और ध्या कॉलेज की डिग्री थी। अंत में, 33 उत्तरदाताओं ने कहा कि वे पहले से ही काम पर दुर्घटनाओं का सामना कर चुके हैं, लेकिन केवल एक को प्लेटफार्म से कुछ सहायता मिली था। इन आंकड़ों से पता चलता है कि कोविड–19 महामारी ने ब्राजील में श्रम–पूंजी संघर्ष के विरोधाभासों और असमानताओं को और अधिक स्पष्ट कर दिया है, जिससे डिलीवरी श्रमिकों की कामकाजी परिस्थितियों की अनिश्चितता बढ़ी है। ■

सभी पत्राचार
ब्रुना दा पेन्हा को <brunapmcoelho@gmail.com> एंव
एना बीट्रिज ब्यूनो को <anabeatrizbuenoadv@gmail.com> पर प्रेषित करें।